# कुरुक्षेत्र (हरियाणा) महाभारत के लिए क्यों चुना?

जब दुर्योधन समझाने के बाद भी पांडवों को राज देने के लिये किसी तरह नहीं माना, तब भगवान कृष्ण ने उससे कहा कि तुम पांडवों को केवल 5 गांव दे दो। वह बोला 5 गांव तो क्या सूई की नोक बराबर भी नहीं दूंगा। तब भगवान बोले की बत तो युद्ध ही विकल्प है। इस प्रकार युद्ध ठन गया।

तब प्रश्न उठा कि युद्ध कहाँ किया जाए? क्योंकि भगवान कृष्ण, पितामह, गुरु द्रोणाचार्य और जितने भी बड़े-बड़े विद्वान और योद्धा थे, सब इस बात से भली-भाँति परिचित थे कि यह युद्ध बहुत भयंकर और विनाशकारी होगा। क्योंकि इस युद्ध में भाई के विरुद्ध भाई लड़ेंगे और एक दूसरे का खून बहायेंगे, स्त्रियाँ विधवा होंगी, माताएँ पुत्र विहीन होगी, बच्चे अनाथ होंगे, चारों तरफ हृदयविदारक कोहराम मचेगा, खून की नदियाँ बहेंगी, धरती माता के फटने तक का डर है। इसलिए कोई ऐसी धरती होनी चाहिए जो इस युद्ध के भयानक और विकराल परिणाम को सह सके।

तो इसके लिए स्वयं श्रीकृष्ण, पितामह, गुरुद्रणाचार्य, कौरव, पांडव ऐसी धरती के चयन के लिये इधर-उधर खोज कर रहे थे। घूमते-फिरते यह सब लोग हरियाणा में थानेसर के पास के जंगलों में पहुंचे। उन्होंने देखा कि दूर-दूर तक खाली मैदान और जंगल थे।

अचानक उनकी दृष्टि एक ऐसे स्थान पर पड़ी जहाँ दो व्यक्ति खेतों की सिंचाई कर रहे थे। पूछने पर पता चला कि दोनों पिता पुत्र हैं। पिता क्यारियों में पानी डाल रहा था और पुत्र नालियों की देखभाल कर रहा था कि पानी दूर-दूर तक व्यर्थ न जाए और क्यारियां जल्दी-जल्दी भरें। तभी उन्होंने देखा कि पानी क्यारियों में नहीं पहुंच रहा है, तो पिता ने चिल्ला कर बेटे से कहा ''अरे क्या कर रहे हो पानी तो यहाँ आ ही नहीं रहा!'' तो बेटे ने चिल्ला कर कहा ''बापू मैं क्या करूं, मैं बार-बार नाली पर मिट्टी डालता हूँ किन्तु पानी रुकता ही नहीं।'' तभी उसका पिता दौड़ता हुए उस

स्थान पर पहुंचा और उसने फावड़े से अपने पुत्र की गर्दन पर एक जोरदार वार किया और कहा देख अब पानी रुकता है या नहीं, तभी देखते ही देखते बेटे का सिर धड़ से अलग हो गया और पिता ने अपने पुत्र के सिर को उठाकर जहां पानी नहीं रुक रहा था वहां रख दिया और बोला देख पानी रुक गया। यह सब कुछ देखकर भगवान श्रीकृष्ण, पितामह, गरुवर द्रोणाचार्य और अन्य सभी लोगों ने यह निर्णय लिया कि यह जगह कौरवों और पांडवों के युद्ध के लिए बहुत ही उपयुक्त होगी। क्योंकि जहाँ पिता अपने पुत्र की गर्दन उड़ाने के लिए जरा भी नहीं हिचकिचाता वहाँ की मिट्टी ( धरती ) इस युद्ध का भयंकर रूप और खून खराबा देखने और सहने की क्षमता रखेगी। इसी कारण युद्ध के पश्चात् इस स्थान का थानेसर ( हरियाणा )से कुरुक्षेत्र पड़ा।

# कलियुग के चौथे चरण के लक्षण

## सिर्फ कुरुक्षेत्र (हरियाणा) (जहाँ 5030 वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ था) बुधवार 7 फरवरी, 2007 को सूर्य के दिन का उजाला रात की कालिख में बदला

सूर्य, चन्द्रमा, धरती, यह ऐसी तीन धुरी हैं जिनके इर्द-गिर्द इन्सानों का लाखों साल, पुराना रहस्य छुपा हुआ है। जिन्दगी इन्हीं की तपिश में सांस लेती है। पांच तत्त्वों से मिलकर बने इन्सान इन्हीं की छाया में पैदा होते हैं तो मौत का भी आलिंगन करते हैं, मगर सूर्य, चन्द्रमा और धरती ही अपनी धुरी से भटक जाए तो क्या होगा? अगर यह तीनों आपस में कोई खेल करने लगे तो इसे क्या समझा जाए?

कुरुक्षेत्र में बुधवार को एक अनोखी घटना घटी। दिन के उजाले को रात खा गई, अभी सुबह की किरणों रोशनी से नहा ही रही थी कि पूरा इलाका रात की कालिख में तब्दील हो गया। देखते-ही-देखते हर तरफ अंधेरा छा गया। किसी को समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है। बेशक इस घटना के वक्त देश में कोई दूसरी अप्रिय घटना नहीं हुई। लेकिन ज्योतिष के जानकार कहते हैं कि ऐसी घटना तब घटी थी जब महाभारत हुआ था। ऐसी घटनाएं बहुत कम होती है। लेकिन जब होती हैं तब विनाश लेकर आती हैं।

बुधवार के दिन भी सूरज वक्त से ही निकला था। जिन्दगी की शुरुआत भी रोज की तरह ही हुई थी, लेकिन सबने देखा कि सूरज उगते ही अस्त हो गया। किसी को समझ में नहीं आया कि यह क्या हुआ? कुरुक्षेत्र और पानीपत ( हरियागा ) का पूरा इलाका दशहत में आ गया, रही सही कसर ज्योतिषियों ने यह कहकर निकाल दी कि ऐसा ही महाभारत के समय में हुआ था।

इस होली के त्यौहार पर अगर चन्द्र ग्रहण लग रहा है तो यह सचमुच किसी एक अशुभ सूचना का द्योतक हो सकता है या यूँ कहें कि हमारे ब्रह्मांड में या हमारी संरचनाओं में कुछ-न-कुछ अशुभ का संकेत अवश्य देता है। इतिहास में भी ऐसी घटना का बहुत ही कम जिक्र है। पूर्ण सूर्यग्रहरण



के वक्त ही अन्धेरा होता है, यह तो सबको पता है लकिन सूरज के उगते ही डूबना किसी ने कहीं सुना है। आने वाले 3 मार्च व 19 मार्च को भी ऐसा ही कुछ होने वाला है। यह कहीं से भी शुभ नहीं है, ऐसी घटनाएं इस बात का संकेत देती हैं कि कुछ-ना-कुछ ऐसा होने वाला है जो प्रलय जैसा है। ऐसा ही ग्रहों का संयोग बना था जब महाभारत हुआ था। जाहिर है बुधवार 7 फरवरी, 2007 की इस घटना को एक मजाक में नहीं लिया जा सकता और सबसे बड़ी बात यह है कि यह घटना भी उसी क्षेत्र में हुई जिसे महाभारत का क्षेत्र कहते हैं। दिन में हुए इस अंधेरे को कुरुक्षेत्र, करनल, और पानीपत के इलाके में देखा गया तो क्या कुदरत एक और महाभारत का संकेत दे रही है। हजारों साल पहले अगर महाभारत हुआ तो उस पर हम यही जानते हैं कि कौरव और पांडवों की आपस में नहीं बनती थी। लेकिन ज्योतिष के जानकार कहते हैं कि यह सब ग्रहों का खेल था। ग्रहों की ऐसी स्थिति पैदा हो गई थी कि महाभारत को कोई रोक ही नहीं सकता था और बुधवार को उसी कुरुक्षेत्र में फिर ऐसे हालत पैदा हुए जिसे महाभारत से जोड़कर देखा जा रहा है।

कहते हैं 5030 साल पहले धरती पर महाभारत हुआ था। तब कृष्ण ने कहा था—

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लार्निं भवति भारतः,
अभ्युत्थानं अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम।
परित्रागाय साधुनाम विनाशाय च दुष्कृताम्,
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि् युगे-युगे।''

यह कारण तो भगवान कृष्ण ने दिया था। यह तो उन्होंने कह था कि जब धर्म घटता है, पाप बढ़ता है मैं अपने आपको पैदा करता हूँ, पापियों का नाश कर, धर्म को बचाने के लिए। लेकिन ज्योतिष के जानकार कहते हैं कि हजारों साल में एक बार ग्रहों की ऐसी स्थिति बनती है कि प्रलय की घड़ी सामने आ जाती है।

अब कुरुक्षेत्र में हुई इस अनोखी घटना को लेकर जितने भी दावे किए जायें मगर इतना तो तय है कि कुदरत में इतने सारे संयोग एक साथ शायद ही कभी होते होंगे। 4 मार्च को चन्द्र ग्रहण और 19 मार्च को

# श्री कल्कि क्रूर ग्रहों के भय को मिटाने वाले

मैं 25 साल से भगवान श्री कल्कि की आराधना करती हूँ। कल्कि भगवान ने पग-पग पर मुझे आने वाली परेशानियों के लिए अनुभवों द्वारा अगाह किया और उसमें से इस प्रकार निकालते हैं जैसे कोई पिता बच्चों को परेशानी में मदद करता है। इसके लिए मैं भगवान का हृदय से धन्यवाद करती हूं।

सन् 2003 में मेरी सखी संगीता को अनुभव आया कि मेरे बेटे पर तीन साल की भारी ग्रह है। मैंने उसे बहुत साधारण रूप में लिया। कुछ नहीं होता कल्कि जी सब ठीक करेंगे। 2003 में 17 मार्च, छोटी होली को मेरे बेटे का बहुत जबरदस्त एक्सीडेंट हुआ। उस समय वह केवल साढ़े तीन वर्ष का था। मेरे पति समझे आज मेरा बेटा ( शुभम ) गया। हमारे स्कूटर की टक्कर बड़े ट्रक से हुई। लेकिन कल्कि जी की कृपा से जैसे ही वह थोड़ा रोया मेरे पति उसे फौरन अस्पताल लेकर गए, उसके मुँह पर 42 टांके आए। कल्कि जी की कृपा से वह ठीक हो गया।

समय की बात है। मैंने अपने बेटे की पत्री पन्डित जी को दिखाई क्योंकि मेरे बेटे के मुँह पर बार-बार बहुत चोट लगती थीं और हर बार काफी खून निकलता था। पंडित जी ने पत्री देखकर कहा इस पर डबल



मारकेश की ग्रह है। पैरों तो पैरों तले जमीन निकल गई। पंडित जी ने कहा यह तीन साल की भारी ग्रह है। तभी मेरे दिमाग में मेरी सखी का अनुभव याद आया। मैंने मन में सोचा कि मारकेश की ग्रह में लोग नहीं बचते डबल मारकेश से तो मेरा बेटा कैसे बचेगा।

मैं बहुत रोती थी। एक दिन मैंने सोचा रोने से क्या होगा ? कल्कि जी का नाम लूँगी तो सब ठीक भी हो जाएगी। मैंने मौसा जी ( संस्थापक कल्कि बाल वाटिका व मुझे कल्कि नाम में लगाने वाले ) के सामने बहुत रोई कि मौसा जी शुभम पर डबल मारकेश की ग्रह बताई है। वह बोले रोएं नहीं, उन्होंने मारकेश की ग्रह का उपाय अनुभव में आया हुआ, मुझे इस प्रकार बताया—सोमवार को शंकर भगवान का व्रत व सोमवार को तीन बार महामृत्युंजय का हवन ( ब्रह्म मुहुर्त, संध्या समय दोपहर में ) हर रोज एक बार हवन।

प्रार्थना—हे शंकर भगवान, मेरे बेटे शुभम को डबल मारकेश के चंगुल से बचाएं। मुझे कल्कि जी का काम करना है। मैंने यह उपाय करना शुरू कर दिया और मेरा बेटा कल्कि जी की कृपा से बिल्कुल सही है। वह सब समय निकल गया।

ज्यादा कहा कहूँ रामावतार में अगस्त्य मुनि द्वारा लिखित श्री कल्कि सहस्त्रनामावली में जो भगवान श्री कल्कि के एक हजार नाम लिखें हैं उसमें नाम क्रम संख्या 545 ॐ ग्रह भय विचारणेय नमः, क्रूर ग्रहों के भय को मिटाने वाले नाम को उन्होंने सार्थक किया।

जिज्ञासु : 23973383, 9312533445

( 1 ) भैरों बाबा का उपचार—प्रतिदिन 20 रुपयों को हाथ लगाकर संकल्प करती थी, गणेश जी को नमस्कार, हनुमान जी को नमस्कार, ( मामा जी ने बताया था कि आप हनुमान जी को गुरु बना लेवें ), दुर्गा जी को नमस्कार, कल्कि भगवान को नमस्कार, भैरों बाबा को नमस्कार।

हे भैरों बाबा, मैं ये 20/-रुपये के संकल्प को हाथा लगा रही हूं रोटी चढ़ाऊंगी मुझे कलियुग, दुराचारी, आसुरी, तांत्रिक शक्तियों के चुंगल से निकालें जो मेरे तलाक के पेपर साईन नहीं होने दे रही है और मेरे बेटे को मुझे वापिस नहीं दिला रहीं हैं। मुझे कल्कि जी का काम करना है।

( 2 ) जिस दिन कोर्ट जाना हो अथवा कोई इस सम्बन्ध में कोई ( छमहवजपंजपवद ) बात करने जाना हो तो हनुमान जी की आरती करके जाएं।

( 3 ) ॐ हूं हनुमते नमः की एक माला का जाप करें और हनुमान जी से कहें कि मेरा काम करायें मुझ कल्कि जी का काम करना है।

वैसे मैं प्रतिदिन की पूजा में बजरंग बाण, सुन्दर काण्ड, दुर्गा चालीसा का पाठ किया करती थी सो इन उपचारों के साथ यह सब चालू रखा।

( 4 ) बन पड़े तो कल्कि जी के शुभ के रुपयों में से आटे की एक बोरी मंगाकर चार रोटी गाय की बना देवें और उस पर जरा सी चीनी रखकर जो साग घर में बना है, रखकर ऊपर भैरों जी के बताए संकल्प की तरह सिर्फ भैरों जी के जगह गाय माता का नाम आएगा—हे गाय माता मेरे घर से अलक्ष्मी और दरिद्रता निकालें, लक्ष्मी लाएं—इसके बाद वही प्रार्थना कर दें जो हमने भैरों बाबा से की है।

मैंने मामाजी को बताया कि रोहिणी ( दिल्ली ) में गाय आसानी से नहीं मिलती सो मामाजी ने बताया कि गाय के प्रतिदिन न मिलने पर यह रोटियां आप डिब्बे में रख सकते हैं। हफ्ते दो हफ्ते में जब कभी सुविधा हो तो किसी गौ-शाला या जहां गाय उपलब्ध हो वहां दे देवें। रोटी की भी सुविधा न बन पड़े तो उस केस में 10 रुपये अथवा जो श्रद्धा हो यही प्रार्थना के साथ संकल्प कर दें। जब मौका लगे इसकी गाय की कुट्टी अथवा हरा चरा, ( पालक, सरसों, मैथी, गाजर, खीरा, मूली आदि जो आपको मिल रहा हो ) जहाँ गाय मिले दे देवें।



नोट—संकल्प के रुपये यदि घर रखे हुए हैं और आपको गाय माता और सब्जी वाला/आश्रम उपलब्ध है तो अपने पास से खिला दीजिए और घर जाकर संकल्प के रुपयों में से ले लीजिए। यह हमारा अजमाया हुआ है इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

जब मैं उपचार करती थी तो अपनी बहन की शादी के लिए भी प्रार्थना करती थी उसी उपचार में संकल्प के रुपयों से बहन का भी हाथ लगाकर उसकी शादी की प्रार्थना उससे भी कराती थी। भगवन श्री कल्कि की कृपा से जिस दिन मेरा काम पूरा हुआ उसके चार दिन बाद ही मेरी बहन की भी शादी पक्की हो गई और 25 फरवरी, 2007 को उसकी सगाई हो गई

निष्कर्ष—एक ही संकल्प के/उपचार के रुपयों में एक ही परिवार के कई ( सब ) सदस्य हाथ लगा सकते हैं और दूसरे गोत्र के श्रद्धावान साधक भी हाथ लगा सकते हैं। इससे उन सबको वही पूरा फल मिलेगा जो अलग-अलग करके कुछ परिवार संकल्प कर रहे हों। यहाँ यह बताना इसलिए आवश्यक है कि शादी के बाद लड़की का गोत्र बदल जाता है जब कर्ता के द्वारा ऊपर संकल्प तलाक के लिए और बच्चे के लिए लिया जा रह है उसके साथ उसकी छोटी बहन भी उस संकल्प के हाथ लगा रही है उसमें दोनों ही सफल हो गये।

मैंने यह उपचार शुरू किए और देखते ही देखते इस समस्या से मैं उबर कर बाहर निकली कि लड़के वालों ने मेरा बेटा वापिस कर दिया और तलाक के पेपरों पर साईन कर दिए।

जिज्ञासु : 011-23851790

से रोज प्रार्थना करनी है।

प्रार्थना : गणेश जी, हनुमान जी, दुर्गा जी, कल्कि जी, गाय माता को नमस्कार, हे गाय मेरे परिवार और व्यापार में से अलक्ष्मी दूर कीजिए, लक्ष्मी लाइए। पिताजी ने जिस वर से बात चलाई हुई हो या चलावें यदि वो मेरे लिए सुयोग्य है तो मेरा कार्य कराइए। यदि तुम्हारे मन में कोई बात है तो वह भी कह दें। मुझ कल्कि जी का कार्य करना है।



# भाग्य पर उपचार भारी

मेरे पिता स्द्रद्यद्ध रूद्धुस्त्रद्र उद्योगपति हैं। मैं अपने घर बहन-भाई में छोटी हूँ तो सबके कामों का जोर मेरे छोटे होने की वजह से मुझ पर ही रहता था। लेकिन जब सबकी Frequency एक जैसी होगी तो जाहिर है कान भी उस Frequecy पर जरा कम ही काम करते हैं। बी.ए. पास करने के बाद अब सवाल मेरी शादी का उठना शुरू हुआ तो सभी यह कहकर टाल जाते थे कि अभी तो छोटी है। जिस ज्योतिषी पर मेरे माता-पिता का विश्वास था, उसने बताया अभी परेशान न हों 26 साल से पहले शादी का कोई योग नहीं है। मैं 22 साल की थी तब 15 जुलाई, 2005 को मेरी माताजी का अचानक देहावसन हुआ। मेरे पिताजी ने मुझसे यह उपचार करवाए—

1. भगवान शंकर का अभिषेक गाय के दूध से, गाय का दूध उपलब्ध न होने की अवस्था में गंगाजल से घर पर ही भगवान शंकर के शिवलिंग पर कराया। अभिषेक के बाद प्रार्थना की गई कि मेरी शादी शीघ्र करायें। मुझे कल्कि जी का काम करना है। लापरवाही में सुबह नहीं करा तो शाम को 4-5 बजे कराया गया।
2. शंकर जी के महामृत्युजंय मंत्र का यज्ञ करके यही प्रार्थना की और कहा मेरी शादी में जो रुकावटें हैं उन्हें दूर करें मुझे कल्कि जी का काम करना है।
3. भैरों जी का 20 रुपये का नोट हाथ लगा के रोट चढ़ाने का संकल्प इसी प्रार्थना के साथ किया।
4. गाय माता की 4 रोटी के हाथ लगाएं और गाय माता से भी प्रार्थन की कि मेरी सुयोग्य वर से शीघ्र शादी करायें। मुझे कल्कि जी का काम करना है।
5. सूर्य भगवान को लोटे के बाहर सतिया बनाकर जल में चीनी और चावल डाल कर जल चढ़ाया और प्रार्थना की कि सूर्य भगवान मेरी सुयोग्य वर से शादी करा देवें जो मेरी शादी के मार्ग में रुकावटें हैं उन्हें दूर करा दें मुझे कल्कि जी का काम करना है।

हे कल्कि भगवान मुझे और मेरी आने वाली संतान को सुरक्षा चक्र प्रदान कीजिए। जो कलियुगी, आसुरी, तांत्रिक, अघोरी बुरी शक्तियां मुझे और मेरे बच्चे को परेशान करना चाहती है उससे मुझे बचाएँ। मुझे और मेरे परिवार, मेरे पति और मेरे बच्चे को आसुरी शक्तियों से बचाओ। हमें कल्कि जी का काम करना है।

यह प्रार्थना सब संकल्प के बाद करनी है बस जिन देवी, देवता का संकल्प निकाल रहे हो उनका नाम आखिरी में बोलना होता था।

जिज्ञासु : 011-23973383

# लापरवाही पर उपचारों की विजय

मैं एक प्रतिष्ठित और सम्पन्न परिवार से हूँ। बचपन से मैं भगवान श्री कल्कि बाल-वाटिका में जाती रही और भगवान श्री कल्कि के नाटक/लीला/प्रतियोगिताओं में भी समय-समय पर भाग लिया। जैसे-जैसे समय बढ़ा माता-पिता को शादी की चिन्ता सताने लगी। एक दो बार मैंने मौसा जी से बात की तो उन्होंने मुझे भगवान शंकर का अभिषेक बताया। जैसा कि ऊपर बताया है कि प्रतिष्ठित और सम्पन्न परिवार में मेरा जन्म हुआ सो आलस्य और लापरवाही आना स्वाभाविक है, जिसमें भगवान का काम जब ऊपर से सख्ती होती है तभी होता है। ऐसा मेरे साथ भी हुआ, मेरे भाई और पिता बहुत चिन्तित रहते थे। तो मेरा भैय्या मौसाजी से कहता था कि मौसाजी, दो-तीन साल हो गए कुछ नहीं हुआ। इस पर मौसाजी ने उससे कहा कि भगवान श्री कल्कि की आराधना ( जप, पूजा, हवन, पाठ ) और उसके साथ शंकर जी का अभिषेक यह कर रही है तो भैय्या ऐसा हो ही नहीं सकता कि इसे अनुभव न आएँ। यह आपकी बहन आपको घुमा रही है। हमारे कल्कि जी को नाहक बदनाम कर रही है। जब अनुभव दिखे उसे तरीके से लिखें और बतायें तब तो गाड़ी आगे बढ़े। इस पर कुछ महीने तो मैंने स्वप्न अनुभव भाई के साथ मौसाजी के पास भेजे और फिर हम दोनों गुल हो गये।

बात-वाटिका की मीटिंग में भैय्या ने पिताजी की चिन्ता दुबारा मौसाजी से व्यक्त की तब मौसाजी ने कहा, ''मैं तो अनुभव के आधार पर चल सकता हूँ। मेरे पास और कोई रास्ता नहीं है। जब तक आप अनुभवों पर सावधानी नहीं बरतेंगे और लिखकर मुझे नहीं देगें, दोस्त, बिना अनुभव के मैं क्या मदद करूं। यह तो आपके परिवार का मामला है यह कहकर उन्होंने अपने हाथ झाड़ लिये।''

मुझे एक दिन स्वप्न अनुभव हुआ जो जरा ज्यादा ही टेढ़ा लगा, मैंने भैय्या को लिखकर दिया तो उन्होंने मौसाजी के पास जवाब के लिये भेजा। अनुभव को पढ़कर मौसाजी पहले ही मुझसे दुःखी थे उन्होंने मेरी मम्मी से बात की कि पिताजी से बात करे इन दोनों को कॉपी लेकर आज

समाज और भगवान में विरोधाभास है जो समाज के कार्य करते हुए अपनी परेशानियां बताता है उसे सब सही कहते हैं लेकिन जो भगवान के लिये चले, उनका काम करता है उसे पागल कहा जाता है, वही स्थिति मेरी भी रही।

कॉलेज में पहले दो क्वार्टर तक मेरी पढ़ाई ढीली रही। दिन में जगह का अभाव और शोर की वजह से एकाग्रता नहीं आ पाती थी। लेकिन



भगवान श्री कल्कि की कृपा से जाप और पूजा का सत इतना रहा कि मैं परीक्षा में दो महीने रात को 11.00 बजे से सुबह 3.00 बजे तक एकाग्रता से पूरा अध्ययन करता था।

मुझे स्वप्न अनुभव तो कई हुए जिसमें एक अनुभव विशिष्ट हुआ, जिसमें मैं भगवान विष्णु और लक्ष्मी के बीच में बैठा हुआ हूँ, इस स्वप्नानुभव के बाद भगवान की ऐसी कृपा हुई की मैं कॉलेज में फर्स्ट आया और वित्त मंत्री वाई.पी. चव्हाण से मुझे पुरस्कार भी मिला।

कॉलेज के बाद एक साल नौकरी की काफी तलाश करता रहा तब भगवान की कृपा से स्वप्न अनुभव द्वारा ही जिस प्रकार लड़के-लड़की की शादी कराई जाती है, मेरा हाथ लगभग एक 40 साल के व्यक्ति के हाथ में दिया गया। मैंने शाम को गुरुजी को बताया कि लड़के-लड़की की शादी होते तो देखी है पर गुरुजी आज तो अनुभव में मेरा हाथ एक 40 साल के व्यक्ति के हाथ हमें दिया गया जैसे मेरी उससे शादी हो रही हो। इस पर गुरुजी बोले सब अच्छा ही होगा, हालांकि वह सब जानते थे। कुछ ही महीने बाद जिनसे मेरा हाथ भगवान ने पकड़वाया था, मैं तब तो नहीं समझ पाया था, लेकिन उनके साथ मेरी व्यवसायिक पार्टनरशिप 16 फरवरी, 1964 को हुई तो मैं स्तब्ध रह गया। उसमें सन् 1974 में हम बगैर किसी खास विवाद के अलग हो गए। सन् 1974 से 1986 तक भगवान श्री कल्कि ने अपनी कृपा से केन्द्र सरकार और दिल्ली सरकार से मुझे एक्सपोर्ट अवार्ड दिलवाए, जिसमें प्रधानमंत्री राजीव गांधी से भी मुझे एक एक्सपोर्ट अवार्ड मिला शामिल है।

जिज्ञासु सम्पर्क करें : 011-23973383

# मेरे घर में आया कन्हैया

यह बात आज से दस साल पहले की है। हमारे घर में कुछ पारिवारिक रिश्तों को लेकर तनाव चल रहे थे। बस मन में कल्कि भगवान का विश्वास और हारे का हरि ठिकाना यही भाव लिए संतोष था कि भगवान जो करेंगे अच्छा करेंगे। उस दौरान मुझे स्वप्नानुभव हुआ—

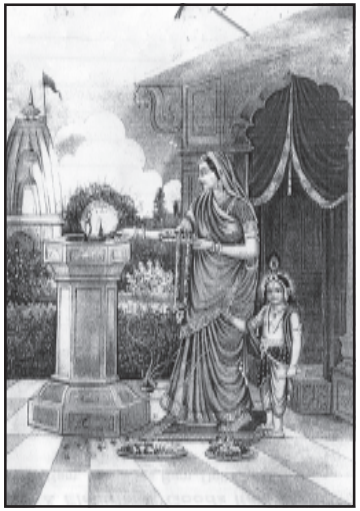

मैं पलंग पर लाचार सी लेटी हूँ तभी एक 8-10 साल का बच्चा मुझे मैया-मैया कहता हुआ आता है। मुझसे कहता है कि उठो मेरे पीछे आओ! मैं खड़ी हो जाती हूँ फिर वो मेरी साड़ी का पल्ला पकड़कर कहता मैं आगे चलूँगा तुम पीछे आनाा मैं नीचे देखती हूँ कि बहुत बड़े-बड़े गड्डे हैं। मैं डर जाती हूँ और कहती हूँ न बाबा मैं तो तेरे चक्कर में गिर जाऊँगी। वो बच्चा कहता है घबराओं नहीं मैया पहले मैं कुदूंगा फिर तुम यह कहते हुए कूदना मेरे घर में आया कन्हैया मेरे घर में आया कन्हैया। मैं उसके कहने पर ऐसा ही करती हूँ। जैसे ही वो कूदता मैं कसके आँख बंद कर के कूदती गई और कहती गई मेरे घर में आया कन्हैया मेरे घर में आया कन्हैया। जब मैंने आँख खोली तो हैरान रह गई सारे गड्ढे पार करवा दिये। वह बालक बोला मुम्हीं मेरा विश्वास नहीं कर रही थीं। मैंने उसे प्यार किया फिर वो बालक मुझे 20 रुपये देकर चला गया।

इस स्वप्नानुभव के उपरान्त वास्तविक जीवन में बड़ी-बड़ी परेशानियाँ तो बहुत आईं लेकिन भगवान श्री कल्कि द्वारा दिखाए जा रहे अनुभव व उपचारों के माध्यम से हम इन परेशानियों से निकलते गए।

जिज्ञासु भक्त सत्यता जानने को संपर्क कर सकते हैं : 011-65351122, 9312533445



# मैं मेरी क्या तू मेरी उंगुली पकड़

मेरा बचपन सिरसा हरियाणा के एक प्रतिष्ठित सम्पन्न परिवार में बीता जहां भगवान श्रीराम की मान्यता है। मेरी शादी दिल्ली में हुई, जहां मुझे मेरे अनुकूल भक्तिमय वातावरण मिला। मेरे देवर की शादी के उपरांत जब मेरी देवरानी आई तो उसके मुख से कलियुग के अवतार भगवान श्री कल्कि का नाम सुनकर और उसके आग्रह करने पर भी मेरा मन श्री

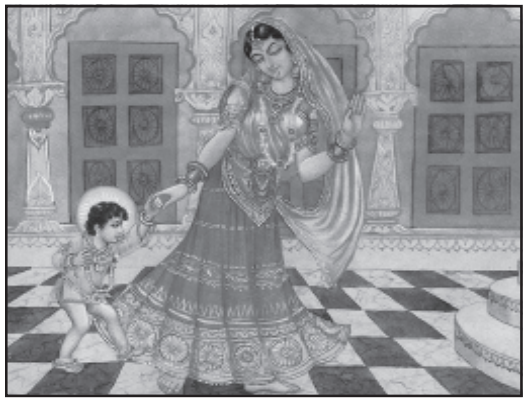

कल्कि नाम को स्वीकार नहीं करता था। लेकिन मुझे अपनी देवरानी की प्रतिदिन की दिनचर्या, भगवान श्री कल्कि की पूजा करना, चलते-फिरते, उठते-बैठते, काम करते, खाना बनाते, सफाई करते उसके मुहँ से 'जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते' गाते रहना, घर से बाहर जाती और आती भगवान के चरण छूना इत्यादि मुझे कल्कि जी की ओर बहुत आकर्षित करने लगी। मेरी देवरानी ने कहा भाभी जी आप 21 बार श्री कल्कि महामंत्र 'जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते' बोलना तो शुरू करो। मैंने कहा मैं तो भगवान राम की जप करती हूँ । वह बोली आज जो करती हैं वह करती रहें आप सिर्फ 21 बार अपनी पूजा में 'जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते' महामंत्र का जाप करके तो देखें आपको भगवान का अनुभव अवश्य होगा और जब भगवान आपको अनुभव दें तो करना वरना छोड़ देना। मैंने उसके कहने से बेमन से 21 बार

# काश! तुम्हारा खोजी 21 साल पहले मिलता

मैं बचपन में आज के समाज के हिसाब से जरा चंचल और नास्तिक स्वभाव की थी। मैंने शादी से पहले कभी कल्कि नाम न सुना, न पढ़ा था। शादी के बाद मैंने अपने जेठ-जेठानी से कल्कि का नाम सुना जिसमें मुझे संशय तो हुआ लेकिन आकर्षण भी महसूस हुआ। शादी के बाद जो उतार-चढ़ाव प्राय: लड़कियों के जीवन आते हैं, हो सकता है, वह मेरे पूर्व जन्म के लेन-देन के जरा ज्यादा ही थे कि मुझे बेहद विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ रहा था। मेरे जीवन की एक-एक परेशानी पहाड़ बनकर खड़ी थी। ऐसा लगता था कि यह विपदा के आसूं तो मेरे साथ ही जायेंगे। कभी-कभी तो मुझ लगता था कि ऐसे जीने से नहीं जीना अच्छा है। लेकिन अंदर से कोई ऐसी शक्ति थी जो मुझे इन विषम परिस्थितियों में भी सहारा दे रही थी। मैं धीरे-धीरे भगवान श्री कल्कि का नाम लेने लगी और मुझे ऐसा लगने लगा कि मुझे यह सच्चा मार्ग मिल गया है मैं इन परिस्थितियों से उबर पाऊंगी।

यह बात ग्यारह वर्ष पहले की है जब भगवान श्री कल्कि का नाम जाप करते हुए कुछ समय बीता तो मुझे स्वप्न, वाणी, जागृत अनुभव आने शुरू हो गए। स्वप्न, वाणी अनुभव के अलावा, जागृत अनुभव की मुझे बड़ी अभिलाषा रहती थी। एक दिन पूजा करते हुए मुझे भगवान श्री कल्कि की तेजोमय छवि दिखी और एक 8-10 साल का बालक दिखा जो धोती, जनेऊ धारण किए हुआ था। मेरे मन में प्रश्न उठा कि यह बालक कौन है ? मुझे उत्तर मिला यह मेरा खोजी है, जो विश्व भर से मेरे भक्तों को खोज-खोज कर लाता है और मुझसे मिलाता है।

मैंने पुन: कहा प्रभु! मैं आपके खोजी से बहुत नाराज हूँ। इसने मुझे खोजने में 21 साल लगा दिये। भगवान ने कहा कि तुम खोजी से नाराज मत होना यह मेरे ही निर्देश पर काम करता है। जब जिसका समय आता है तभी उसकी मुझसे मिलना संभव हो पाता है। मैं सोचती रह गई काश! यह 21 वर्ष पूर्व मिल गया होता···

इस अनुभव के बाद मेरे मन के संशय और दु:खों के बादल गति से छंटने शुरू हो गये।

जिज्ञासु : 011-65351122, 9312533445, 011-23973383



# मेरी तो दुर्गा माँ

मैं, कलकत्ता की रहने वाली हूँ। जिस तरह एक सम्पन्न परिवार में मेरा लालन-पालन हुआ उसमें सभी की महत्वाकांक्षा कुछ ऊँची हो ही जाती है। मेरी शादी दिल्ली में एक सम्पन्न प्रतिष्ठित सात्विक परिवार में हुई। मैं शुरू से दुर्गा जी की उपासक रही और ससुराल में भी मायके की तरह दुर्गा माँ की उपासना करती थी। शादी के बाद जो उतार-चढ़ाव प्राय: लड़कियों के जीवन में आते हैं मेरे जीवन में मेरी महत्वाकांक्षाओं की वजह से जरा कुछ ज्यादा ही आये। मैं अपने आप में इतनी व्यथित रहती थी कि जीवन में दो-तीन बाद तो ऐसा समय आया व सोचा इस जीवन को रखने से क्या फायदा है लेकिन कोई शक्ति मुझे नहीं मालूम, ऐसा करने से मुझे रोक देती थी।

मेरे पड़ौस में मेरी ही हम उम्र की दो बहुएं रहती थीं जिनसे मेरा सम्पर्क हुआ, उन्होंने बातों-बातों में भगवान श्री कल्कि का नाम जपने के लिये मुझसे कहा। मैंने यह नाम पहली बार सुना जिसे मेरे अन्त:करण ने बिल्कुल स्वीकार नहीं किया और मैंने उनसे कहा मेरी तो दुर्गा माँ है, मैं तो उन्हीं का जाप और पूजा करती हूँ। लेकिन मेरी वह सखी मुझ पर बार-बार दबाव बनाए हुए थे कि श्री कल्कि नाम जोड़ने से आपको दुर्गा माँ की और ज्यादा प्रसन्नता मिलेगी। एक बार मेरी सखी ने कहा कि भाभी जी आप

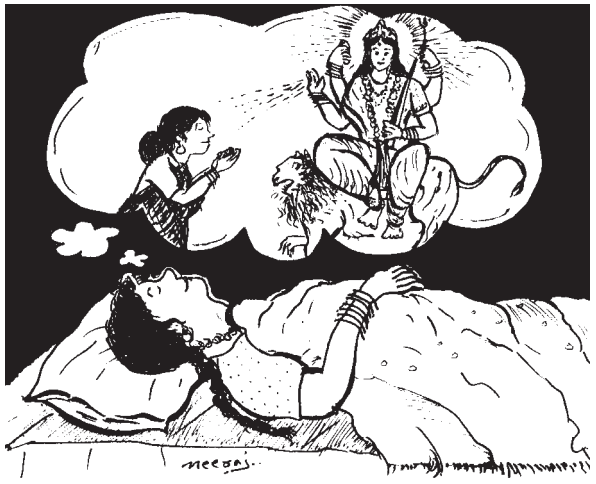

# जब योगनियां भी अपना भाग चाहती हैं

मेरा जन्म भगवान श्री कल्कि की भक्ति से परिपूर्ण परिवार में हुआ जहाँ पूरे दिन का आधे से ज्यादा समय मुझे भगवान श्री कल्कि का सत्संग सुनने को मिलता था। भगवान श्री कल्कि और गुरु जी की कृपा से शादी के बाद मुझे भगवान श्री कल्कि की भक्ति के अनुकूल माहौल अपने पतिदेव के घर पर भी मिला।

पिछले दिनों मेरा बेटा जो 20 वर्ष का है उसे काफी तेज बुखार चढ़ा और उसकी हालत इतनी गंभीर हो गई कि 6 दिन वह आई.सी.यू. में रहा व 6 दिन कमरे में इलाज चला। 12वें दिन तक इतनी दवाइयाँ खाने के बाद भी बुखार नहीं उतरने पर मेरी चिंता बढ़ गई। लेकिन मन में भगवान श्री कल्कि व गुरु जी की कृपा की आस्था ने मुझ इतने कठिन समय में भी सहनशीलता व धैर्य प्रदान किए रखा। घर पर लाने के बाद भी बुखार नहीं उतर रहा था। उसी रात मुझे स्वप्नानुभव हुआ कि अस्पताल के वार्ड में 5 पलंग बिछे हैं उनमें से एक मेरे बेटे का भी है सभी पलंगों के नीचे एक-एक, दो-दो रुपए के सिक्के पड़े हैं। मैंने अपने बेटे के पलंग के नीचे पड़े सिक्कों को इकट्ठा किया तो वह 129 रु. निकले। मैंने इस अनुभव को जब पैनल कमेटी के सामने रखा और सदस्यों से अर्थ व उपचार पूछा तो उन्होंने बताया।

अर्थ : आपके बेटे को दुराचारी आसुरी तांत्रिक अघोरी शक्तियों द्वारा घेरा गया है जिसमें कि उसको कोई बीमारी न होते हुए भी बीमारी की दशा में डाला हुआ है। इसका हल सिर्फ योगिनियों द्वारा ही हो सकता है।

उपचार : 129 रु. निकालकर गणेश जी, हनुमान जी, दुर्गा जी, कल्कि जी से नमस्कार करके कहें कि हे योगिनियों! मैं यह 129 रु. का संकल्प आपके लिए कर रही हूँ जिसे विभिन्न स्थलों में आप तक पहुँचाया जाएगा आप स्वीकार करें। हमें कल्कि जी का काम करना है।

मेरे बेटे का बुखार उतारो उसे स्वास्थ्य व जीवन दान दो। अचरज है कि यह संकल्प करने के उपरांत मेरे बेटे का बुखार उतर गया और अब वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है।



# अस्पताल में वैन्टीलेटर पर से उठकर श्री कल्कि भक्त का अगले दिन घर आना फिर प्रतिदिन दुकान जाना

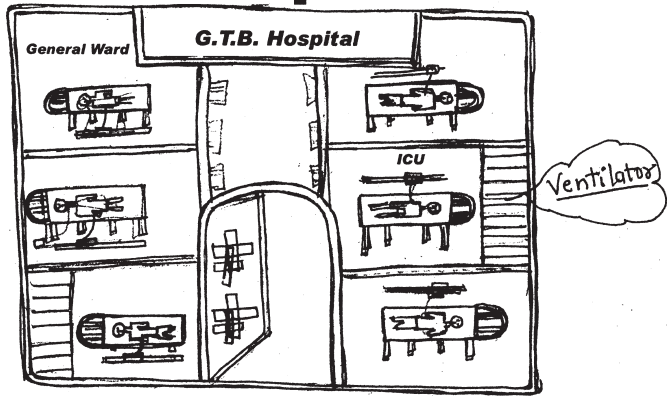


मेरी चार साल पहले बहुत तबीयत खराब हो गई थी करीब-करीब जान ही चली गई थी मुझे दिखा कि यमराज जी की लंबी डंडी में सूत की डोरी लगी थी उस डोर में मछली पकड़ने वाला एक हुक लगा हुआ था। वह जहाँ से प्राण खींचते है डाली तभी उनकी डोर पर कल्कि भगवान ने अपनी तलवार रख दी और कहा कि तुम इन्हें मेरी मर्जी के बिना नहीं ले जा सकते मुझे इससे अभी अपना बहुत काम लेना है। डॉक्टरों ने बिल्कुल जवाब दे दिया था। और मुझे Statuer पर डाल दिया गया घर पर इस कारण नहीं ले गये क्योंकि रात ज्यादा थी तय हुआ कि सुबह ही लेकर जायेंगे, लेकिन मैं Stature पर उठ बैठा डॉक्टरों की हैरानगी का कोई ठिकाना नहीं था कि ऐसा कैसा हो सकता है।

जिस आदमी को हमने Dead Declare किया था वह इस तरह कैसे उठ सकता है लेकिन भगवान की कृपा से मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया। करीब 4 साल बाद मुझे कोई बार-बार अनुभव में कहकर जाता तुम पर बहुत-ज्यादा मुसीबत आने वाली है तुम्हारी तबीयत खराब होने वाली है, बार-बार यह अनुभव आने के कारण मैं झिलमिल के E.S.I. Hospital

( 3 ) यमुना जी का उपचार—5 रुपए का सिक्का, एक धोती, बनियान, रुमाल, कुर्ते का कपड़ा, काली धूप, सूखा गोला उस पर कलावा लपेटकर हाथ लगाकर प्रार्थना की हे यमुना महारानी मुझे नहीं मारना जो दुराचारी, आसुरी, तांत्रिक, अघोरी शक्तियाँ हमें घर से बेघर करना व मुझे मारना चाह रही हैं उनको उनका हिस्सा इसमें से दिलवा दीजिए और मुझे जीवनदान दिलवाएँ। मुझ व मेरे परिवार को कल्कि जी का काम करना है।

( 4 ) कल्कि जी से प्रार्थना—हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनम् पापहा, की एक माला का हवन किया कि मेरे लड़के को धनवंतरि जी से स्वास्थ्य प्रदान कराइए हमें कल्कि जी का काम करना है।

भगवान श्री कल्कि की कृपा से यह सब उपाय करने के बाद पुत्र सही हो गया, भय दूर हो गये और हम दिल्ली से मथुरा आ गए। उन्होंने यह सुझाव दिया कि भगवान का नाम, हवन करते रहें और समय-समय पर भैरों जी का संकल्प करके रोट चढ़ाते रहें। लेकिन किसी कारणवश/ भूलवश वह वहाँ जाकर हम न कर पाए तो—उसमें से एक बोरी फटकर उसमें से गेहूँ गिर रहे हैं। गेहूँ का गिरना यह दर्शाता है कि दोबारा कुछ परेशानी है जो हो चुकी हैं। अत: जो उपचार पहले किए हैं उनमें से कुछ उपचार जरूरत के अनुसार दोबारा करेंगे तो ही बुरी शक्तियों के चंगुल से पूर्णतया निकलेंगे वरना फिर हालत में बिगाड़ आ सकता है।

अब भगवान श्री कल्कि की कृपा से न तो मुझे मकान बदलना पड़ा एवम् मेरा परिवार सकुशल हें। जिज्ञासु भक्त सत्यता जानने के लिए संपर्क कर सकते हैं।



# जब प्रोपर्टी का उलझा विवाद सुलझा

एक प्रतिष्ठत संपन्न सनातन धर्म परिवार में मैंने बाल्यकाल से ही जब से होश सम्भाला भगवान श्री कल्कि का आँचल पकड़ा। मैं बचपन से ही बाल वाटिका की सभा में उत्सवों, प्रतियोगिताओं में जाता रहा और भाग लेता रहा। Convent Education मेरे माता-पिता ने जो मुझे शिक्षा दिलाई और समय-समय पर जो मुझे Courses कराए उसका प्रभाव यह रहा कि मैंने हर चीज को जब ही माना जब उसका पूरा Logic मुझे समझ में आया। बचपन के कुछ संस्कार, मान्यताएँ भी मेरे दिल व दिमाग में जगह बनाए हुए थी जिसकी वजह से मैंने बाल वाटिका की बातों को नहीं माना और कलियुग के कुछ झटके सहने पड़े।

इसी संदर्भ में एक बार मेरा परिवार बहुत बड़ी विकट परेशानी में फँसा कि हमें रास्ता नजर नहीं आ रहा था। मैंने बाल वाटिका के अनुभव पैनल के सदस्यों से संपर्क किया जिसमें उन्होंने भगवान श्री कल्कि के अनुभवों के आधार पर बताया कि अगर आप झगड़े वाली जायजाद में भगवान श्री कल्कि का 5 प्रतिशत भाग रख देते हैं तो आपका काम जल्द निपट सकता है।

मुझे व मेरे परिवार को यह उम्मीद ही नहीं थी कि जो काम 8 या 9 साल में नही निपट सका वह निपट जाएगा इसलिए भगवान से कहने में क्या हर्ज हैं देखा जाएगा जो होगा ? धन्य भगवान श्री कल्कि की लीला कि ऐसा चमत्कार हुआ कि असंभव कार्य हमारी उम्मीदों से भी ज्यादा जल्दी भगवान श्री कल्कि ने कर दिखाया।

एक दिन दबी हुई भाषा में बिना किसी को बताए अध्यक्ष महोदय से पूछा कि अगर काम बन जाए और मोटा Amount भगवान को न दिया जाए तो कोई फर्क पड़ेगा। इस पर उन्होंने उत्तर दिया देना-नहीं देना तो आपका काम है पर दुर्गा जी की तरह भगवान श्री कल्कि भी किसी पर अपना बाकी नहीं छोड़ते हैं और दोस्त उनकी लाठी में आवाज नहीं होती। इस पर उन्होंने यह भी बताया कि अगर थोड़ा-थोड़ा करके भी देना पड़ता हो तो Accounts की तरह एक तरफ भगवान का रुपया जमा कर लो,

## मेरे गुरुदेव

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरः गुरु साक्षात् परंब्रह्मः तस्मै श्री गुरवे नमः

गुरु बिन भवनिधि तरै न कोई। जो विरंचि शंकर सम होई॥

श्री गुरु पद नख मणि गन ज्योति। सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती॥

प्रिय साथियों श्री हनुमान जी के अवतार गुरुवर बालमुकुन्द जी एवं श्री रामकृष्ण परमहंस के अवतार गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी ने आज की विकट परिस्थितियों में धर्म, गऊ, ब्राह्मणों की रक्षा करने के लिए युगावतार भगवान श्री कल्कि का नाम दिया। इसलिए हमें इन दोनों में से किसी एक को गुरु मानकर ( मेरे गुरुदेव ) कहकर प्रतिदिन नमस्कार करना चाहिए। यह हमें इस लोक और परलोक दोनों में विजय दिलवाकर श्री कल्कि जी से रास्ता दिलवाएँगे।

जो साथी श्री हनुमान जी को गुरु बनाए वह गुरु पूर्णिमा के दिन किसी भी स्थान पर उन के आगे एक पुष्प माला, दो बर्फी व पाँच रुपए अर्पित कर देंवे। इसी तरह श्री रामकृष्ण परमहंस को मानने वाले कहीं व्यवस्था न हो तो घर में ही हनुमान जी की तरह उनके आगे ( रामकृष्ण परमहंस ) अर्पण कर देंवे।



## रोजी-रोटी पर सावधान वरना

मेरा परिवार पिछले 12 वर्षों से भगवान श्रीकल्कि की आराधना करता है। इस दौरान हमें कई बार स्वप्न जागृत वाणी अनुभव हुए। हमने विद्वानों से अर्थ पूछकर उनका उपचार किया जिससे हम परेशानियों से बचे और बहुत से अनुभवों से हमारा भाग्योदय भी हुआ। इसी संदर्भ में मैं अपना एक अनुभव लिख रहा हूँ। भगवान कल्कि ने कृपा करी तो भविष्य में और भी अनुभव आपके समक्ष पेश करूँगा।

मैंने 23 जनवरी, 2006 को साझेदारी में व्यापार शुरू किया था। मेरी पत्नी को तीन महीने बाद भगवान श्री कल्कि ने साझेदार की खोटी नीयत को बताने वाला एक अनुभव दिया जिसे मैंने हल्के रूप में लिया। जुलाई में मेरे पार्टनर ने दुकान के रातो-रात ताले बदल दिए, फाइलें व नगद रुपये गायब कर दिए। अब मेरे सामने कानूनी रूप में सारे रास्ते बंद हो गए। परिस्थिति अत्यन्त जटिल हो गई, तब हमने श्री कल्कि बाल वाटिका के अध्यक्ष श्री ओ.पी. गुप्ता को अपना पिघला स्वप्न अनुभव और अब की पूरी घटना लिखकर उसके साथ 251 रु. रखकर श्री कल्कि प्राकट्य के रहस्यमयी ज्ञानियों की सलाह के लिए भेजा। उन्होंने सलाह करके तुरंत आई.सी.यू. पेशेंट की तरह जिस प्रकार तुरंत ऑक्सीजन दी जाती है हमें फौरन भैरो जी, दुर्गा जी, बगुलामुखी, काली जी, हनुमान जी, विश्वकर्मा जी की प्रार्थना व उपचार बताये। कुल मिलाकर 15 संकल्पों के फलस्वरूप 24 घंटे के अंदर हमें आध्यात्मिक मदद प्राप्त होनी शुरू हुई।

18 जुलाई की रात को भगवान श्री कल्कि ने तीन अनुभव दिखाए जिनके अर्थ थे—अपनी पुरानी आदतों को बदलो, जीत तुम्हारी होगी, पैसा तुम्हें वापिस मिलेगा। भगवान श्री कल्कि कृपा से हमें व्यापार में लगा अपना रुपया मिल गया। इसके पश्चात् हमने बगुलामुखी माता, दुर्गा जी, भैरों जी, काली जी, हनुमान जी व कल्कि जी का धन्यवाद का उपचार भी विद्वानों द्वारा बताया गया किया।

निष्कर्ष : भगवान ने यह दिखा दिया कि कल्कि जी की कृपा में

भगवान विष्णु त्रेता में श्री राम व द्वापर में श्री कृष्ण के रूप में इस धरती पर अवतरित हुए वही भगवान विष्णु कलियुग में श्री कल्कि रूप ( तिरूपति बालाजी ) में धरती पर आवेंगे व सत्युग की स्थापना करेंगे यह बात शास्त्रों, वेदों व समस्त ग्रंथों में प्रमाणित की गई है और आज कल्याण उत्सव के आयोजन से यह संदेश जन-जन तक पहुँच गया है कि—

कहीं राम बने, कहीं कृष्ण बने, अबके कल्कि सुखधाम बने,
ध्वनि गूँज रही है लोकन में कल्कि जी कल्कि जी···

मुम्बई कल्याण उत्सव में गोविंदा गोविंदा गोकुल नंदा गोविंदा का मंगल गान भी यही प्रमाणित करता है कि यही कृष्ण है यही तिरूपति बालाजी हमारे श्री कल्कि भगवान है जिनका विवाह पद्मावती जी से मुंबई में संपन्न हुआ ( चल मूर्ति-देवी रूप में )

प्रभु आप धन्य है! आपकी लीला अपरंपार है अपनी लीला का विस्तार आप एक क्षण के सौंवे हिस्से में पूरे ब्रह्मांड में कर सकते हैं परंतु आपने हमें अपना कार्य करने के लिए जो निमित्त बनाकर कृपा प्रदान की हे उसके लिए हम सदैव प्रार्थना करेंगे कि हमें ऐसी शक्ति दें कि हम अधिक से अधिक आपका कार्य करें।

नोट—जैसे उत्तर में कृष्ण तुलसी विवाह प्रचलित है ऐसे ही दक्षिण में तिरूपति बालाजी ( विष्णु के अवतार ) विवाह देवी पद्मावती से प्रचलित है।

भगवान श्री कल्कि जहाँ उत्तर में संभल में पूजे जाते हैं दक्षिण में वह तिरूपति बालाजी के रूप में पूजे जाते हैं वहीं पश्चिम में 3 दिसंबर को चल रूप में देवी पद्मावती जी से उनका विवाह संपन्न हुआ। पूर्व भारत ( कोलकाता ) में भगवान कल्कि बैलूर मठ में पूजे जाते हैं।



# सत्संग सुधा

## मँहगाई और व्यस्तता के युग में···रोज तीर्थ यात्रा कैसे करें?

जब भी आप घर से किसी निश्चित स्थान के लिए दुकान/ऑफिस/फैक्ट्री के लिए निकले और वहाँ से घर के लिए लौटे तो यह सोचकर चले कि मैं ( वहाँ रखें भगवान के चित्र ) भगवान के दर्शन के लिए जा रहा हूँ। भगवान को सदैव प्रणाम करके निकले तो आपकी यात्रा का एक-एक कदम तीर्थ-यात्रा के लिए रखा कदम होगा और वहाँ पहुँचकर समय निकालकर नमस्कार कर लें।

आप देखते ही देखते भाग्यवान से महाभाग्यवान बनते चले जाएँगे। यदि आप कहीं घूमने भी जाएँ तो यही भाव लेकर जाएँ। आपकी वह यात्रा तीर्थ यात्रा के समान होगी।

## जीवन एक संघर्ष है

प्रत्येक आने वाला कल और भी अधिक कठिनाईयाँ लेकर आने वाला है। इस को सुखद बनाने का एक ही उपाय है।

''पहले मारे सो मीरी''

अर्थात् दो पहलवानों की कुश्ती हो रही हे उसमें जो पहले वार कर देता हे ( मुक्का मारता है ) उसका मनोबल ज्यादा बढ़ता है व जीतता है इसी प्रकार आप सुबह पहले भगवान की आराधना कर लेते हैं तो आप जीतेंगे अन्यथा कलियुग ( बुरी शक्तियाँ ) आप पर हावी रहेगा।

अर्थात् प्रातः जल्दी उठकर नित्य कर्मों से निवृत्त होकर माला, ध्यान साहित्य पाठ, हवन, पूजादि कर लें, आप पाएँगे अपने कठिन दिन को सरल और खुशहाल।

## कभी किसी का समय एक सा नहीं रहता

यह बात सबको पता है किसी का कभी भी समय एक समान नहीं रहा। सुख-दुख, अच्छाई-बुराई और खुशी-गम का जोड़ा रहा है। सुख आए हैं तो दुख भी आएँगे ही और दुख के बाद सुख भी अवश्य आएँगे परन्तु ज्यादातर सुख के तथा अच्छा समय के आने पर सुमिरन भजन नहीं

लौट जाएगा, समन ही नहीं चिपकाएगा, जिंदा रहेगा अब आप ही कुछ करें, शंकर भगवान बोले देखो, ऐसा तो नहीं हो सकता अच्छा यमराज को बुलाओ, यमराज से कहेंगे तो इसका परिवर्तन हो जाएगा, यमराज बोले मैं तो त्याग पत्र दे दूँगा। मैं यह पक्षपात नहीं कर सकता। इस तरह से बड़ी दुर्व्यवस्था हो जाएगी, भगवान शंकर बोले छोड़ो यमराज जी हम इसे तुम्हारे क्षेत्र से अलग कर अमर बना देते हैं जहाँ मृत्यु का क्षेत्र ही नहीं है यह हमेशा जीवित रहेगा।

# तीन दोस्त

मुझे याद है, तीन दोस्त घूमने गए। सांझ ढल रही थी, सोचा, यहीं खाना बना लें। अन्य कुछ तो बना नहीं सकते थे, विचार किया कि खीर बना लेते हैं क्योंकि उसे ही बनाना सबसे सरल है। दूध उबालो, चावल डालो, चावल पक जाए तो शक्कर डाल दो, बस खीर तैयार। ऐसा ही किया। गाँव से दूध, चावल, शक्कर, इलायची वगैरह ले आए, खीर बनाई और तीनों ने छककर खाई। खाने के बाद आलस आने लगा। तीनों ने विचार किया कि आज यहीं सो जाते हैं, कल सुबह चले जाएँगे वापस अपने गाँव। खीर उन्होंने पेटभर खाई थी, फिर भी एक प्याला खीर बच गई। 'अब तो पेट में जगह नहीं है, सुबह उठकर खा लेंगे', एक ने कहा। दूसरा बोला, 'लेकिन खीर तो एक प्याला है और खाने वाले तीन, फैसला हो जाए कि सुबह कौन खाएगा?' एक दोस्त ने कहा, 'अब इसमें फैसला क्या करना? रात में जिसको सबसे अच्छा सपना आएगा वही खीर खा लेगा। सुबह सब अपने-अपने सपने सुना देंगे।' यह तो बहुत अच्छी बात थी, तीनों को जँच गई और तीनों सो गए।

रात के तीन-चार बजे होंगे। एक मित्र उठा, सोचा, पता नहीं कौन कैसा, क्या सपना बताए और कौर निर्धारण करेगा कि किसका सपना अच्छा? बस खिड़की में से उसने खीर का प्याला उठाया और सारी खीर खा गया। खीर खाकर फिर सो गया। सुबह हुई, दोस्तों ने कहा, 'अपने-अपने सपने सुनाओ।'

एक दोस्त ने कहना शुरू किया, 'रात को सपने में मुझे भगवान राम अयोध्या ले गए। माता सीता के दर्शन कराए। पिता दशरथ से मिलवाया और पूरी अयोध्या नगरी का भ्रमण कराया। माता सीता ने अपने हाथ से मुझे भोजन कराया, मैं तो पवित्र हो गया। मुझसे अच्छा सपना किसी ने न देखा होगा। मैंने सभी के दर्शन कर लिए। अब खीर का प्याला मैं खाऊँगा।'

दूसरे ने कहा, 'अब तू बैठ जा, तूने मेरा सपना अभी सुना कहाँ है। जरा मेरा सपना भी तो सुन। रात को भगवान शिव आए और मुझे हिमालय ले गए। वहाँ उन्होंने मुझे सभी तीर्थों के दर्शन कराए, चारों धाम दिखाए,

कालिका मंदिर परिसर में सन् 2004 श्री कल्कि भगवान् की मूर्ति का मात्र 29 दिनों में लोकड़े बाबा के बराबर में '4x4' आकार में लगना अलौकिक घटना थी। कालिका मैया के दर्शनों के बाद लौकड़े बाबा के दर्शन करने पर ही मैया के दर्शनों का पूरा फल मिलता है ऐसी पुरानी मान्यता है। माँ की कृपा से कल्कि भगवान् के आगे एक पुजारी की नियुक्ति भी हो चुकी है।

श्री ओ.पी. गुप्ता जी ने अपनी धर्मपत्नी की सतरहवीं के दिन अपनी रिश्तेदारी के सदस्यों, सम्बन्धियों के समक्ष श्रीमती सरोज गुप्ता एवं अपनी बड़ी बहन श्रीमती सरला देवी के भगवान् श्री कल्कि के कार्यों में गुप्त रूप से दिए गए सहयोग की विस्तृत जानकारी देकर अपनी श्रद्धांजलि दी और साथ ही मातृशक्ति का आह्वान किया कि उनका छिपा गूढ़ रहस्य सभी कल्कि भक्त परिवारों के लिए प्रेरणादायी है।

गुप्ता जी का यह कहना अत्यन्त सारगर्भित था कि ज्ञानी, समझदार, सुलझी हुई विद्वान स्त्रियों का मन रूपी दर्पण सत्संग से ही हीरे जैसा चमक सकता है। ध्यान रहे भगवान् श्री राम ने वनवास के दौरान सीताजी को ऋषि आश्रमों में ले जाकर ऋषि पत्नियों मुख्यत: सती अनुसूइया के साथ सत्संग कराया था जिसमें उन्हें स्त्रियों के गृहस्थ-धर्म की भी शिक्षा मिली थी।

क्योंकि श्रीमती सरोज गुप्ता आन्तरिक हृदय से कल्कि कार्य में समर्पित भाव से गुप्त रूप से लगी हुई थी इसलिए उनके द्वारा किए गए सम्पूर्ण कार्यों की जानकारी श्री कल्कि जी के अलावा भला और किसी को कैसे हो सकती है ? फिर भी कुछ विशेष कार्यों का संक्षिप्त उल्लेख यहाँ असंगत न होगा—

1. सन् 1989 से श्री कल्कि बाल वाटिका का प्रतिमास सत्संग संकीर्तन एवं हवन आदि का घर अथवा दुकान पर होना। जिसमें कॉन्वेन्ट शिक्षा प्राप्त बच्चों में सनातन धर्म के संस्कार ( सत्संग, पूजा, हवन, संकीर्तन, शिक्षाप्रद कहानियाँ लिखना, नाटक ( लघु एकांकी ) कराना, भजन बुलवाना, महामंत्र का मुकाबला आदि। )



2. सन् 2000 में रशियन अम्बेसी में भजन संध्या।
3. सन् 2002 में श्रीराम सेन्टर मण्डी हाउस में श्री कल्कि दिग्विजय नाटक का भव्य मंचन।
4. कल्कि लीला का लगभग 128 बच्चों द्वारा 575 दर्शकों के बीच 4 जुलाई, 2004 में अनूठा आयोजन जिसमें श्रीमती सरोज गुप्ता का ज्योति प्रज्ज्वलन तथा चैनलों पर प्रसारण।
5. भगवान् वेदव्यास जी द्वारा लिखित श्री कल्कि पुराण का संस्कृत से हिन्दी व अंग्रेजी में अनुवाद।
6. श्री कल्कि अवतार की वीडियो कैसेट का निर्माण।
7. 'श्री कल्कि बाल वाटिका' नाम भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड करवाने का काम 24 जून, 2005 को पास हुआ।
8. श्री कल्कि भगवान् के अनेकानेक मंदिरों की आधारशिला रखना, साहित्य का सृजन जो होने वाला है उसकी आधार भूमि तैयार करवाना। श्री कल्कि बाल वाटिका उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अबाध गति से आगे बढ़ती रहे उसका विशेष प्रबन्ध, नियोजन करना।
9. अपने सुपुत्र श्री योगेश प्रकाश गुप्ता, सुपुत्री आयु. कु. मीनाक्षी व कु. नलिनी को कल्कि भक्ति के अविचल, निष्काम भक्ति के संस्कार भरना जिससे श्री कल्कि बाल वाटिका रूपी पौधा सदा लहलहाता रहे। भक्ति की बेल पुष्पित व पल्लवित होती रहे।

अत: हम नि:संकोच रूप से कह सकते हैं कि श्रीमती सरोज गुप्ता, जीजाबाई, रानी झाँसी, रानी पद्मनी, रानी अहिल्याबाई के समान भगवान् कल्कि के इतिहास में अपना नाम अमर कर गई। जिसे वर्तमान के भक्त ही नहीं वरन् आने वाले समय के कल्कि भक्त भी अपनी स्मृतियों में संजोए रखेंगे। पं. मनोकान्त जी के शब्दों में—

हो जाओगे अमर धर्म के कारण संकट सहने से।
सुख पावेगा मन कल्कि के चरण कमल में रहने से॥

मेरा ख्याल गलत था। जो आदमी जिस काम को पसंद करे, उसके लिए वही काम लाभदायक हो सकता है।

काशीनाथ : आपने मेरी माता को चोट पहुँचाई है।

देसाई : गुस्से से बेजा बक गया था। उसके लिए मैं तुम्हारी माता से और तुमसे माफी माँगता हूँ। चूँकि तुम बालिग हो गए हो और बालिग लड़का बतौर दोस्त होता है, इसलिए तुम मुझे माफ कर दो।

काशीनाथ की आँखों में आँसू भर आए। वह अपने पिता के चरणों में गिर पड़ा और रोने लगा। देसाई ने उठाकर उसको छाती से लगा लिया और कहा—'आज तक मैं पाखंडी था, नास्तिक था और घमण्डी था। मैं नकली काम किया करता था। आज परमात्मा ने मेरी आँखें खोल दी। जो नहीं जाना था, सो जान लिया और जो नहीं देखा था, सो देख लिया। ईश्वर की यह एक बड़ी कृपा है कि जो मुझे मिली।'

देसाई ने देखा कि देवदूत लिख रहा है—'आज देसाई ने प्रतिज्ञा की कि वह अपने नकली जीवन को छोड़ देगा और असली जीवन को ग्रहण करेगा। आज उसके जीवन में एक खास परिवर्तन हो गया। भविष्य में वह नेक आदमी बनने की कोशिश करता रहेगा।'



# नींव का पत्थर

कुसुम कली काँटों में खिलती, नित नूतन अनुराग लिए

चंदन शीतल सुरभित रहता, है संग विषधर नाग लिए।

श्रीमद्भागवत गीता में स्पष्ट लिखा है कि भक्त चार प्रकार के होते है : अर्थार्थी, जिज्ञासु, आर्त और ज्ञानी। भगवान् को ज्ञानी भक्त अत्यन्त प्रिय होते हैं। अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक श्रीहरि भगवान् कल्कि के भक्तों का नाश कभी नहीं होता। इसमें बिल्कुल भी सन्देह नहीं कि श्रीमती सरोज गुप्ता भगवान् की नित्य पार्षद हैं और ज्ञानी भक्तों की श्रेणी में आती है। यहाँ 'हैं' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है इसे स्पष्ट करने की अब कोई आवश्यकता नहीं है।

श्री कल्कि भक्तों ( विशेषतया गृहस्थी महिलाएँ ) के लिए इनका जीवन खासतौर पर प्रेरणादयक कहा जा सकता है। अधिकांशतः गृहस्थी कल्कि भक्त महिलाएँ एक मोर्चे ( गृहस्थी ) पर सफल रहती हैं तो दूसरे मोर्चो ( व्यापार व्यवसाय आदि ) पर अपेक्षाकृत विफल रहती है। परन्तु श्रीमती सरोज गुप्ता अपने पतिदेव के साथ कन्धे से कन्धे मिलाकर चली। बच्चों के स्कूल टाईम सुबह 10 बजे से दोपहर डेढ़ बजे तक एवम् विदेश यात्राओं के दौरान पूरा समय देकर अत्यन्त कुशलता से व्यापार सम्बन्धी कार्यों को निपटाती थी। आज के युग में पढ़ाई बच्चों की नहीं माँ की होती है। जिसमें पूर्ण सफलता के लिए श्रीमती सरोज गुपता ने तीनों बच्चों को सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराते हुए कॉन्वेंट शिक्षा दिलवाई एवम् दिल्ली विश्वविद्यालय से रेगुलर क्लासिस द्वारा बी.कॉम. करवाया। सुश्री मीनाक्षी गुप्ता को तो एकांउंट्स में 98 प्रतिशत नंबर मिले और भारत सरकार द्वारा स्कॉलरशिप मिली।

वैसे तो श्री कल्कि भगवान् के अधिकांश भक्तों को अनुभव होते हैं

कलक्टर से कम नहीं होती। आमदनी भी कम नहीं होती। इसके अलावा एक वकील को जितना मौका जनता की सेवा के लिए मिल सकता है, उतना एक अफसर को नहीं।

देसाई : क्या आदमी के लिए जनता की सेवा करना लाजमी है ?

काशीनाथ : मेरी राय तो लाजमी है। अपना पेट तो जानवर भी भर लेता है। आदमी वह है जो दस को खिलाकर खाए।

देसाई : जी! मैं तो हुआ जानवर और जनाब हुए आदमी।

मेरा आखिरी हुक्म है कि तुम एक घंटे के अंदर इस मकान से निकल जाओ। चाहे जहाँ जाओ। चाहे जो करो। मुझसे कोई मतलब नहीं। एम.ए. करा दिया, अपने फर्ज से मुक्त हुआ। अपनी औरत को साथ लो और जाकर दोनों जनता की सेवा करो।

काशीनाथ के जाते ही उस कमरे से एक दिव्य सूरत प्रकट हुई। उस सूरत के हाथ में एक कॉपी और एक पेंसिल थी। वह ईश्वरीय दूत कुछ लिख रहा था।

देसाई : आप कौन हैं ?

दूत : मैं ईश्वर का एक खुफिया हूँ।

देसाई : मैं नहीं समझा।

दूत : मैं यमराज का दूत हूँ।

देसाई : तो क्या मेरी मौत आ गई है ? यमदूत तो मरते वक्त आया करते हैं ?

दूत : नहीं, मैं चित्रगुप्त का दूत हूँ। मैं सदा तुम्हारे साथ रहता हूँ और जो कुछ तुम कहते, सुनते या करते हो, सब मैं लिख लेता हूँ।

देसाई : क्यों ?

दूत : ताकि मृत्यु हो जाने पर तुम अपने जीवन का हाल देख सको और अपना कर्म भोग प्राप्त कर सको।

देसाई : मैं दूसरों के पीछे खुफिया लगाया करता हूँ। क्या मेरे पीछे भी खुफिया रहती है ?

दूत : जी हाँ ! केवल तुम्हारे ही पीछे नहीं। लेखक दूत सबके पीछे रहता है। हरेक नर-नारी के साथ एक-एक लेख रहता है।



देसाई : मगर, मैंने आपको कभी जाना नहीं पहले कभी देखा भी नहीं।

दूत : तुम लोग अगर जान लो तो खुफिया कैसा ? तुम तभी देख सकते हो कि जब में दिखलाई देना चाहूँ। नहीं तो, रात-दिन साथ रहने पर भी तुम मुझे नहीं जान सकते।

देसाई : अगर यहाँ कोई आ जाए तो वह आपको देख सकता है ?

दूत : न। केवल तुम ही देख सकते हो।

देसाई : आप अभी क्या लिख रहे थे ?

दूत ने अपनी कापी देसाई के सामने कर दी। उसमें लिखा था—'आज देसाई अपने बड़े लड़के पर हुकूमत के नशे के कारण नाराज हुआ। वह घर से निकाल कर अत्याचार करना चाहता है। मनमुखी होने के कारण अन्याय करना चाहता है।'

देसाई : यह आपने क्या लिखा है ?

दूत : जो बात थी, लिख दी।

देसाई : मनमुखी वह है या मैं ?

दूत : अगर वह भी मनमुखी होगा तो उसका दूत लिखेगा। मेरी राय में तुम मनमुखी हो इसलिए लिखा।

देसाई : केवल मनमुखी ही नहीं। आपने मुझे मनमुखी, नशेबाज, अत्याचारी और अन्यायी लिखा है।

दूत : सब सच लिखा है।

देसाई : बाप का कहना लड़के को टालना चाहिए ?

दूत : अगर गलत हो तो टालने में कोई हर्ज भी नहीं। तुम्हारे घर में चार लड़के हैं। चारों की प्रकृति पृथक्-पृथक् है। कोई वकील बनेगा, कोई जज बनेगा, कोई डॉक्टर बनेगा और कोई व्यापारी बनेगा। अगर तुम चाहो कि चारों लड़के मजिस्ट्रेट बन जाएँ तो यह कैसे हो सकता है। चूँकि तुम गलती पर हो और तुम्हारा लड़का सच्चाई पर है, इसलिए तुम्हारा अन्याय हुआ कि नहीं।

देसाई : आपकी यह दलील मेरी समझ में आ गई।

दूत ने लिखा : अपनी गलती मान लेने की आदत है।

# बच्चों में संस्कार डालें अगर मरकर भी जिंदा रहना चाहते हो तो

ढलता हुआ सूरज जाते-जाते एक छोटा-सा, बौना सा संदेश देकर जाता है कि अब अंधकार होने वाला है। मनुष्य को सूर्य से शिक्षा लेकर जीवन रूपी सूर्यास्त से पूर्व ही प्रभु-स्मरण और धर्म-ध्यान रूपी दीप जला लेना चाहिए। जिंदगी के बाद भी जिंदा रहो। जिंदगी के बाद जिंदा रहना कोई आसान काम नहीं है। इसके लिए जिंदगी में कई नेक काम करने पड़ेगे। नेक काम करने से ही स्वर्ग और मोक्ष मिलता है। स्वर्ग और मोक्ष कुछ और नहीं। मृत्यु के बाद जीते रहना ही मोक्ष है।

प्रभु की प्रतिमा में अगर हमें अपनी प्रतिमा न दिखाई पड़े तो प्रभु की प्रतिमा के दर्शन का क्या फल हुआ ? अगर तुमने बड़ों से कोई प्रेरणा न ली तो तुम कभी बड़े नहीं बन सकते और जीवन में बड़े न बने तो दुनिया भला तुम्हें क्या याद करेगी।

सारी दुनिया के समाज सुधारक और विचारक एक बात पर सहमत हैं कि किसी देश का भविष्य सुधारना है तो उस देश के बच्चों पर ध्यान देना होगा, उनको संस्कारित करना होगा। सुधारना होगा। देश का बचपन सुधर गया तो भविष्य खुद-ब-खुद सुधर जाएगा। क्योंकि आज के बच्चे



ही कल का भविष्य हैं। अभी कुछ दिनों पूर्व राजधानी में एक संस्था ने मेधावी छात्रों को सम्मानित करने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया था। उस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सी.बी.एस.ई. के चेयरमैन अशोक गांगुली ने अपने उद्‌बोधन में एक बड़े मार्के की बात कही। उन्होंने कहा कि यदि आप प्रतिदिन एक घंटे पूजा-पाठ करते हैं तो इसे घटा कर बीस मिनट कर दीजिए और बचे हुए चालीस मिनट अपने बच्चों को संस्कारित करने में लगाइए क्योंकि यही सच्ची पूजा है और भगवान भी इससे प्रसन्न होंगे। किसी कवि ने कहा भी है—'बच्चा है भगवान···।' इस देश को सुधारना है तो बच्चों को केंद्र में रखना होगा। आज किशोरों और युवाओं पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि युवा, बुजुर्ग पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच एक सेतु हैं। यदि समय रहते युवाओं को सही मार्गदर्शन नहीं मिला तो बुजुर्गों का बुढ़ापा बिगड़ जाएगा और बच्चों का भविष्य बर्बाद हो जाएगा। बच्चे कच्ची मिट्‌टी का घड़ा होते हैं जिन्हें अभी मनचाहा आकार दिया जा सकता है। मिट्टी पक गई तो फिर उसके आकार को बदलना बहुत कठिन काम हो जाता है। जीवन में कुछ करना चाहते हो तो बड़े-बड़े सपने देखो। जीवन में सफलता पाने के लिए सुख-सुविधाओं को दांव पर लगाना होगा। दुनिया का प्रेम पाना है तो सहनशील, क्षमाशील और मननशील बनो। धर्म आँगन जैसा नहीं बल्कि आकाश जैसा है। आँगन पर तो किसी का अधिकार हो सकता है। लेकिन आकाश पर किसी का कोई अधिकार नहीं होता है।

धर्म और आकाश सर्व-सुलभ हैं।

नई पीढ़ी के माता-पिता सोचते हैं कि बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए उन्हें किसी अच्छे पब्लिक स्कूल में डाल दिया जाए। अंग्रेजी बोलना और कम्प्यूटर चलाना सिखा दें, बस! फिर तो भविष्य उज्ज्वल है। यह धारणा सिरे से ही गलत है। आज टेलीविजन, इन्टरनेट और वीडियो गेम आदि बच्चों पर कितना गलत प्रभाव डाल रहे हैं इस बात को हम भली-भाँति जानते हैं। जो नहीं जानते, वो भी जल्द ही जान जाएँगे। यह सब दुर्व्यसन बच्चों को अपनी मिट्टी, सभ्यता संस्कृति और संस्कारों से काट रहे हैं, इनसे दूर ले जा रहे हैं। जरा सोचिए! जिस देश का बचपन

# क्रोध को जीतने का एक अचूक मंत्र

क्रोध के लिए एक पेपर पर यह लिखकर कि ''अब मुझे क्रोध आ रहा है'' अपनी जेब में रख लेवें जब कभी क्रोध वाली कोई वार्तालाप हो रही हो अथवा ऐसा प्रसंग हो कि क्रोध आनेवाला है तो वह कागज निकाल कर पढ़ लें तो देखेंगे कि कागज निकालते ही क्रोध रफूचक्कर हो जाएगा। क्रोध और अभिमान यह इस कलिकाल की दो ऐसी प्रमुख संतानें हैं जो चंद मिनटों में ही मित्र को शत्रु की पंक्ति में खड़ा कर देता है।

क्रोध को दबाने की जरूरत नहीं है। क्रोध को देखने और जानने की जरूरत है। दबाने से क्रोध समाप्त नहीं हो जाता। दबाया हुआ क्रोध भीतर प्राणों में लिप्त हो जाता है। प्रगट क्रोध तो क्षणिक होता है, दमित क्रोध ज्यादा खतरनाक है। क्रोध को बजाय दबाने के उसे देखने और जानने का प्रयास करो। लेकिन क्रोध को देख पाना, जान पाना थोड़ा कठिन है, क्योंकि क्रोध होश की हत्या करके ही प्रकट होता है, बेहोशी में देख पाना कुछ कठिन सा अवश्य है लेकिन असंभव नहीं है। साधना से सब कुछ संभव है। साधना की जरूरत है।

क्रोध से लड़ो मत, लड़ोगे तो जीत नहीं सकते। क्रोध का सामना क्रोध से करोगे तो आप पराजित हो जाओगे, क्योंकि क्रोध बड़ा विकट शक्तिशाली है। क्रोध का सामना शांति से करोगे, क्षमा से करोगे तो क्रोध हार जाएगा। क्रोध को दबाओगे तो क्रोध आपका पीछा करेगा, क्रोध से बचोगे तो क्रोध आपके आगे-आगे चलेगा क्योंकि मन की आदत है जिस चीज से उसे दूर रखो वह उसी में उलझा रहता है। निषेध निषेध नहीं निमंत्रण है, जिस पदार्थ के लिए मन को मना करो मन उसके प्रति उत्सुक



हो जाता है। थोड़ा ख्याल करना, जहाँ से मन को हटाने की कोशिश करो, मन उसी के आस-पास घूमने लगता है। मन की आदत है। पुरानी आदत है कि उसे जहाँ-जहाँ से भगाया जाता है, वहीं-वहीं जाता है। अगर मैं कहूँ कि आप आज बारह बजे से लेकर साढ़े बारह बजे तक टमाटर को याद मत करना, तो जैसे ही बारह बजने को होंगे आपको टमाटर दिखाई देने लगेंगे। इस बीच आलू याद नहीं आएगा, कददू याद नहीं आएगा। निषेध में आकर्षण होता है। अगर चेहरा घूंघट में हो तो देखने की तबीयत ज्यादा होती है। यह एक कटु सत्य है। टमाटर को याद नहीं करना—यह निषेध है। लेकिन मन के लिए यह निमंत्रण है, मन जरूर याद करेगा। पहले कभी आपको टमाटर बारह बजे याद नहीं आता था, लेकिन आज आएगा, जरूर आएगा। रह-रह कर याद आएगा।

कहीं इन्हें भी तो बहन जी वाला सामान नहीं चाहिए। उसके लिए दस साल पुराना रजिस्टर खोजना शुरू किया जो कि दो दिन बाद मिला। वह अनुभव आपकी जानकारी के लिए नीचे दिया जा रहा है।

15 अप्रैल, 1995 को श्रीमती सरला देवी का शरीर पूरा हुआ। सतरहवीं 1 मई, 1995 को थी अनुभव 24 अप्रैल, 2005 को सुबह चार बजे हुआ कि बहन जी ने जैसे कहा कि सतरहवीं में थाली में लड्डू सब ब्राह्मणों को, एक शैय्या पर और एक जो लड़का शैय्या के बराबर गैलिस जैसे लगाये बैठा है उन्नीस जगह दें। मैंने सोचा खाली लड्डू थोड़े ही दिये जाते हैं। सतरहवीं में चबैनी तो सुनी है वह भी लड्डू कचौड़ी थैली ( कागज ) में होते हैं। अत: मुझे तो समझ में नहीं आया मुझे तरीके से बता देवें तो वैसा करा देंगे। हे भगवान मुझे समझ में नहीं आया कृपा करो।

मैं दूसरी करवट लेट गया तो जैसे अनुभव फिर शुरू हुआ होगा और श्री किशन बाबू ( मेरे बड़े भाई ) जैसे मुझसे पूछ रहे हैं और मैं पंडित की तरह विश्वासपूर्वक उनको जवाब दे रहा हूँ—( 1 ) लड्डू कितने होंगे ? पाँच-पाँच ( 2 ) काहे के होंगे ? रवे, बेसन के। ( 3 ) काहे में रख कर देने हैं ? कन्ने उठी थाली में। ( 4 ) थाली काहे की ? काँसे की थाली। ( 5 ) कितनी जगह ? उन्नीस जगह। ( 6 ) किस किस को देने हैं ? सत्रह ब्राह्मणों को एक शैय्या पर, एक लड़का जो शैय्या ले जावेगा उसे। ( 7 ) लड्डूओं का वजन कितना होगा ? सवा-सवा किलो दोनों मेल के। ( 8 ) यह बाजार से ही बनवाकर मंगवा लें ? नहीं यह घर पर ही बनेंगे।

इसके पश्चात् शक्ति रूप में बहन जी बैठी हैं योगी रूपणी ( देह नहीं ) तेजरूप में और उसमें से आवाज निकली जैसे ठरक के बोली मैं तेरे से सत्संग करने ( बात करने ) जैसे फोन पर करा करती थी आती रहूँगी और जैसे घर पर आया करती थीं बातें ( सत्संग करने ) आऊँगी-आती रहूँगी जब यह सामान श्रीमती सरोज की सत्रहवीं के लिए परिवार व पंडितों के बीच में आया तो वह कहने लगे यह तो नहीं, देखे भी नहीं, शास्त्र में भी कहीं नहीं लिखा है। गुप्ता जी ने विनम्र निवेदन किया कि मैं मानता हूँ कि शास्त्रों में नहीं लिखा लेकिन कल्कि भगवान् ने बताया है और इसका फल मैंने अपनी बहनजी के केस में देखा है तो वह राजी हुए। यह चर्चा दो दिन गर्म



रही। इस दौरान गुप्ता जी के सुपुत्र योगेश धर्म संघ में शास्त्री जी के पास गए तो उन्होंने बताया कि काँसे की थाली ( काँसा एक ऐसी धातु है जो यमराज को पसंद है ) लड्डू ( रवे या बेसन ) का देना मोक्ष का सूचक है।

तो प्रिय भक्तवर! जैसा कि इस अनुभव व इसके उपचार से जो निष्कर्ष निकला है वह हम आपकी जानकारी के लिए बताना चाहेंगे जिसे आप चाहे तो कालान्तर में इच्छानुसार श्री कल्कि का भजन करने वाले कल्कि भक्त के लिये अपना सकते हैं। इससे यह पाया गया है कि जो भी कल्कि भक्त भगवान् के धाम जाता है, यह उपाय उसे एक ऐसा वी.आई.पी. कार्ड उपलब्ध करा देता है, कि वह स्वप्न अनुभवों द्वारा परिवार को निर्देश/संभालता रहता है और आवश्यकता पड़ने पर वह उनसे आवश्यकतानुसार लेते भी रहता है। बहुत से साथियों को यह भी कहते सुना है कि पितृों का दिखना अच्छा नहीं होता है लेकिन यह भगवान् श्री कल्कि के अनुभवों से विपरीत पाया गया कि यह शाश्वत सत्य है कि पितृ हमारे दु:ख, सुख के साथी हैं और उनकी माँगी गई सामग्री देकर हम उन्हें सहयोग पहुँचाते हैं।

रोटियाँ बाँट डाली।''

स्वामी जी बोले ''माँ! बालक तो ईश्वर का रूप होते हैं। रोटी देकर और स्वयं भूखा रहकर यदि भगवान के दर्शन होते हैं, तो ऐसे अवसर से लाभ न उठाने वाला तो भाग्यहीन ही समझा जाएगा।'' इतना कहकर स्वामी जी फिर भोजन की व्यवस्था करने में लग गए। फिर से रोटी बनाई। पहले की तरह भोजन करने बैठे ही थे कि बालकों की दूसरी टोली आ पहुँची। वह महिला देख रही थी। उसने बालकों को भगा देना चाहा परंतु स्वामी जी ने ऐसा करने से उसे रोक दिया। इस बार भी एक-एक करके समस्त रोटियाँ बाँट दी गई। इस पर उस महिला के आश्चर्य की सीमा न रही। बोली ''कब तक रोटियाँ बनाते जाओगे?'' आखिर अपने पेट की ज्वाला भी शांत करोगे कि नहीं?

स्वामी जी बोले ''माँ! रोटी ने तो पेट की ज्वाला शांत करनी है। यह अन्न का स्वभाव है। इस पेट की ज्वाला शांत न हुई, उस पेट की सही। देने का अनंद पाने के आनंद से बड़ा होता है। कुछ प्राप्ति हो जाए तो आनंद मिलता है। लेकिन कुछ देकर फिर पाने में सच्चा व स्थायी आनंद मिलता है। देने की भावना बनी रहेगी तो प्राप्ति स्वयं ही होगी प्रकृति का ऐसा नियम है।''

# अमर फल

कहने को वह बालक था, परंतु बहुत दयालु। दूसरे का दुःख देखने से ही उसका मन पिघल उठता और अपनी बुद्धि तथा शक्ति के अनुसार हर किसी की सहायता के लिए भरसक प्रयत्न करता।

वैसे तो उस बालक के पिता भी बहुत धार्मिक विचारों के थे। वह स्वयं भी परोपकार के लिए काफी कुछ करते थे। पर बालक तो उनसे भी चार कदम आगे था।

एक बार पिता ने उस बालक को कुछ पैसे देते हुए कहा, 'जाओ बेटा, बाजार से कुछ फल ले आओ।'

बालक ने पैसे जेब में डाले, हाथ में थैला लटकाया और गुनगुनाता हुआ निकल पड़ा। वह अपनी ही धुन में बाजार से गुजर रहा था। अचानक उसकी निगाह सड़क के किनारे पर पड़ी तो ठिठक कर वहीं रुक गया।

उस बालक ने देखा कि सड़क के किनारे कुछ लोग बैठे थे, शरीर को पूरी तरह ढकने के लिए उनके पास कपड़े भी नहीं थे, उनकी सूरत देखने से ही पता चल रहा था कि वह कई दिन से भूखे भी थे, फटे चिथड़ों से शरीर छिपाने की कोशिश करते हुए वह लोग भूख के मारे छटपटा रहे थे।

उस बालक से उन लोगों की यह दशा नहीं देखी गई। वह तुरंत उनके पास गया और जितने पैसे उसके पास थे, सभी उन्हें दे दिए। पैसे लेकर उन लोगों ने तुरंत खाने के लिए कुछ सामान खरीद लिया और उसे आशीर्वाद देने लगे।

उन नंगे-भूखे लोगों की भूख शांत होते देखकर बालक को बहुत ही खुशी हुई, इसके बाद मन ही मन खुश होता हुआ वह बालक खाली हाथ ही घर लौट गया। बेटे को खाली थैला लटकाये आते देख पिता ने पूछा, ''क्या बात है बेटा, तुम तो फल लेने गये थे न, फिर खाली हाथ कैसे?''

पिता का प्रश्न सुनकर बालक ने सहज भाव से उत्तर दिया ''देखने से भले ही खाली हाथ हूँ पर आज मैं आपके लिए एक अनोखा फल लाया

शोभभानं भक्तचित्ते, तस्मै नैवेद्यमुत्तमम्॥

( सुपारी, लौंग, इलायची, केशर युक्त ) ताम्बूल ( पान ) समर्पण—

कृष्ण यौवन सम्पन्न, कृष्णरूप महाप्रभो।
यशो देहि, बलं देहि, सुखं देहि रुजोहर॥

प्रार्थना करें—

श्यामः सर्वभूतात्मा, भक्तानाभयंकरः।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्मै नमोनमः॥ 1॥
ज्ञान विज्ञान चक्षुष्यः, महाभारतदर्शकः।
नमस्तसयै नमस्तस्यै नमस्तस्यमै नमोनमः॥ 2॥
श्यामकृष्णः कृष्णाश्यामः, कलौ एकश्चदेवता।
नमस्तसयै नमसतस्यै मनस्तस्मै नमोनमः॥ 3॥
कुरुक्षेत्रविजेता कृष्ण रुपेण संस्थितः।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्मै नमोनमः॥ 4॥
खाटू पुरीराजमानः भ्राजमानः कणे-कणे।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्मै नमोनमः॥ 5॥

## आरती

जय जगदीश हरे स्वामी जय श्री श्याम हरे।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे॥

## पुष्पांजलि

शरणागत दीनार्त्तिपरित्राणपरायणदं।
श्याम पुष्पांजलिं तुभ्यं गृहाण पुरुषोत्तम्॥

## यज्ञ हवन

श्याम गायत्री द्वारा

ॐ कृष्ण रुपाय श्यामाय, कलितमो निवारणाय धीमहि।
तन्नो श्यामः प्रचोदयात् स्वाहा॥



# अक्रोध की परीक्षा

एक जिज्ञासु एक बार किसी संत के पास गया और बोला, 'महाराज! कोई ऐसा उपाय बताइए, जिससे मुझे प्रभु का साक्षात्कार हो जाए।' संत ने उसे एक वर्ष तक एकांत में भजन करने की आज्ञा दी। जिज्ञासु भजन करने लगा। संत की कुटिया में एक भंगी सफाई करने आया करता था। वर्ष पूरा होने के दिन संत ने उससे कहा 'आज जब वह जिज्ञासु स्नान करके मेरे पास आए तब तुम अपनी झाड़ू से थोड़ी धूल उसके ऊपर उड़ा देना। भंगी की झाड़ू से उड़ी धूल छूने से जिज्ञासु क्रोधित होकर उसे मारने दौड़ा, भंगी भाग निकला।

जिज्ञासु फिर से स्नान करके पवित्र वस्त्रों को धारण कर संत के पास पहुँचा और बोला 'महाराज! मैं एक वर्ष तक एकांत में भजन करके आया हूँ।' संत ने कहा, 'अभी तो तुम साँप की तरह काटने को दौड़ते हो, तुम्हें भगवत्प्राप्ति कहाँ होगी? जाओ, एक वर्ष और भजन करो। जिज्ञासु फिर भजन में लीन हो गया।'

दूसरा वर्ष पूरा होने पर वह ज्यों ही स्नान करके संत के पास जाने लगा, संत की आज्ञा से भंगी ने आज उससे झाड़ू छुआ दी। इस बार उसने भंगी को दो-चार कड़ी बात कहकर छोड़ दिया। दुबारा स्नान करके वह जब संत के पास पहुँचा, तब उन्होंने कहा 'अभी तो तुम्हारा मन सर्प की तरह फुफकारता है, और समय लगेगा। फिर जाओ और एक वर्ष तक भजन करो।' जिज्ञासु लौट गया फिर एक वर्ष तक उसने भजन में मन लगाया।

वर्ष पूरा होने पर जब वह संत-चरणों के दर्शनार्थ चला, तब सिखाए हुए भंगी ने इस बार कूड़े से भरी टोकरी ही उठाकर उसके सिर पर उलट

# श्री भगवत्कल्कि पूजा एवं अभिषेक

कलियुग में 24वें अवतार कलिकल्मषनाशक पुनः सत्युग के संस्थापक भक्तसंरक्षक भगवान् श्री कल्कि जी की पूजा आराधना प्रार्थना अत्यंत फलदायिनी मानी गई है। भगवान् कल्कि की पूजा से 24 अवतारों की सर्वदेवमयी पूजा होती है।

स्नानादि से शुद्ध होकर आसन पर बैठिए तथा ध्यान कीजिए मंत्रपाठ द्वारा हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

पद्मनाभंवराहंच, नरनारायणौप्रभू।
यज्ञनारायणं व्यासं, नारदं कपिलं तथा॥1॥
हरिं पृथुंच ऋषभं मत्स्यं श्रीवामनं तथा।
नृसिंह कच्छपं, विश्वमोहनीरूप धारिण्म॥2॥
धन्वन्तरि पर्शुरामं, रामं, कृष्णबलौ तथा
वेदहंसं, हयग्रीवं, बुद्धं कल्किसमन्वितं॥3॥
विनायकं, महादेवं, हनुमन्तं च वैष्णवीम्।
पदमां श्री दशविद्याश्च नवदुर्गाः वसुन्धराम्॥4॥
नक्षत्राणि नवग्रहान्, सम्भलं व्रजसम्भवन्।
वृन्दांवन प्रयागंच, मथुरादिपुरीः शुभाः॥5॥
गंगादियमुनाद्याश्च सरितश्च ससागराः।
विश्वस्यदेवताः वेदान्, वन्दे धाम चतुष्टयम्॥6॥
आवाहये कल्किदेवं, कलिकल्मषनाशनम्।
अश्वारूढं खड्गहस्तं, त्रिलोकीपरमेश्वरम्॥7॥

## स्नानमंत्र

आकाश गंगानीतं च जातं ब्रह्मकमण्डलौ।
गृहाण सुस्नानजलं, सूर्यरश्मि प्रकाशितम्॥



## तिलक-पुष्पमाला मंत्र

चन्दनागुरु कुंकुम-पावनं चन्द्रपूजितं।
तिलकं कल्पवृक्षस्य मालां स्वीकुरू हे प्रभो॥

## नैवेद्य मंत्र

षट्पचाशत् व्यंजनानि, अन्नपूण्प्रर्पितानिच।
गृहाणकल्कि भगवन् श्रद्धया निर्मितानि च॥

## दीपधूप दर्शन मंत्र

सूर्यदीपं पारिजात, सुगंधमर्पयाम्यहम्।
कलिंनाशय, भक्तपाल, म्लेच्छान्दुष्टान्बिनाशय्॥

## आचमन

सप्तद्वीपसमुद्रस्थं गंगादिजल पावनम्।
तुलसी मिश्रितंनीरं गृहण कलिनाशक॥

## अश्वपूजा (पुष्प चढ़ावें)

सूर्यसप्तार्चिषां ज्योतीरूप विस्फोटकारकं।
अग्निज्वाला पादपद्मं अश्वं सम्पूजययाम्यहम्॥

## खड्ग पूजा

सर्वज्योतिम्रयं भव्यं कलिपादस्य त्रोटकम्।
परमाणुमयं दिव्यं खड्गं पूजयाम्यहम्॥

## पुष्पाञ्जलि

सत्युगस्थापकं नित्यं, कलिकल्मषनाशकं।
भगवन्तं कल्किरूपं, वन्दे पुष्पायणि चार्पये॥

## आरती

पूर्णावतार भगवान्, दिव्य शक्ति समन्वित।
धर्म त्रातः कालदेव, भक्तिगम्य सुरार्चित॥
प्रकटय स्वस्वरूपं, लीलां दर्शय शीघ्रतः।
आर्तिक्यं दर्शयामः श्च लब्धास्त्वत्पादर्शने॥

करते हैं। परन्तु प्रशंसा के पात्र व्यक्ति कोई बड़ी गलती कर बैठते हैं तो उन्हें अपमानित कर लज्जित करना गलत होगा। ऐसे में मिला हुआ सम्मान ही व्यक्ति के मार्ग में सबसे बड़ा बाधक बन जाएगा। क्योंकि जिसका मान नहीं उसका क्या अपमान ? और जिसका मान है उसका अपमान मान से भी ज्यादा है। अत: बात को इस तरह से सँभालना होगा कि अपमान की भावना न आने पाए अपितु मान को बनाए रखने की भावना जागृत् हो।

33. रुपए के साथ-साथ पैसे की भी चिन्ता करें अर्थात् मितव्ययी बनें : एक छोटा-सा गड्ढा खोदने के लिए सौ व्यक्ति और दो इंजीनियर जाहिर बात है फिजूलखर्ची दर्शाते हें अत: काम किस कीमत पर किया जाए यह ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। चार आदमियों द्वारा किया गया काम यदि हम दो आदमियों द्वारा करवा सकते हैं तो हम गर्व के पात्र हैं क्योंकि यह हमारी मितव्ययता को दर्शाता है।
34. लाभ नहीं तो कम्पनी नहीं : लाभ के द्वारा व्यापार के सभी खर्चे वहन होते हैं अत: लाभ व्यापार के लिए जरूरी है। यदि व्यापार में लाभ नहीं हो रहा है तो लम्बे समय तक व्यापार का चलना संभव नहीं है। अत: यदि व्यापारी की जगह देवता भी आकर **Directors** की **Seat** संभाल लें तो भी लाभ आवश्यक है।
35. काम करवाना भी एक कला है : अपनी कम्पनी में कार्यरत प्रत्येक कर्मचारी को यह अहसास दिलाना जरूरी है कि उसका काम कम्पनी के अस्तित्व के लिए बहुत जरूरी है। चाहे वह छोटा है या बड़ा उसका अत्यधिक महत्व है।
36. कम्पनी एक पम्प की तरह है जिसमें नियंत्रण का दवाब सही मात्रा में हो : एक आम समस्या जो प्रत्येक बॉस के सामने आती है वह है अपने कर्मचारियों पर नियंत्रण खराब से उत्पन्न स्थिति पैदा कर सकता है।
37. याद रखें मैनेजर का प्रत्येक कार्य लक्ष्य की ओर जाता हो : मैनेजर को अपने प्रत्येक कार्य को इस तरह से नियोजित करना चाहिए कि वह कम्पनी के कायदे कानूनों की सीमा के अन्दर रह कर अपने



कार्यों द्वारा कम्पनी के लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

38. काम अच्छा हो परन्तु नतीजे उससे भी अच्छे हों : काम के साथ-साथ परिणाम पर भी नजर रखें। पेपरों और काम में घिरे रहने से अच्छा है सोचें, विचारें **Plan** करें। काम में इतने व्यस्त न हो जाएँ कि खराब नतीजों की ओर ध्यान ही न जाए।
39. कल्पनाओं से नहीं दूरदर्शिता से सोचें : हमेशा अनुकूल परिस्थितियाँ ही रहने वाली हैं ऐसा सोच कर काम न करें प्रतिकूल परिस्थितियों के आने पर दूरदर्शिता का परिचय देते हुए इंतजाम पहले से ही करके रखें।
40. पैसे की तंगी दर्शाने से लागत कम और नतीजे गलत मिलते हैं : मैनेजर को आर्थिक तंगी बताते हुए कम **Staff** और **tight Budget** प्रस्तुत करें। थोड़े दिनों की हाय-तौबा के बाद उसी **Budget** में चीजें सरलता से हो जाएगी।
41. व्यापार के महत्वपूर्ण आँकड़ों पर ही ध्यान दें : सभी आँकड़ों को एक साथ देखकर कोई निर्णय न निकालें। इस संदर्भ में यह उदाहरण काफी अच्छा है **M.C. Nawara** ने **United States** की **Army** के **Stock** का **valuation** करने पर पाया कि 100 प्रतिशत में से सिर्फ 6 प्रतिशत की बराबरी नहीं कर पा रहा है। अत: सिर्फ उस 6 प्रतिशत **Stock** का मूल्यांकन करवाया गया।
42. **Rs.** 20.15, में से 15 पैसे का हिसाब अवश्य रखें 20 रुपए का हिसाब स्वत: मिल जाएगा : इकाई का हिसाब रखने से दहाई सैकड़ा स्वयं पंक्ति में आ जाएँगे।
43. कम्प्यूटर काम करेगा लेकिन सोचना आपको है या कहें काम तो आपको लेना है : कम्प्यूटर **Can work but Can not think.** मुसीबत पड़ने पर यह निर्णय नहीं ले सकता। कम्प्यूटर आपके आदेश का पालन करने वाला जिन्न है। सोचना, आदेश देना, काम लेना यह इंसानी दिमाग को करना होगा।
44. **Meetings** फायदेमंद होती है लेकिन काम ज्यादा जरूरी है : यदि कम्पनी के **Executives** अपना समय **Meetings** को अपने नियमों

वह अपना पहला कर्तव्य समझेंगे। कम्पनी का उद्देश्य, मशीन, कच्चे माल और पैसे द्वारा नहीं व्यक्तियों द्वारा पूरा किया जाता है। अतः इन्हें व इनकी भावनाओं को महत्व दें।

11. गुटबाजी न होने दें : मैनेजमेंट और मजदूरों के दो गुट न बनने दें। जैसा कि आजकल होना एक आम बात है। दीवार को बनने न दें, उसे तोड़ने की कोशिश करें।
12. गल्तियाँ ढूँढ़ने की बजाय गल्तियाँ होने से रोकें : गलती का अहसास करवाया जाना सभी को बुरा लगता है और निर्दोष होने पर ज्यादा बुरा लगता है। परन्तु समस्या को सुलझाने का एकमात्र तरीका गलती ढूँढ़कर अहसास करना ही नहीं है और भी है। गलत होने पर जाँचे, पूछें परन्तु इल्जाम न लगाएँ। सामने वाले को अपनी बात कहने का मौका दें। ऐसा करने से उसे अपनी गलती व जिम्मेदारी दोनों का अहसास होगा।
13. हर नया दिन ज्यादा परेशानियाँ लेकर आ रहा है : एक तरीके की समस्या एक बार नहीं कई बार आपके सामने आ सकती है। क्योंकि आपका वास्ता बहुत से लोगों से बहुत बार पड़ सकता है। अतः यह समझ लें कि समस्याओं का पूर्ण समाधान संभव नहीं है।
14. धैर्य और संयम के साथ काम लें : गलत होने पर हम अपना संयम और धैर्य खोकर सही को देखना तो भूल जाते हैं और सारा दिमाग जो गलत हुआ उस पर लगा देते हैं। क्रोधित हुए बिना ना कहना सीखें : अपनी असहमति को भी खुशी-खुशी जताएँ, क्योंकि क्रोध में किया गया कोई भी कार्य बुरे परिणाम ही लाता है। अपने साथ कई लोगों को लेकर चलने का यही मूल मंत्र है कि अपनी असहमति पर दूसरों की सहमति लेने का तरीका नम्रता से है। अतः पहले अपने क्रोध को जीतें तब दूसरों को जीतना बड़ा आसान हो जाएगा। असहमति प्रगट करने का तरीका बड़ा ही आसान है पहले सामने वाले की पूरी बात ध्यान से सुनें जहाँ-जहाँ सहमति जता सकते हैं जरूर जताएँ जहाँ आपको लगे कि असहमति जरूरी हे वहाँ भी जता कर कारण बताएँ और फिर अपना नजरिया रखें या अपनी



बात रखें और उससे गौर करने को कहें।

15. स्वयं को भी आईना दिखाते रहें : दूसरों की गल्तियों पर सोचना एक आसान काम है। परन्तु अपनी गलतियों पर सोचना एक मुश्किल काम है जोकि हमें अवश्य करना चाहिए। अपनी गल्तियों पर बिताया गया समय हमारी सफलता को और पास ले आएगा।
16. सही समय पर सही निर्णय लें : सही समय पर लिया गया सही निर्णय पैसा, समय और तनाव तीनों की बचत करता है। गल्तियाँ कम होती हैं।
17. व्यक्ति को वस्तु न समझें : मालिक और नौकर के बीच की दूरी आवश्यक है किन्तु यह दूरी इतनी न हो कि व्यक्ति की भावनाओं को ठेस लगे। उदाहरण के तौर पर मालिक कर्मचारियों की नमस्ते का जवाब देना भी उचित न समझे तो दूरी बढ़ेगी।
18. शासक बनें तानाशाह नहीं : अधिकारों का प्रयोग क्रूरता से न करें आप काम कह कर करवाना पसंद करेंगे या यह पसंद करेंगे कि काम आपसे पूछ कर किया जाए। एक अच्छा मालिक तानाशाही में विश्वास नहीं रखता।
19. आत्मविश्वास को बढ़ावा दें : वह व्यक्ति जिसने बहुत बड़ी गलती कर दी है उसका अच्छा पहलू भी देखें कि उसका पिछला रिकार्ड काफी अच्छा रहा है। अतः गलती की सजा देते हुए यह प्वाइंट भी ध्यान में रखें।
20. सदैव बुद्धिमान होने का दावान करें : आपके कर्मचारी द्वारा लाई गई समस्या हो सकता है असली न हो किन्तु उसका कारण कई घरेलू परेशानियाँ भी हो सकती हैं। आप यह बात जानते हुए भी अनजान बन कर देखें और उसे समस्या का समाधान स्वयं करने का मौका दें।
21. पक्षपात छोड़कर प्रेरणा स्त्रोत बनने का प्रयास करें : बॉस की चापलूसी का चलन आज एक आम चलन है। परन्तु इन बातों से ऊपर उठकर एक अच्छे बॉस को सभी कर्मचारियों को समान रूप से देखना चाहिए। पक्षपात किसी भी कम्पनी के लिए घाटे का

# न मिलेगी हवा न मिलेगा पानी, सन् पचास की यही होगी कहानी

अगले 50 साल में दुनिया उजड़ जाएगी। यह महज किसी ज्योतिषी की भविष्यवाणी नहीं बल्कि पर्यावरण से जुड़े अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिकों की है।

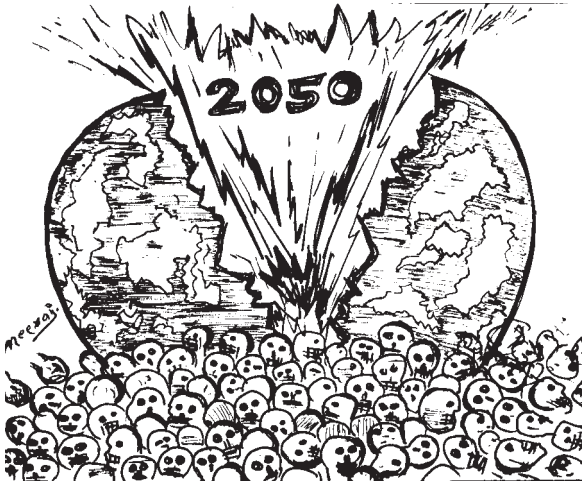


वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि जिस रफ्तार से दुनिया के संसाधनों की लूट हो रही है, उस हिसाब से 50 साल के अंदर दुनिया की आबादी की जरुरतों को मुहैया कराने के लिए पृथ्वी जैसे कम से कम दो और ग्रहों पर कब्जा करने की आवश्यकता पड़ जायेगी। पर्यावरण से जुड़ी दुनिया की सबसे मशहूर संस्था वर्ल्ड वाइल्डलाईफ फंड यानी डब्ल्यू डब्ल्यू एफ की ताजा रिपोर्ट में यह बात कही गई है। रिपोर्ट में इस टाइम बम के लिए सबसे अधिक दोषी अमेरिका को बताया गया है।

वैज्ञानिकों की इस चेतावनी को पर्यावरणविदों की एक और चेतावनी कह कर टालने का जोखिम भी नहीं उठाया जा सकता है क्योंकि दुनिया के संसाधनों के 2050 तक लुट जाने की बात पूरी तरह पुष्ट वैज्ञानिक आंकड़ों के आधार पर कही गई है। इंग्लैंड के अखबार ऑब्जर्वर की वेबसाइट के अनुसार, वैज्ञानिकों ने कहा है कि संसाधनों के दोहन की



रफ्तार अगर यही रही तो समुद्र में मछलियाँ गायब हो जाएँगी और कार्बन डाइ ऑक्साइड सोखने वाले सारे जंगल उजड़ जाएँगे। इसके बाद शुद्ध पानी का भयानक संकट छा जाएगा।

डब्ल्यू डब्ल्यू एफ की इस रिपोर्ट में वैज्ञानिक साफ चेतावनी देते हैं कि या तो हमें अपनी आराम तलब जीवन शैली को बदल लेना चाहिए या फिर पृथ्वी के जैसे ही दो और ग्रहों की तलाश कर उन पर कब्जे की तैयारी शुरू कर देनी चाहिए क्योंकि 2050 तक तो यह पृथ्वी हमारे लिए बेकार हो जाएगी। वैज्ञानिक उत्तरी अटलांटिकसागर का उदाहरण देते हुए बताते हैं कि 1970 में यहाँ कॉड मछली का करीब 2,64,000 टन भंडार था जो कि 1995 में घटकर 60 हजार टन ही रह गया। 1970 से 2002 के बीच पृथ्वी पर से जंगल का प्रतिशत 12 फीसदी कम हो गया है, ताजा पानी का भंडार 55 फीसदी घट चुका है और समुद्री जीवन भी घटकर एक तिहाई ही रह गया है। ये सभी एक खतरनाक भविष्य की ओर इशारा करते हैं जिससे अभी तक तो यह दुनिया अंजान ही नजर आती है।

डब्ल्यू डब्ल्यू एफ के अनुसार खतरा मनुष्यों के लिए ही नहीं बल्कि 350 तरह के स्तनधारियों, पक्षियों, मछलियों आदि के लिए भी है। इसमें से कई प्रजातियों की संख्या पिछले 30 साल में आधी से अधिक घट गई है।

# चार प्रश्न

आचार्य ज्ञानदेव के आश्रम में सभी शिष्य ध्यानपूर्वक शिक्षा प्राप्त करते थे। पढ़ाई के साथ-साथ सभी शिष्य आश्रम की देखभाल भी करते थे। एक दिन आचार्य ने सभी शिष्यों से चार प्रश्न पूछे। पहला प्रश्न था, यहाँ भी नहीं, वहाँ भी नहीं। दूसरा प्रश्न—यहाँ नहीं वहाँ है। तीसरा प्रश्न—यहाँ है, वहाँ नहीं। चौथा प्रश्न—यहाँ भी है, वहाँ भी है।

सभी शिष्ट जुट गए चारों प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने में। कई दिन हो गए, लेकिन किसी भी शिष्य को एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं मिला तो वह खेलकूद में लग गए परन्तु एक शिष्य एकांत में बैठ कुछ सोच रहा था। उस शिष्य का नाम था, मनमोहन।

मनमोहन ने देखा कि आश्रम से कुछ दूर एक चरवाहा पशु चरा रहा है। मनमोहन चरवाहे के पास गया और बोला, 'कल तुम अपने सभी पशुओं को आश्रम के बाग में चरा लेना। कल तुम्हारे लिए विशेष छूट है।'

मनमोहन कुछ आगे बढ़ा। उसने देखा, एक साधु तपस्या में लीन थे। मनमोहन साधु के पास जाकर बोला, ऋषिवर, आप कल आचार्य ज्ञानदेव के आश्रम में आइए। आप आश्रम में पधारेंगे तो हमें बहुत खुशी होगी।

'हम आश्रम में अवश्य आएँगे।' साधु ने कहा।

मनमोहन कुछ आगे चला तो उसे एक नर्तकी दिखी। मनमोहन उसके पास जाकर बोला, 'देवी, अगर आप कल आचार्य ज्ञानदेव के आश्रम में आकर अपनी कला का प्रदर्शन करेंगी तो हमें बहुत खुशी होगी।'

नर्तकी आश्रम में आने के लिए मान गई। मनमोहन वापस आश्रम



की तरफ चल दिया। रास्ते में एक सेठ के मकान के पास पहुँचा, जिसने सदाव्रत लगा रखा था। वह गरीबों को सदैव भोजन करवाता तथा वस्त्र आदि दान में देता था।

मनमोहन ने सेठ से भी आश्रम में आने के लिए कहा। सेठ मान गया।

दूसरे दिन सुबह-सुबह चरवाहे ने अपने सभी पशु आश्रम के बाग में चराने के लिए जबरन घुसा दिए। बाग की देखभाल कर रहे शिष्य चरवाहे को आचार्य के पास ले गए। आचार्य अपनी कुटिया में नहीं थे। शिष्यों ने चरवाहे को कुटिया के समीप खड़ा रहने के लिए कहा। शिष्यों ने देखा कि एक साधु, एक नर्तकी और एक सेठ आश्रम के द्वार पर खड़े 'आचार्य ज्ञानदेव, आचार्य ज्ञानदेव' पुकार रहे हैं। शिष्य उन्हें आदर सहित आश्रम के भीतर ले आए।

कुछ समय बाद आचार्य ज्ञानदेव तथा शिष्य मनमोहन आश्रम में लौट आए। सभी ने आचार्य ज्ञानदेव को प्रणाम किया। इससे पहले कि आचार्य उनके आने का कारण पूछते, मनमोहन बोला, 'गुरुजी, आपके पहले प्रश्न का उत्तर यह चरवाहा है। इसे न तो लोक से मतलब है, न ही इसे परलोक जाने की चिंता है। वह यहाँ भी नहीं है, वहाँ भी नहीं है। दूसरे प्रश्न का उत्तर है, यह साधु।'

इन्हें केवल परलोक की चिंता है। ये स्वयं में है, पर धरती पर नहीं है। यह यहाँ नहीं हैं, वहाँ है तीसरे प्रश्न का उत्तर है यह नर्तकी। इसे धरती पर तो धन के कारण पूछा जाता है, मगर परलोक में इसके लिए कोई जगह नहीं है। चौथे प्रश्न का उत्तर है, सेठ जी। वह सदाव्रत लगाकर पुण्य तो कमा ही रहे है, साथ ही धरती पर भी इनका सम्मान है। यह यहाँ भी है और वहाँ भी है।

मनमोहन के चारों प्रश्नों के उत्तर सुनकर आचार्य बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मनमोहन को गले से लगा लिया और उसे सबसे समझदार शिष्य का सम्मान दिया।

प्रतिदिन भगवान की पूजा अर्चना होती थी। गरीबों को दान दिया जाता था, पर उसके ससुराल में इन सब बातों का अभाव था। इसलिए वह मन ही मन बहुत दुखी रहती थी। एक दिन हवेली के दरवाजे पर एक साधु आया और बोला मैं भूखा हूँ भाई कुछ खाने को दे दो। साधु की आवाज सुन कर सेठानी पुत्रवधू से बोली भगा दो इस साधु को, ये लोग ढोंगी हैं, यूँ ही माँगने चले आते है। पुत्रवधू ने जवाब दिया माँ जी द्वार पर आये साधु को यूँ खाली हाथ लौटाना ठीक नहीं, क्या पता क्रोधित होकर वे शाप दे दें, दो रोटी देने से हम गरीब नहीं हो जायेंगे। ठीक है बस एक रोटी दे दो उस साधु को। मन ही मन सेठानी साधु के शाप की बात सुन कर डर गई थी। बहू दो रोटी और सब्जी लेकर द्वार पर गई साधु ने कुछ पल उसे देखा और फिर बोला क्या लाई हो पुत्री ? ताजा भोजन तो हमारे घर बनता नहीं महाराज ये बासी भोजन है ये ही ले लीजिए। परंतु ऐसा कब तक चलेगा कभी न कभी तो बासी भोजन भी समाप्त हो जायेगा, तब तुम लोग क्या करोगे ? साधु ने पूछा तो बहू लम्बी श्वांस लेकर बोली तब तो भूखे ही रहना होगा। महाराज। साधु ने पुत्रवधू से भोजन लिया और आगे बढ़ गया। अन्दर से सेठानी अपनी पुत्रवधू और साधु का वार्तालाप सुन रही थी। पुत्रवधू द्वारा ताजे भोजन को बासी बताए जाने से वह बड़ी क्रोधित थी, जब बहू अन्दर आई तो वह बोली तूने उस साधु से झूठ क्यों बोला कि रोटियाँ बासी है जबकि दो मिनट पहले बनाई थी। तुमने साधु से ये भी कहा जब ये बासी भी नहीं होगा तब हम भूखे मरेंगे। हम लोग करोड़पति है। तिजोरियाँ धन से भरी है फिर भूखे भला कैसे मर सकते हैं ?

असल में तुम बाहर वालों के सामने हमारी बदनामी करती हो। आज मैं सेठ जी को सारी बात बता दूँगी। बहू ने कुछ जवाब नहीं दिया बस मुस्कराती रही। कुछ ही देर में सेठ दुकान से लौटे तो सेठानी बोली हमारी बहू तो हमारी नाक कटा रही है। बाहर वालों के सामने झूठमूठ की बातें बनाती है और सेठानी ने सारी बात सेठ को कह सुनाई। सेठ ने पूछा क्यों बेटी क्या ये बात सच है ? 'हाँ पिता जी' पुत्रवधू बोली कहे तो मैंने यही शब्द थे पर उनका अर्थ आप ठीक से समझ नहीं पाये। असल में वह एक पहुँचे हुए महात्मा थे मुझे देखते ही इस घर की बातें समझ गए थे। उनके



यह पूछने पर कि क्या ये ताजा भोजन है मैंने जवाब दिया नहीं ये बासी भोजन है। बासी भोजन से मेरा तात्पर्य हमारे वर्तमान में किए जाने वाले सत्कर्मों से था और क्योंकि सत्कर्म हमारे घर में होते ही नहीं इसलिए मैंने कह दिया कि भोजन बासी है अर्थात् हम पूर्व जन्म में किए सत्कर्मों का फल पा रहे है। इस जन्म में तो पूजापाठ दान पुण्य कुछ नहीं होता। पूर्व जन्मों के सत्कर्मों से ही ये धन दौलत सुख सुविधा हम पा रहे हैं। साधु ने पूछा कि जब पूर्व जन्म के ये संचित सत्कर्मों के फल भी समाप्त हो जाएँगे तब हम क्या करेंगे ? मैंने कहा तब भूखे मरेंगे। अर्थात् तब हमारे दुर्दिन आ जाएँगे क्योंकि इस जन्म में तो हमने अच्छे कर्म किये नहीं है और बिना अच्छे कर्मों के सुख भी नहीं मिलता। बहू की ज्ञान भरी बात से सब की आँखें खुल गई। वे समझ गए कि हर मनुष्य को अपने जीवन में अच्छे कर्म करने चाहिए। क्योंकि सत्कर्म का फल हमें वर्तमान जन्म में और अगले जन्म में सुख के रूप में अवश्य मिलता है।

के लिए शीशे के जारों में सजे हैं।

यह बताते हैं कि वे ऐसा समझते बूझते और बगैर किसी मजबूरी के कर रहे हैं। ताइवान पूर्व और दक्षिण चीन सागर के मध्य स्थित एक छोटा सा देश है, जहाँ साक्षरता दर 64 प्रतिशत से भी अधिक है। कह सकते हें कि माँसाहारी प्रवृत्ति के ताइवानियों का शौक इन दिनों पाशविकता की सारी हदें पार कर चुका है। ताइवान के कई प्रमुख शहरों टपइ, चुन्वों, युन्थो, ताइनान, तेचुंग के होटलों व रेस्टोरेन्टों में भुने हुए भ्रूण व आठ माह तक के बच्चों के गोश्त की सरेआम बिक्री की जा रही है। इन होटलों में सजे जारों में भुने हुए भ्रूण व बच्चों के गोश्त के टुकड़े भी बिक्री के लिए उपलब्ध हें। भुने हुए भ्रूण ( 15 दिन 1 महीने के बच्चे ) व गोश्त के टुकड़ों की बिक्री अस्सी न्यू ताइवान डॉलर से लेकर दो सौ न्यू ताइवान डॉलर तक की जाती है। एक वेबसाइट www.muzuki.bosra.com के जरिए ताइवानियों की इस पाशविक प्रवृत्ति की झलक दुनिया भर के लोगों को दिखायी गई है। वेबसाइट से प्राप्त जानकारी के मुताबिक इस प्रकार के माँस की बिक्री करने वाले लोग ताइवान के आर्थिक रूप से कमजोर तबके पर गहरी नजर रखते हैं। विभिन्न कारणों से संतान न चाहने वाले दम्पति व प्रेमी युगल भी उनके सम्पर्क में रहते हैं। टर्मिनेशन आफ प्रेगनेन्सी ( गर्भपात ) व आपरेशन के जरिए भ्रूण तथा अबोध बच्चों को गर्भाशय से निकलवा दिया जाता है और फिर उनकी बिक्री की जाती है, पहले भ्रूण को ही भूनकर खाया जाता था, परंतु अब आठ माह तक बच्चों के भी माँस को खाया जा रहा है। 'ह्यूमन रोस्टेड मीट' के नाम से प्रचलित यह माँसाहारी व्यंजन अब ताइवान की लगभग दस प्रतिशत जनसंख्या का पसंदीदा भोजन बन चुका है। इसे देखकर लगता है कि कलियुग चरम सीमा पर है।

सोचिये, 4,32,000 वर्ष बाद क्या होगा ? इसलिए यह स्वीकार कीजिए कि कलियुग का यह चौथा चरण है। अत: आईए मिलकर भगवान श्री कल्कि की सच्ची पुकार करें। हे प्रभु! शीघ्रताशीघ्र प्रकट होकर सत्युग की स्थापना करें और राजसिंहासन पर विराजमान हो जाइए। तो आओं बच्चों, आज यह संकल्प करें कि कल्कि भगवान के नाम, जाप, माला, संकीर्तन, हवन के साथ साहित्य कार्य में अवश्य हाथ बटाना है।



# मैं भी तो इनमें से नहीं

एक बार आचार्य महाधीर अपने सभी शिष्यों के साथ तीर्थ यात्रा पर जा रहे थे। चलते-चलते सुबह से शाम हो गई। सभी शिष्य चलते-चलते थक गए थे, इसीलिए सभी को जल्दी नींद आ गई। लेकिन आचार्य इधर-उधर टहलने लगे। अचानक उन्हें दूर से अनेक व्यक्तियों के रोने की आवाज सुनाई दी।

वह उस दिशा की ओर चल पड़े, जहाँ से रोने की आवाजें आ रही थीं। चलते-चलते वह एक अन्धे कुएँ के पास पहुँचे। उन्होंने देखा कि पाँच व्यक्ति उसमें पड़े विलख रहे थे। आचार्य से उनकी दुर्दशा देखी नहीं गई। उन्होंने उनसे पूछा, 'आप लोग कौन है और इस कुएँ से निकलने का प्रयास क्यों नहीं कर रहे हैं ?' आचार्य की बात सुनकर उनमें से एक बोला, 'हम पाँचों प्रेत है और अपना कर्मफल भोगने के लए इस कुएँ में गिराए गए हैं। हमारे लिए विधि-विधान को तोड़कर निकल पाना सम्भव नहीं है।'

प्रेत की बात सुनकर आचार्य को आश्चर्य हुआ। उन्होंने प्रेतों से पूछा 'आपकी इस दुर्गति का कारण क्या है ?'

प्रेतों में से एक बोला, 'मैं पिछले जन्म में ब्राह्मण था। मुझे खूब दक्षिणा मिलती थी। मैं सारी दक्षिणा भोग-विलास में खर्च करता था। मैंने

परिवार के नष्ट हो जाने पर नारद जी बहुत दुखी हुए और नदी के तट पर बैठ कर रोने लगे। तभी भगवान उनके सामने प्रकट हुए और बोले, 'हे नारद, पानी कहाँ है ? और तुम रो क्यों रहे हो ?' श्री भगवान को देखकर नारद जी चौंक पड़े।

सारी बात को समझते हुए नारद बोले, 'हे प्रभु, आपको मेरा कोटि-कोटि प्रणाम है और आपकी अद्‌भुत माया को भी मेरा नमस्कार है।'

दैनिक जीवन के आपा-धापी में मन को हम इतना दुखी कर लेते हैं, कि दुखों में लिप्त मन भगवान की भक्ति को व्यर्थ मान लेता है। दूसरे शब्दों में कहें तो अपने दुःखों को तो बड़ा मान लेते हैं और भगवान की कृपा को छोटा मान लेते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि हमें सांसारिक माया में लिप्त हुए बिना अपने कर्त्तव्यों को भी पूरा करना है और भगवान श्री कल्कि में आस्था रखकर अडिग विश्वास के साथ अपनी परेशानियों से लड़ना है।



# हमारे गुरुजी सबसे बड़े गुरु

एक बार स्वर्ग में देवताओं में विचार-विमर्श चला कि दुनिया में सबसे बड़ा कौन है ? समस्या पूर्ति में इन्द्र ने पूछा—बताओ कि संसार में

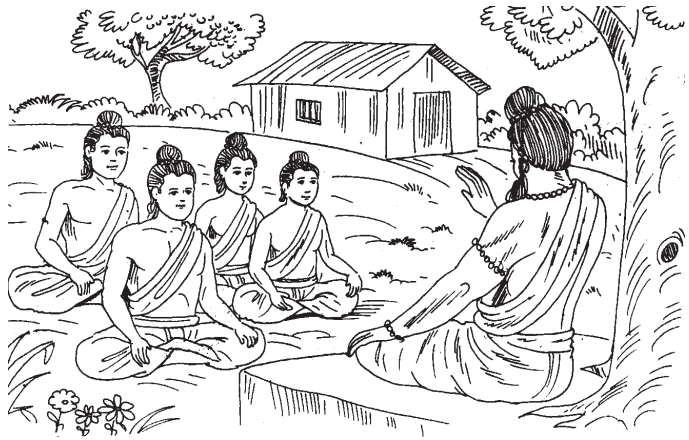

सबसे बड़ा कौन है ? एक देव ने कहा कि पृथ्वी सबसे बड़ी है। देवों ने उसकी बात का समर्थन किया। मगर तभी दूसरा देव बोला—महाराज! मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ। इन्द्र ने पूछा—क्यों ? देव बोला—यदि पृथ्वी बड़ी है तो यह बताओ कि वह शेष नाग, के सिर पर क्यों टिकी हैं ? देवों को लगा कि बात तो ठीक है। जिस शेषनाग ने सारी पृथ्वी का भार अपने सिर पर ले रखा है वह सबसे बड़ा है और सब देवों ने एक स्वर में कहा—हाँ शेषनाग सबसे बड़े हैं तो शंकरजी के गले में क्यों पड़े हैं ? देवों ने कहा—हाँ-हाँ, बिल्कुल ठीक! इसका मतलब तो शंकरजी सबसे बड़े हुए। फिर एक देव बोल पड़ा—यह भी गलत है। यदि शंकर बड़े है तो हिमालय पर क्यों खड़े हैं ? फिर समस्या वहीं की वहीं। अच्छा तो इसका मतलब हुआ कि हिमालय सबसे बड़ा है। मगर फिर एक विचार आया कि भाई! यदि हिमालय( कैलाश पर्वत ) सबसे बड़ा है तो वह हनुमान के हाथों में क्यों उठा है! ओह! बिल्कुल ठीक। इसका मतलब हुआ कि हनुमान सबसे बड़े हैं। फिर आवाज आई—नहीं, हनुमान बड़े नहीं हो सकते। इन्द्र ने पूछा—क्यों ? देव बोला—यदि हनुमान बड़े हैं तो वे रामजी के चरणों

# डॉक्टर ने टी.वी. बन्द कर दिया बच्चे ठीक हो गए

ब्रिटेन के रायल लिवरपूल चिकित्सालय में डॉ. रानल्डन फिन ने कुछ समय पहले एक ऐसे बच्चे के इलाज के बारे में बताया जो शिक्षा में इतना पिछड़ गया था कि उसे उस स्कूल से निकालना पड़ गया था जहाँ वह काफी समय से पढ़ रहा था। डॉ. फिन ने इस बच्चे की आदतों और जीवन-शैली का ध्यान से

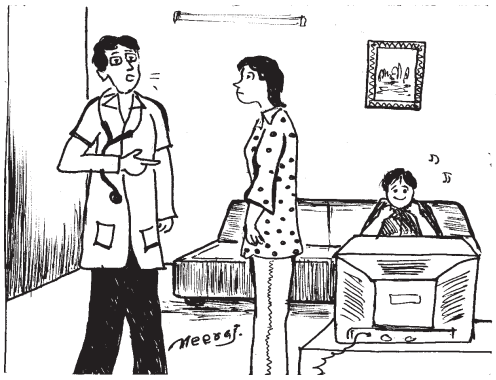

अध्ययन किया और फिर उन सब खाद्य पदार्थों के खाने पर रोक लगा दी, जिनमें कृत्रिम रंगों का उपयोग होता था। बच्चे के माता-पिता की खुशी का ठिकाना न रहा जब ये बच्चा शीघ्र ही शिक्षा में सामान्य होने लगा और यहाँ तक कि गणित में तो अपनी कक्षा में प्रथम आ गया।

कुछ वर्ष पहले संयुक्त राज्य अमेरिका के बाल चिकित्सकों की अकादमी ने तीस बच्चों के एक अन्य महत्वपूर्ण केस की ओर ध्यान दिलाया। ये बच्चे नींद न आने, बेचैनी, थकान, सिरदर्द और उल्टी की शिकायत कई दिनों से कर रहे थे। डॉक्टर भी हैरान थे, क्योंकि उन्हें बच्चों की बीमारी समझ ही नहीं आ रही थी। अंत में बहुत छानबीन के बाद डॉक्टरों ने यह पता लगाया कि इन सब बच्चों में एक बात सामान्य थी—ये सभी बच्चे टेलीविजन बहुत अधिक देखते थे। रोज ये बच्चे तीन से छह घंटे टी.वी. देखते थे। रोक लगाने पर तीन दिन में बच्चे ठीक हो गए।

पिछले कुछ वर्षों में ऐसे अनेक आश्चर्यजनक उदाहरण सामने आए हैं, जब ऐसे कारणों से बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ गया तथा जिनके बारे में उन बच्चों ने तो क्या उनके माता-पिता ने भी कभी शक तक नहीं किया। आधुनिक जीवन-शैली ने हमें कई तरह के आराम दिए हैं, पर साथ ही ऐसे अनेक संकट भी उपस्थित किए हैं, जिनके प्रति सचेत न होने के कारण



विशेषकर बच्चों के लिए बड़ी विकट स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

ये समस्याएँ शिशु अवस्था से ही, बल्कि सच कहें तो उससे पहले ही आरंभ हो जाती है। आधुनिकता के नाम पर कुछ महिलाओं ने शराब और सिगरेट पीना आरंभ कर दिया है। अगर वे गर्भावस्था में भी शराब व सिगरेट पीना जारी रखती हैं, तो इसका भ्रूण पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है और जन्म से पहले ही बच्चे की स्वास्थ्य समस्याएँ आरंभ हो जाती है।

कुछ परिवारों में आधुनिकता की अनुचित समझ के कारण शिशु को माँ का दूध नहीं दिया जाता या जितना मिलना चाहिए उतना नहीं दिया जाता। शिशु को माँ का दूध पर्याप्त नहीं मिलने के कारण शैशवकाल से ही अनेक समस्याएँ आरंभ हो जाती है।

थोड़ा बड़ा होने पर बच्चों को अनेक परिवारों में चॉकलेट, कोका कोला या पेप्सी कोला जैसे बाजार में मिलने वाले शीतल पेय, पेस्ट्री, केक, बिस्कुट, टॉफी, आइसक्रीम आदि खूब खाने के लिए दिए जाते हैं। इन्हीं खाद्य पदार्थों से बच्चों का पेट बहुत कुछ भर जाता है तब रोटी, सब्जी, दाल व फल जैसे बहुत आवश्यक खाद्य पदार्थों के लिए बच्चों में रुचि ही नहीं रह जाती और ये जबरदस्ती खिलाएँ जाते हैं, तो उनकी अरुचि और बढ़ जाती है। बाजार के खाद्य पदार्थों में प्रायः अनेक तरह के हानिकारक रसायन रहते हैं। खाद्य पदार्थ को आकर्षक रंग देने, उसे गाढ़ा करने व उसका स्वाद या सुगंध आदि बढ़ाने के लिए इनमें कई बार हानिकारक पदार्थ भी मिलाए जाते हैं। ब्रिटेन के एक विशेषज्ञ एरिक मिलस्टोन ने ऐसे 299 पदार्थों की जाँच कर बताया कि इनमें से 85 ऐसे थे, जिनका स्वास्थ्य पर दुष्परिणाम पड़ने की संभावना है। ब्रिटेन में यह स्थिति है तो यहाँ क्या स्थिति होगी इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

बच्चे थोड़े से बड़े होते हैं तो उन्हें किसी न किसी तरह के स्कूल में डाल दिया जाता है। कभी-कभी दो या तीन वर्ष की उम्र में ही। कम उम्र से ही बच्चों पर अधिक से अधिक सीखने का बोझ महत्वाकांक्षी अभिभावक और अध्यापक डालने लगते हैं। अब उनके विशेषज्ञ यह चेतावनी दे रहे हैं कि जिन बच्चों पर कम उम्र में शिक्षा का अधिक बोझ डाला जाता है, उनकी सीखने की क्षमता पर आगे चलकर प्रतिकूल असर पड़ता है। ऐसे

# कलियुग के लक्षण

भारत भूमि ऋषियों और देवताओं की भूमि है। इसके कण-कण में आध्यात्मिक चेतना है जो भगवान का नाम लेकर जागती थी और भगवान का कीर्तन करते हुए सोती थी। महर्षि वेदव्यासजी ने श्रीमद्भागवत के बारहवें स्कन्ध के दूसरे अध्याय में स्पष्ट शब्दों में कहा है कि भगवान श्रीकृष्ण जब अपनी लीला संवरण करके परम धाम को पधारे, उसी समय से कलियुग ने संसार में प्रवेश किया। उसी के कारण मनुष्यों की मति-गति पाप की ओर ढुलक गई। धर्म कष्ट से प्राप्त होता है और अधः पतन सुखों से। इसलिए भोली-भाली जनता को गिरने में देर नहीं लगीं। कलियुग में जिसके हाथ में शक्ति होगी वही धर्म और न्याय की व्यवस्था अपने अनुकूल करा सकेगा, जो रिश्वत देने या धन खर्च करने में असमर्थ होगा। उसे अदालतों से ठीक-ठीक न्याय न मिल सकेगा। जो बात बनाने में जितना चालाक होगा उसे उतना ही बड़ा विद्वान माना जाएगा। अज्ञानी व दोषी होने की एक ही पहचान होगी— गरीब होना। योग्यता-चतुराई का सबसे बड़ा लक्षण होगा कि मनुष्य अपने कुटुम्ब का पालन कर ले। इस प्रकार जब सारी पृथ्वी पर दुष्टों का बोल-बाला हो जाएगा तब राजा होने का कोई नियम न रहेगा।

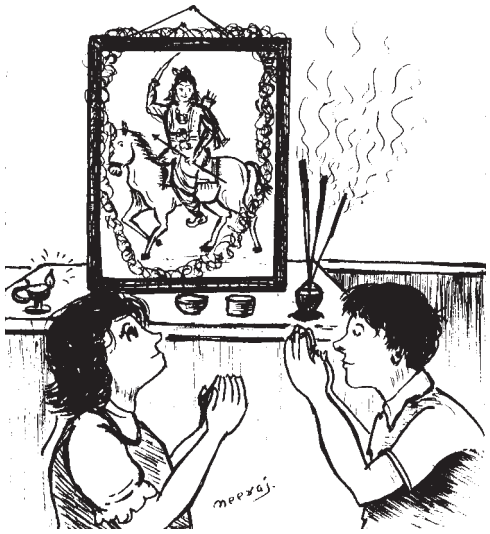

कलियुग में मनुष्य की आयु बहुत कम है। स्मरण शक्ति व साधन सीमित हैं। जहाँ कलियुग में इतने अवगुण हैं, वहाँ जन्म-जन्मों के भक्तों ने तप किया था 'हे भगवान कलियुग में जन्म दे ताकि थोड़े समय में आपकी कृपा प्राप्त की जा सके'। कलियुग में अच्छा सोचने का फल मिलता है



और बुरा सोचने का पाप अन्य युगों की तरह नहीं लगता। प्रह्लादजी ने श्रीमद्भागवत में कहा है कि 'समझदार हो तो बाल्यावस्था में ही भक्ति कर लो वरना वृद्धावस्था में शरीर साथ नहीं देता, बीमारी साथ नहीं छोड़ती, भजन, पूजन व भक्ति न कर सकोगे।' तो यह सोचना व्यर्थ ही हे कि अभी समय बहुत है बुढ़ापे में भजन कर लेंगे। शरीर ठीक है तब तक बाजी अपने हाथ में है। भगवान कल्कि का पूजन, भजन, कीर्तन इस घोर कलिकाल में शीघ्र फलदायक व कष्ट-निवारक है। हमको चाहिये संसारी सुख, धन वैभव, भगवान की भक्ति और आनन्द जबकि भगवान को चाहिये हमारा मन और उसका उल्टा 'नम' यानि नमस्कार। यदि माँगना ही है तो भगवान से क्यों न माँगा जाए? मनुष्य से माँगने पर कभी संतुष्टि नहीं होगी। भगवान ने मानसिक आनन्द अपने पास रखा है वरना व्यंग होता कि 'यह भी विदेशों में पहुँच जाता और इसकी शीशियाँ हमें मूल्य चुकाकर दवाई की दुकानों से लेनी पड़ती।' आज बहुत से मनुष्यों के पास सब कुछ होते हुए भी उनके मन में उदासीनता, उच्चाहट, तर्क-वितर्क है। बारह कलाओं के अवतार भगवान राम ने रावण को अपने हाथ से मारा। सोलह कलाओं के अवतार भगवान कृष्ण ने रथ पर सारथी बनकर अर्जुन से संहार कराया। भगवान श्री कल्कि 64 कलाओं के निष्कलंक अवतार हैं। बवंडर, तूफान, एटम बम, हाईड्रोजन बम, रासायनिक अस्त्रों-शस्त्रों से देश के देश नष्ट हो जाएँगे और कोई यह कहने वाला न होगा कि भगवान कल्कि ने मारा। वास्तव में प्रलय कल्कि अवतार का दूसरा रूप है। जो बहाने की ताक में मुँह बायें खड़ा है। न जाने किस समय भगवान क्या कर दें। भगवान कल्कि की कथा व कीर्तन के सिवाय उद्धार का कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

# इस तरह रह सकते हैं विद्यार्थी तनाव मुक्त

आज की पीढ़ी जिन संस्कारों और परम्पराओं को दकियानूसी मानने लगी हैं, पश्चिम के लोग आज उसमें सार्थकता खोज रहे हैं। गुरुजनों व माता-पिता का आशीर्वाद, प्रभु की उपासना जादू-सा असर रखते हैं।

विद्यार्थियों के लिए परीक्षा और तनाव शब्द एक-दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। शायद यह जानकर आप थोड़ी राहत महसूस करें कि अच्छे प्रदर्शन के लिए थोड़ा तनाव होना जरूरी है, क्योंकि तनाव की अवस्था में आपके शरीर के सभी अंग कुछ इसी तरह अधिक सक्रिय हो जाते हैं, जैसे रोगाणुओं के प्रवेश करने पर रक्त के श्वेतकणों की संख्या अपने आप बढ़ जाती है, रोगाणुओं से लड़कर उन्हें परास्त करने के लिए लेकिन यह तनाव यदि एक सीमा से अधिक बढ़ जाए तो समस्या बन जाता है। परीक्षा की तैयारी करते समय अपने को तनाव-मुक्त रखने के लिए उपाय बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। आप भी उन पर अमल कर तनाव-मुक्त हो सकते हैं।

- तनाव-मुक्ति का पहला मंत्र है, 'बीति ताहि बिसार दे, आगे की सुध ले'। साल भर मैंने ठीक से पढ़ाई क्यों नहीं की, यह सोच-सोचकर पछतावा बिल्कुल बेकार है और यही तनाव का प्रमुख कारण भी है। अब जो समय बचा है, इसमें सभी विषयों के पूरे पाठ्यक्रम को कैसे विभाजित किया जाए, इस बारे में सोचें और उसके अनुसार समय-तालिका बनाकर अपने पढ़ने की मेज के सामने लगा लें। यह तालिका केवल लगाएँ ही नहीं, बल्कि उसका



दृढ़ता से पालन भी करें। जैसे-जैसे आप इस तालिका के अनुसार पाठ्यक्रम की पुनरावृति करेंगे, वैसे-वैसे आपका खोया विश्वास वापस आता चला जाएगा।

- समय तालिका बनाते समय सभी विषयों को महत्व दें। किसी एक विषय को, खासकर जिसमें आप कमजोर हों। वैसे, बहुत ज्यादा ध्यान देने से समस्या कम होने की बजाए बढ़ जाती है, क्योंकि जब अन्य विषय उपेक्षित हो जाते हैं तो उनमें आपका प्रदर्शन पहले से भी निम्न स्तर का हो जाता है। इससे आत्मविश्वास में और अधिक कमी आ जाती है। इससे तनाव और बढ़ता है।
- कभी भी कई घंटों तक लगातार न पढ़े। अपनी क्षमता के अनुसार एक या दो घंटे पढ़ने के बाद आँखें बंद करके उसको हल्का-हल्का सहलाएँ। साथ ही, आप अपना पसंदीदा संगीत भी सुन सकते हैं। आँखों पर ठंडे पानी के छीटें डालने से आँखों की मांसपेशियों को राहत मिलती है।
- बाधा डालने वाले तत्वों से बचें। जैसे ज्यादा शोरगुल, बार-बार मित्रों या सहपाठियों से फोन पर बातचीत। 'तुमने क्या-क्या पढ़ लिया ? मैंने तो यह-यह पढ़ लिया।' जैसी बातों से बचें।
- अपनी क्षमता और सीमा को पहचानें और 'ना' कहना सीखें, क्योंकि आपके मित्र या सम्बन्धी लुभावने प्रस्ताव रखकर आपका मूल्यवान समय बर्बाद कर सकते हैं।
- पढ़ाई के साथ-साथ हँसी-मजाक, मनोरंजन के लिए थोड़ा समय जरूर निकालें। अपने परिवार के सदस्यों के साथ हल्की-फुल्की बातें करके आप खुद को हल्का महसूस करेंगे। मौज-मस्ती के लिए थोड़ा समय अवश्य निकालें, पर अपनी सीमा न भूलें।
- यह कभी मत भूलिए कि शारीरिक श्रम मानसिक श्रम का पूरक होता है। योग की कुछ क्रियाएँ, स्वच्छ हवा में प्रातः भ्रमण, हल्का व्यायाम, फुटबॉल जैसे खेल न केवल आपके शरीर को स्फूर्तिवान बना सकते हैं, बल्कि आपके मस्तिष्क को ताजगी भी देते हैं।
- अपने खाने-पीने और सोने पर ध्यान दें। स्वाद की बजाए पौष्टिकता

उपेक्षा नहीं की हे तो प्रभु मेरी रक्षा जरूर करेंगे। भीम, अर्जुन, द्रौपदी सब चिंता कर रहे हैं कि इन सबको भोजन कैसे कराएँगे। द्रौपदी भी सोचती है कि अब अक्षयपात्र भी काम नहीं आ सकता क्योंकि मैंने भी भोजन कर लिया है। द्रौपदी दुखी हो रही है कि भोजन न मिलने पर दुर्वासा क्रोधित होकर श्राप देंगे और मेरे पाण्डवों का नाश हो जाएगा। द्रौपदी ने दुखी होकर प्रभु को पुकारा। भगवान का सिंहासन डोलने लगा। एक ओर रुक्मणि जी भोजन थाल लेकर भगवान को भोग लगा रही हैं, दूसरी ओर द्रौपदी आर्तनाद कर रही है। कृष्ण ने वहाँ जाने की सोची तो रुक्मणि जी बोली कि पहले भोजन कर लीजिए तो भगवान ने कहा दस हजार ब्राह्मणों को भोजन द्रौपदी वन में कैसे कराएगी, मैं तो चला। भोजन मैं भी वहीं कर लूँगा। द्वारकानाथ दौड़ते हुए द्रौपदी की उस कुटिया में आए जहाँ वह बड़ी तन्मयता से प्रार्थना कर रही थी। भगवान वहीं प्रगट हुए। प्रिय साथियों भगवान का कीर्तन इस तन्मयता से करो कि भगवान बाहों में लेकर तुमसे कहें कि आँखें खोलों मैं आ गया हूँ।

भगवान ने द्रौपदी से कहा कि देख मैं आ गया हूँ मुझे बड़ी भूख लगी है मुझे कुछ खाने को दे। द्रौपदी ने कहा नाथ हमारे घर में कुछ नहीं है। दस हजार ब्राह्मणों को भोजन कराना है। भगवान ने कहा उन ब्राह्मणों का भोजन तो बाद में होगा पहले मेरे लिए खाने की कुछ बात कर। तू अपने भोजन से पहले मेरे लिए हमेशा कुछ-न-कुछ रख लेती है जो आज जो भी तूने रखा हो वह मुझे दे दे। द्रौपदी कहती है कि नाथ आज तो मैं भूल ही गई। आप के लिए कुछ भी नहीं रखा है। भगवान ने कहा अपना अक्षयपात्र दिखाओं शायद मेरे लिए उसमें कुछ हो। द्रौपदी ने प्रभु के हाथ में अक्षयपात्र रख दिया। उन्होंने देखा तो सब्जी का एक पत्ता उसमें रह गया था। प्रिय साथियों अक्षयपात्र में ये पत्ता कहाँ से आ सकता था। यह भगवान के प्रेम प्रयोग से पत्ता उत्पन्न हुआ है, उन्होंने ही इस पत्ते का भोग लगाया! भगवान को हम प्रेम से जो कुछ भी देते हैं, उन्हें उससे बहुत तृप्ति होती है, उसी तृप्ति से वह हमें तृप्त करते हैं। भगवान को प्रतिदिन भोग लगाओ। किसी दिन भी वह इसे ग्रहण करेंगे तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जाएगा। थोड़ा सा भगवान को भोजन कराने का फल सारे जगत को भोजन कराने के



बराबर है। आज एक पत्ते के भोग से सभी जीव तृप्त हो गए भगवान, दुर्वासा और अन्य दस हजार सन्त। भीम गंगा से सन्तों को बुलाने गया तो वहाँ वे तृप्ति की डकार ले रहे थे। दुर्वासा ने सोचा यह काम कृष्ण का ही हो सकता है। उन्होंने भीम से पूछा कि कहीं द्वारका से कृष्ण तो नहीं आए हैं। भीम ने कहा वह तो कब के आए हुए है और द्रौपदी से बातचीत कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि दुर्वासा मेरे गुरू हैं आज मैं प्रेम से उनको भोजन कराना चाहता हूँ। दुर्वासा ने कहा कि कृष्ण को मुझे भोजन कराने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारा संयम, सदाचार, धर्म पालन, कृष्ण भक्ति, कृष्ण प्रेम देखकर मुझे बिना भोजन किए ही तृप्ति हो गईं है मैं सन्तुष्ट हूँ मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारी ( पाण्डवों ) विजय होगी और कौरवों का विनाश होगा। सो भईया सेवा दुर्योधन ने की और आशीर्वाद पाण्डवों को मिला।

तो साथियों जो जाकि शरणै बसे ताको ताकी लाज। उल्टे जल मछली चढ़े बहे जात गजराज॥ भगवान श्री कल्कि का नाम जाप कीर्तन हवन असंभव को भी संभव कर देता है। और छुपी अलौकिक लीलाएं दिखाता है।

भगवान श्री कल्कि के महामंत्र की माला करें और उसका फल उन्हें ही अर्पण कर दे। घर में जो आमदनी आप के पति-पुत्र लाकर दें सर्वप्रथम उसमें से हींग के छौंक की भाँति 51 रु. या 101 रु. जो बन पड़े निकालकर सर्वप्रथम उसे भगवान के आगे रखकर धर्म कार्य के लिए एक डिब्बे में रख लें। इसे सत्कर्मों में लगाये जैसे ( मन्दिरों में आटा, नमक, चीनी देना आदि ) हवन, ब्राह्मणों को अन्नदान, भोजन कराना, दक्षिणा, कल्किजी के मन्दिरों में रुपयों का सदुपयोग करना इससे घर में बरक्कत बनी रहेगी। भगवान को नमस्कार, उनका जाप, हवन, पूजा करने से घर में भक्ति का वास होगा और इस अविश्वास के युग में दुर्गम, बीहड़, दुष्कर विषैले समाज के चौराहे को सफलता से पार किया जा सकेगा।

महाविष्णु के अन्तिम चौबीसवें अवतार, भगवान श्री कल्कि के स्वरूप व गुणों को बालकों, भक्तों, अन्य सज्जनों और सन्त समाज तक पहुँचाना कल्कि भक्तों का ध्येय है। सन् 1967 में श्री कल्कि विष्णु मन्दिर की स्थापना

(रात को दिन बना दिया) (दिन को रात बना दिया)

मोक्ष की पढ़ाई अर्थात् इसके साथ पारिवारिक ( पुरखों ) के संस्कार जुड़े होंगे फिर वह बालक व बालिकाएँ चौतरफा विवेकानन्द की तरह उन्नति करेंगे। इतिहास साक्षी है कि बालक व बालिकाओं के चरित्र निर्माण में माता व गुरु का भारी योगदान रहा है। शिवाजी मराठा का चरित्र निर्माण उनकी माता जीजाबाई ने पूना में किया जबकि उनके पति शाहजी दूसरे मुस्लिम राज्य की जागीर में जागीदारी थे। शाहजी समझते थे कि मुगलें से टक्कर लेना असंभव है लेकिन शिवाजी मराठा के कारनामों को देखते हुए उन्होंने कहा, 'जीजा, तूने वह काम कर दिखाया है कि तू अमर हो गई और इतिहास तुझे कभी नहीं भुला पाएगा।' ऐसे में आप अपने धर्म का पालन और देवी-देवताओं की पूजा नियमपूर्वक करें और बच्चों से करायें। भक्त ध्रुव साढ़े पाँच वर्ष की आयु में भगवान के दर्शन करने पर भगवान की प्रशंसा में कुछ कहना चाह रहे थे। भगवान ने उनके भाव समझ कर अपना शंख उनके गाल से छुआया ही था कि सरस्वतीजी का वास उनमें हो गया और उन्होंने संस्कृत में भगवान की जो स्तुति की है आज के स्नातक भी उसका अनुवाद सरलता से नहीं कर पाते। अतः बच्चों को भगवान श्री कल्कि की पूजा नाम जाप के साथ-साथ सरस्वतीजी के महामंत्र ॐ ऐम ॐ की एक माला प्रतिदिन कराएँ। ध्यान रहे भगवान श्री कल्कि जो विष्णुजी के अवतार हैं, के हाथ में जो शंख है उसमें सरस्वतीजी वास करती है।

आज हम ऐसी विस्फोटक स्थिति में आ गए कि करें तो क्या करें। न



गुरुकुल है, न अन्य ऐसी संस्थाएँ नजर आ रही है जहाँ बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करके अपने धर्म के संस्कार बनाए रखें। सामान्यतः पहले जिसके पास लक्ष्मी होती थी उसके पास ज्ञान का अभाव होता था और जिसके पास ज्ञान ( विद्वान ) होता था उसके पास धन का अभाव होता था। अंग्रेजियत का ऐसा असर आ गया कि लगने लगा मानों लक्ष्मी और सरस्वती दोनों एक जगह आ गई हों। शुरू से अन्त तक बच्चों को अंग्रेजी की शिक्षा दिलाने में अब भरपूर पैसा खर्च करना पड़ रहा है, क्योंकि तभी बच्चे आगे चलकर ऊँचे ओहदे, नौकरियाँ पा सकते हैं अथवा अपना व्यापार स्थापित कर सकते हैं। बिना पढ़े-लिखों के लिए तो ऐसा लगता है कि बेलदार की नौकरियाँ भी मुश्किल से मिलेंगी ओर उन्हें छोटी-मोटी दुकान खोलकर अथवा साईकिल स्कूटर पर सामान लाद कर जगह-जगह बेचकर अपने परिवार का जीवन-निर्वाह करना पड़ेगा। सब जगह पढ़ाई-लिखाई की इतनी ज्यादा आवश्यकता पड़ने लगी है कि अनपढ़ आदमी का किसी जगह भी टिकना मुश्किल हो गया है। वह तो पता नहीं कब किस चक्कर में आ जाए कि जो उसने इस जीवन में कमाया वह मिनटों में बिना पढ़े-लिखे ही अंगूठा लगा के खो बैठे। शाम होने लगती है तो पक्षी अपने घोंसलों की तरफ जाने लगते हैं। सूर्य ग्रहण में भी पक्षी शाम की तरह अपने घोंसलों की तरफ जाने लगते हैं। पहले हमारे यहाँ यह आम कहावत थी, दीपक जले, मर्द घर भले। हमारे मस्तिष्क में दोनों कानों के बीच पिनल ग्लैंड से एक महत्वपूर्ण मेलाटोनिक हारमोन निकलता है। जिसे नींद का हारमोन कहते हैं। इसी के प्रभाव से हम रात भर सोते हैं और दिन भर भाग दौड़ करते हैं। यह ग्लैंड ग्रन्थि हमारी आँखों से जुड़ी होती है। जैसे-जैसे शाम शुरू होती है, इसका बहाव शुरू-शुरू होता है और जब रात को हम सोने लगते हैं तो यह हारमोन सक्रिय होकर हमारे रक्त प्रवाह में मिल जाता है। इसी के कारण रक्त चाप ( ब्लड प्रेशर ) व शरीर का तापमान कम हो जाता है। सुबह ( रोशनी ) होते ही यह क्रिया स्वयं समाप्त हो जाती है। वैज्ञानिकों का तो यहाँ तक कहना है कि इसमें चिर युवा रहने का रहस्य छुपा है। इसमें त्वचा को झुर्रियों से बचाने, ऊपरी सतह पर होने वाले परिवर्तनों व मृत कोशिकाओं के प्रभाव से लड़ने के लिए नींद वाला

दुःखी होता है, वे ही लोग शोक, दुःख, भय, उद्वेग ( क्रोध आदि ), बुढ़ापे और मृत्यु का कष्ट अनुभव करते हैं। मैं भगवान् विष्णु का यह वचन सुन कर जैसे ही इसका उत्तर देने को तैयार हुआ, वैसे ही वे अन्तर्धान हो गए और मेरी नींद टूट गई। हे राजागण! फिर मैं अचम्भे में पड़ गया और अपनी पत्नी के साथ उस पुरिका नगरी को छोड़ कर पुरुषोत्तम नामके श्री विष्णु भगवान् के स्थान पर आया।

मैं उसी पुरुषोत्तम नामक स्थान के दक्षिण भाग में सुन्दर आश्रम बनाकर अपनी पत्नी और सेवकों के साथ विष्णु भगवान् की सेवा करने लगा। मैं भगवान् विष्णु के उस वास स्थान में रहकर उनकी माया देखने की इच्छा से यमराज के भय को नाश करने वाले भगवान् विष्णु का ध्यान नाचकर, गाकर तथा जपकर करने लगा। इसी प्रकार बारह वर्ष व्यतीत होने पर, व्रत की समाप्ति के दिन द्वादशी को, मैं अपने बन्धुओं के साथ स्नान करने की इच्छा से समुद्र-तट पर गया।

इसके उपरान्त, मैंने ज्योंही समुद्र में गोता मारा त्योंही भयानक चंचल लहरों से परेशान होने पर, मैंने अपने को उठने में समर्थ नहीं पाया। समुद्र के जानवर जैसे मच्छ आदि मुझे चुभने लगे यानी वे मुझे चोट पहुँचाने लगे। मैं कभी उतरानें ( उछलने ) लगा, ( तो कभी ) डूबने लगा जिससे मेरा चित्त व्याकुल हो गया और मैं पानी की लहरों ( के थपेड़ों ) से चेतनाहीन ( बेहोश-सा ) हो गया। मेरे अंग शिथिल ( ढीले ) पड़ गए। इसके बाद हवा के झोंके से बहता हुआ मैं समुद्र के दक्षिणी-तट आ लगा। ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वृद्धशर्मा नाम के एक ब्राह्मण मुझे वहां पड़ा देखकर, संध्या-उपासना करने के बाद अपने घर ले आए। धर्मात्मा, पुत्र-स्त्री वाले और धनवान वृद्धशर्मा मुझे स्वस्थ बना के पुत्र के समान मेरा पालन-पोषण करने लगे। हे राजागण! उस स्थान में मुझ दिशाओं का ज्ञान भी न रहा और अत्यन्त बेबस हो गया। मैंने उस ब्राह्मण दम्पत्ती ( स्त्री व पति ) को अपना माता-पिता समझ कर वहीं रहना शुरू कर दिया।

उस ब्राह्मण ने मुझे अनेक तरह से वेद में बताये गए धर्म का पालन करने वाला जान कर, नम्रतापूर्वक अपनी कन्या का विवाह मुझसे कर दिया। ब्राह्मण की कन्या का नाम चारुमति था। उस रूप, गुण से युक्त,



तपाए हुए सोने के समान रंग वाली, मानिनी ( जिसे अपने रूप पर घमंड हो ) स्त्री को पाकर मैं अत्यन्त विस्मित हुआ यानी अचम्भे व खुशी से भर गया। चारुमति ने मुझे हर तरह से सन्तुष्ट किया। मैंने तरह-तरह के भोग और सुखों का आनन्द उठाया। समय पर मेरे पाँच पुत्र और मेरा सुख बढ़ता गया।

मेरे पाँचों पुत्रों के नाम थे—जय, विजय, कमल, विमल और बुध। मैं पुत्र और आत्मीय ( अपने ) लोगों से युक्त, तरह-तरह के धन का स्वामी बन गया और स्वर्ग में देवताओं के राजा इन्द्र की भाँति प्रसिद्ध और पूज्य हो गया। मैं अपने पुत्र के अभ्युदय ( उन्नति या सफलता ) की इच्छा से पितृ तर्पण, देव तर्पण तथा ऋषि तर्पण करने के लिए बड़े आदर से समुद्र तट पर गया। स्नान तर्पण के बाद मैं जल्दी ही पानी से निकल कर तट की ओर जाने लगा तो देखा कि मेरे पहले के आश्रम के भाई-बन्धु स्नान और संध्यादि करके आ रहे हैं।

यह देखकर मैं बहुत ही बेचैन हो गया। हे राजागण! पुरुषोत्तम् नगर के निवासी ब्राह्मणों को भगवान् ! विष्णु की सेवा और द्वादशी व्रत की समाप्ति के लिए तैयार देखकर मेरे चित्त में अत्याधिक अचरज हुआ। मेरे रूप और मेरी अवस्था में पहले से कुछ भी बदलाव नहीं आया था। मैं स्नेह और मोहजाल में पड़कर लाचार हो गया परंतु मुझे हरि के माया-जाल में पड़ा हुआ किसी ने न जाना।

इस तरह स्त्री, धनागार ( धन का कोष ) और पुत्र के विवाहादि विषय में मेरा मन अत्यधिक डूबा होने के कारण बहुत ही दुःखी रहने लगा। ( मैं सोचने लगा कि ) मैं 'अनन्त' कौन हूँ।( परन्तु ) कुछ भी न समझ सका और सब विषय मुझे स्वप्न से मालूम हुए।

कर कल्किजी पर बार-बार वार करने लगे। कल्किजी ने क्रोधित होकर बाणों द्वारा उन दोनों के ही सिर काट डाले। दोनों के सिर फिर धड़ से जुड़ गए। कल्किजी यह देखकर बहुत चिन्ता में पड़ गए। इसके बाद कल्किजी के घोड़े ने कोक और विकोक को वार करते हुए देखकर उनपर भारी चोट की।

यम के समान भयंकर दुर्धर्ष कोक और विकोक कल्किजी के घोड़े से बहुत घायल होने पर क्रोध युक्त हो लाल आँखों से उस ( घोड़े ) पर बाणों की वर्षा करने लगे। घोड़े ने क्रोधित होकर कोका और विकोक की बाहों को काट खाया। उनके बाहों की हड्डियाँ चकना चूर हो गईं। बाहें और धनुष छिन्न-भिन्न हो गए। इसके बाद, जेसे बच्चा गाय की पूँछ को पकड़ लेता है, उन्हें पूँछ पकड़े हुए देखकर घोड़ा बहुत क्रोधित हुआ और पिछले पाँवों से मजबूत वज्र के समान उन की छाती पर भारी चोट की।

पूँछ को छोड़कर कोक और विकोक दोनों ही मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़े, लेकिन तत्काल फिर उठ खड़े हुए और कल्किजी को सामने देखकर साफ-साफ शब्दों में लड़ाई के लिए ललकारा। इसी समय श्री ब्रह्माजी कल्किजी के समीप आकर हाथ जोड़कर धीरे से बोले—ये कोक और विकोक अस्त्र-शस्त्र से नहीं मारे जाएँगे। हे परमात्मन्। एक ही बारी में दोनों को थप्पड़ या घूंसा मार कर इनकी हत्या की जा सकती है। इन दोनों में एक के देखते हुए दूसरे की मृत्यु नहीं होगी। अतएव इस बात को याद रख कर आप एक ही बारी में दोनों का वध कीजिए।

ब्रह्माजी के ये वचन सुनकर कल्किजी ने अस्त्र-शस्त्र और सवारी छोड़कर मनमाना प्रहार करने वाले उन दोनों दानवों के बीच में आकर वज्र के समान दो मुट्ठियों के एक साथ वार से उन दोनों के मस्तक चकनाचूर कर दिए।

देवलोक स्थित देवताओं को डराने वाले और सभी प्राणियों का बुरा चाहने वाले वे दोनों दानव मस्तकों के चकनाचूर हो जाने के बाद भूमि पर पहाड़ की दो चोटियों की तरह ( या शिखर रहित दो पहाड़ों की तरह ) गिर पड़े। इस महान् अचरज भरे काम को देखकर गन्धर्वलोग गाने लगे। अप्सराँ नाचने लगीं। ( उन्होंने ) दुन्दुभियाँ बजाईं और सब दिशाएँ



हर्ष, उल्लास से गूँज उठीं। कोक और विकोक की मृत्यु देखकर कवि ( श्री कल्कि के भाई ) ने प्रसन्न और उत्साहित होकर अपने दिव्य अस्त्रों से रथ और अस्त्रों सहित दस हजार महारथी वीरों का नाश किया। इस प्रकार उन सब को जीतकर, कल्किजी सारी ( विशाल ) सेना लेकर राजाओं के साथ भल्लाटनगर को जीतने के लिए गए। अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे। उत्तम शस्त्रास्त्र धारण करने वाले वीर उनके साथ चले। अनेक प्रकार के वाहन ( सेना में ) आ गए। चारों ओर से ( कल्किजी पर ) चँवर ढुलाए जाने लगे। बुद्धिमान, श्रीमान् लम्बे-चौड़े शरीर वाले, महातेजवान, कृष्णभक्त, महाबलवान राजा शशिध्वज ( श्री कल्किजी के श्वसुर ) हर्ष से पुलकित हो गए।

# भगवान् श्री कल्कि एवं कुथोदरी का युद्ध

ऋषियों ने भगवान श्री कल्कि को राक्षस निकुंभ की लड़की कुथोदरी की कथा सुनाई कि हे! भगवान् कुथोदरी कालकुंज नामक राक्षस की पत्नी है। इसके पुत्र का नाम विकञ्ज है। इस राक्षसी का मस्तक हिमालय पर्वत और चरण जमीन पर है। निषाधा पर्वत पर वह अपने पुत्र को दुग्ध पान करा रही है। हम इस राक्षसी की साँसों से तंग आकर यहाँ आए हैं। हे प्रभु हमें राक्षसों से तथा विपत्तियों से बचाएँ, मुनियों की बात सुनकर भगवान् हिमालय की ओर गए और वहाँ एक रात बिताई। प्रातः ज्योहि उन्होंने यात्रा की इच्छा प्रकट की वहाँ उन्हें एक सफेद दूध की नदी दिखाई दी वह नदी बड़ी तेज बहाव वाली थी। कल्किजी के सभी सेवक उस दूध की नदी को देखकर अचंभे में पड़ गए। भगवान् कल्कि यद्यपि इसका कारण जानते थे, तथापि हाथी, घोड़े रथ, पैदल सेना के सभी योद्धाओं से घिरे हुए उन्होंने अन्जान बनकर महर्षियों से पूछा—''इस नदी का नाम क्या है? इसमें किस कारण दूध बहता है? ऋषियों ने कहा हे कल्किजी यह कुथोदरी नामक राक्षसी के स्तन का दूध इस हिमालय पर्वत से गिर कर नदी के रूप में बह रहा है तत्पश्चात् सातघड़ी के बाद एक और दूध की नदी दूसरे स्तन से बहेगी फिर यह नदी सारहीन होकर केवल किनारे रह जाएगी।''

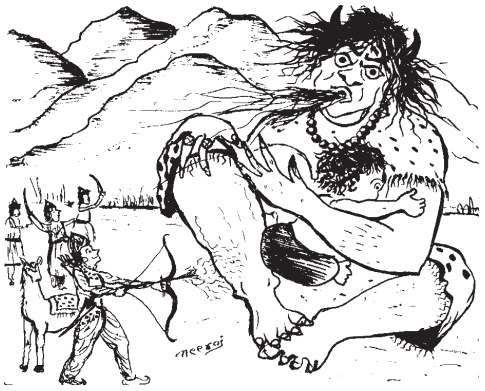

यह वचन सुनकर कल्किजी बोले कैसा आश्चर्य है उस राक्षसी के स्तन से इतनी बड़ी नदी निकली है एक स्तन से प्यार से विकञ्ज को दूध पिला रही है इसकी लम्बाई-चौड़ाई कितनी है यह जाना जा सकता है। मुनि लोग राक्षसी के रहने का रास्ता दिखाने लगे वहाँ उन्होंने देखा कि, उसकी साँस इतनी तेज थी कि उससे टकराकर जंगली हाथी दूर गिर रहे हैं।



उसके कान के छेद में सिंह समूह सो रहे हैं। उसके शरीर के रोम कूप ( जहाँ से बाल निकलते हैं ) इतने बड़े हैं कि हिरणों को गुफा होने का वहम हो गया है। उसमें हिरण और उनके बच्चे भी सो रहे हैं। पर्वत के शिखर पर वह राक्षसी ऐसी लग रही है मानों दूसरा कोई पर्वत हो। सब सैनिक बैचेन हो गए। उनकी अकल मारी गई है। ऐसे सैनिकों से कमल के समान नेत्र वाले कल्किजी बोले, घुड़सवार हमारे साथ आ जाएँ, मैं थोड़ी-सी सेना लेकर बाणों के समूह तलवारों तथा फरसे से मारने के लिए धीरे-धीरे इसके सामने जाता हूँ। कल्किजी यह कह कर सेना को पीछे रखकर बाणों से उस राक्षसी पर वार करने लगे। राक्षसी ने क्रोध में भरकर बड़ी अजीब सी आवाजें कीं। उन आवाजों से डर कर सारे सैनिक बेहोश होकर भूमि पर गिरने लगे। कुथोदरी भयानक मुँह खोलकर अपनी तेज साँस से रथ, हाथी, घोड़े आदि खींच कर हड़पने लगी। जिस तरह रीछ की तेज साँस से चीटियाँ उस के मुँह में घुसती चली जाती हैं, उसी तरह सेना सहित, कल्किजी ने उस राक्षसी के पेट में प्रवेश किया।

यह देखकर देवतागण और गन्धर्वगण हाहाकार करने लगे। देवताओं के शत्रुओं का नाश करने वाले कमल नयन कल्किजी ने इस प्रकार संसार को दुःखी देखकर स्वयं ही अपने को याद किया ( अथवा एक क्षण के लिए विचार )। इसके बाद कल्किजी ने उस ( राक्षसी के ) अन्धकारमय उदर में ( अग्नि ) बाण द्वारा आग प्रकट की और बाण से उत्पन्न उस अग्नि को कपड़े, चमड़े और रथ की लकड़ियों से धधका कर, फिर अपनी तलवार उठाई। जिस प्रकार देवताओं के राजा इन्द्र अपने वज्र द्वारा राक्षस की कोख में छेद कर बाहर हो गए थे, उसी प्रकार सबके ईश्वर, पापों का अंत करने वाले, कल्किजी उस बड़ी तलवार से राक्षसी की ( दाहिनी ) कोख को भेद कर बलवान् अस्त्र-शस्त्र धारण करने वाले बन्धु-बान्धवों के साथ बाहर निकल आए। बहुत-से हाथी, घोड़े, रथ के योद्धा, सवार और पैदल सिपाही उस राक्षसी की योनि-मार्ग से निकल पड़े और कई उस की नाक के छेदों से और कानों से बाहर निकल आए। इसके बाद खून से लथपथ योद्धागण बाहर निकल कर राक्षसी को हाथ-पाँव चलाते हुए देखकर उसी समय बाणों द्वारा उसे बींधने लगे। पेट, सिर आदि सारे अंगों के छिन्न-भिन्न होने

रहे थे। पंडिताईन कुलवंती मुस्कराते हुए उनके चरणों में झुक गई थी। पंडित जी ने उन्हें उठाते हुए कहा—''कुलवंती तुमने मेरी आँखें खोल दीं। सचमुच सही यही है, जो तुमने सोचा था। जो अभी मुखियाजी ने कहा। आज तुमने पंडित की पंडिताईन का हक अदा कर दिया।'' गाँव वालो को पंडिताईन आज बहुत ही अच्छी और भली लग रही थी।

भगवान श्री कृष्ण ने जब गोवर्धन पर्वत अपनी कनिका उँगली पर उठाया था तब उनके भाग्यशाली बाल-साखाओं ने अपनी छड़ी लगाकर, उनके चिरकालीन सखा बनने का गौरव प्राप्त किया और जन्म-जन्मान्तरों का संग लिखवा लिया। तो आओ बच्चों, सीमित समय में भगवान का कुछ ऐसा कार्य कर जाएं कि हर युग में, हर अवतार में, भगवान हमें अपने साथ रखें।

अब पछताय क्या होता है, जब चिड़िया चुग गई खेत।



# जब स्वयंवर में आए राजा स्त्री बने

—श्री कल्कि पुराण

सिंघल देश के राजा बृहद्रराज ( कल्कि भगवान के ससुर ) ने पद्मावती के विवाह के लिए गुणशील-वाले, तरुण-आयु वाले, रूपवान, विद्वान राजाओं को निमंत्रण दिए। सिंघल देश में पद्माजी के स्वयंवर के लिए अनेक प्रकार के मंगल आयोजन होने लगे, राजाओं के निवास के लिए उपयुक्त स्थान सुसज्जित किए गए, विवाह के लिए निश्चय करने वाले समस्त राजा, अपनी सेना सहित सिंघल देश पहुँचने लगे। विभिन्न माला और वस्त्रों को धारण कर गाने-बजाने में मस्त राजा लोग रंग-भूमि में पधारे। आदर सहित पूजे जाने पर वह अपने-अपने आसनों पर बैठी, राजागण को देखकर राजा बृहद्थ ने श्रेष्ठ वर का वरण करने वाली अपनी कन्या को ( स्वयंवर-स्थल ) बुलाया।

राजकुमारी पद्मावती धुँघरुओं और किंकिणी से संसार को मोह लेने वाले ध्वनि करती हुई, वहाँ पधारे हुए राजाओं के कुलों के बहुत से शील तथा गुणों को सुनती हुई, हंस जैसी चालवाली, रत्नों की माला हाथ में लिए हुए, सुन्दर अंगों को चलायमान करती हुई, कटाक्ष से देखती हुई, चंचल कुंडलों वाली, केशों के समूह के हिलने से गर्दन की अपूर्व शोभा दिखाने वाली, सुन्दर मुस्कान वाली, खिले हुए मुखवाली और दाँतों की चमकवाली, वेदी के समान मध्य अंग ( कमर ) में लाल और रेशमी वस्त्रों वाली, कोयल जैसी मीठे बोल वाली, ऐसी मन को मोहने वाली कामिनी को आया हुआ देखकर समस्त राजा कामदेव के वश में विह्वल-चित्त हो गए अर्थात् ठगे-से रह गए और उनके अस्त्र-शस्त्र आदि ( और वे स्वयं ) पृथ्वी पर गिरने लगे।

मुई बनी रही, पर कुछ दिनों बाद ही शेरनी बन गई।

पंडित मुरारी की सेवा में जो गाँव वाले दिन-रात लगे रहते थे, अब वो उनसे कटने लगे थे। कारण कि पंडिताईन कुलवंती के सामने कोई खड़ा होने की हिम्मत नहीं करता था। पंडिताईन थी कि हवा में लड़ लेती थी। यदि कोई गाँव वाला भूले-भटके उनके घर पर आ जाता, तो दूसरी बार जाने के लिए कान पकड़ता था। पंडित मुरारी भी पंडिताईन के तेवर से दुखी हो गए थे।

एक दिन की बात है। पंडित मुरारी ने प्रेम से कहा—''अरी भगवान! तू इतना लड़ाई-झगड़ा क्यों करती है। गाँव वालों ने तेरा क्या बिगाड़ा है? बेचारे हमेशा मेरी सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। अपनी इस आदत को सुधार। सबके साथ अच्छा व्यवहार करने की कसम खा।''

पंडित जी के तो दिल जाने पर बन आई थी। पता नहीं किस मुहूर्त में वो पंडिताईन को शिक्षा व ज्ञान देने लगे थे। पंडिताईन गुस्से से तिलमिला उठी। फिर बिफर कर बोली—''जाओ जी, खेत पर काम करो। यह पूजा-पाठ करके के जीवन नहीं चलने वाला है। तुम्हें पूजा-पाठ के बदले गाँव वाले क्या देते हैं? बस दो मुट्ठी चावल और गेहूँ। क्या इससे हमारा कष्ट दूर हो जाएगा? जीवन के लिए और बहुत कुछ चाहिए! गाँव की औरतें जब रंग-बिरंगी साड़ियाँ पहनकर निकलती हैं, तो मेरा जी जल उठता है। मैं भी चाहती हूँ कि उनकी तरह रंग-बिरंगी साड़ियाँ पहनूँ और यह पंडिताई से पूरा नहीं होगा। अतः मेरी मानो, तो मेरे मायके चले जाओ। बाबूजी से एक भैंस ले आओ। उसके बाद हम दूध बेचने का धँधा शुरू करेंगे। फिर



देखना हमारे आँगन में लक्ष्मी कैसे ता-ता थइया करती हैं?''

पंडिताईन की बात सुनकर तो पंडित जी का दिमाग घूम गया। उन्होंने कहा—''पंडिताईन, तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है? मैं पूजा-पाठ करके सरल जीवन बिताने वाला पंडित, अब दूध का धँधा करूंगा? नहीं यह बिल्कुल नहीं हो सकता है।''

पंडिताईन उठ खड़ी हुई। उनके तेवर देखकर पंडित मुरारी को पसीना आ गया। पंडिताईन कुलवंती ने कहा—''अजी क्या बकते हो? खेत पर काम तुम नहीं करना चाहते हो। भैंस रखना तुम नहीं चाहते हो। जाओ तैयार होकर मेरे घर चले जाओ। बाबू जी अवश्य भैंस दे देंगे।'' इतना सुनकर पंडित मुरारी को गर्मी लगने लगी।

पंडिताईन के सामने पंडित जी की एक न चली। आखिर में उन्हें अपनी ससुराल जाकर भैंस लानी ही पड़ी। भैस को देखने गाँव के सभी लोग आए। कारण कि गाँव में किसी के पास भैंस नहीं थी। हाँ गाय एक-दो लोगों के यहाँ अवश्य थी।

अब तो पंडित जी की दिनचर्या ही बदल गई थी। सुबह पूजा-अर्चना के बाद वो भैंस की सेवा में भिड़ जाते थे। भैंस को सुबह ही सुबह नहलाना, उसको चारा देना, उसके बाद पंडिताईन के सामने ले जाकर भैंस को बाँधना। इतना सब होने के बाद पंडिताईन दूध निकालती थी। दूध निकालने के बाद पंडिताईन एक बड़ी-सी बाल्टी पंडित मुरारी को पकड़ा देती थी। पंडितजी बेचारे असहाय होकर दूध से भरी बाल्टी लेकर गाँव में निकल जाते थे। घर-घर जाकर दूध बेचते थे। जहाँ वो पंडित बनकर पूजा-पाठ करने जाते थे, वहाँ अब बन गए थे निरे दूधवाले। पंडितजी की दशा पर लोगों को दुख भी होता था और हँसी भी आती थी।

पंडिताईन का धंधा चल निकला था। चार पैंसों की आमदनी होने लगी थी। एक भैंस से पंडिताईन ने दो भैंसे कर ली थीं। अब तो पंडितजी की खटिया खड़ी हो गई थी। अब तो उन्हें दोनों भैंसों की सेवा करनी पड़ती थी। थोड़ा बहुत सुबह जो पंडितजी पूजा-अर्चना के लिए समय निकालते थे, अब वह भी नहीं मिल पाता था। अब सिर्फ वो अगरबत्ती और हाथ जोड़ने तक ही रह गए थे। पंडिताईन थी कि उनकी फरियाद पर

# मिरगी और मोटापे के बीज भी हैं टी.वी. में

बहुत नजदीक से या लगातार देर तक टेलीविजन देखने से बच्चों को मिरगी और मोटापा जैसे शारीरिक और मानसिक विकार पैदा हो सकते हैं। देर-देर तक टेलीविजन देखने वाले बच्चे मिरगी, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, तनाव और अवसाद जेसी मानसिक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं।

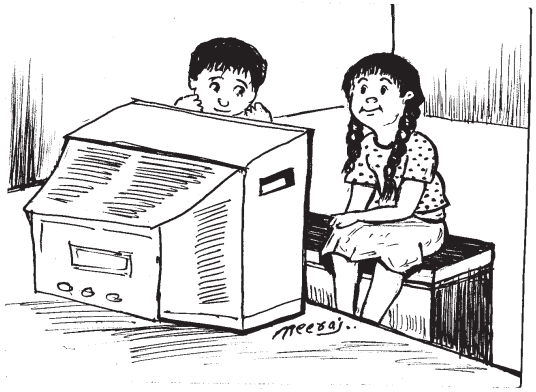

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले दृश्य बच्चों के अवचेतन में गहराई से बैठ जाते हैं और इसका असर किसी भी समय हो सकता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार टेलीविजन का सर्वाधिक दुष्प्रभाव बच्चों पर पड़ता है क्योंकि वे तर्क-वितर्क किए बिना टेलीविजन के संदेशों और दृश्यों को सही मान बैठते हैं और उनकी नकल करते हैं।

एक अनुमान के अनुसार दिल्ली में बच्चे सप्ताह भर में औसतन 17 घंटे टेलीविजन देखते हैं। ऐसे बच्चों की संख्या बहुत अधिक है जो घर में पढ़ाई, होमवर्क, खेलकूद, खाना और शौकिया कामों में जितना समय लगाते हैं उससे कहीं अधिक समय तक टेलीविजन के पर्दे से चिपके रहते हैं। इस अनुमान के अनुसार 8 साल का बच्चा अपने अगले 10 वर्षों के दौरान हर महीने करीब 68 घंटे टेलीविजन देखने में व्यतीत करेगा।

आस्ट्रेलिया के शोधकर्ताओं के अनुसार टेलीविजन से निकलने वाली खास किस्म की किरणें बच्चों के दिमाग की कार्यप्रणाली बंद कर देती हैं। बच्चों का दिमाग टेलीविजन विकिरण सहन नहीं कर पाता है और जब एक बार दिमाग सुन्न हो जाता है तो आँखें टेलीविजन पर्दे पर टिक जाती हैं। एक तरह से बच्चा टेलीविजन देखते हुए वशीकृत ( सम्मोहित )



हो जाता है। इसके बाद बच्चा टेलीविजन देखता रहता है, भले ही उस पर किसी भी तरह के कार्यक्रम क्यों न आ रहे हों।

यहाँ स्थित डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल के मनोरोग विभाग की अध्यक्ष डॉ. नीना बोहरा के अनुसार टेलीविजन देखते समय मस्तिष्क की प्रकाश संवेदी ( फोटो सेंसेटिव ) आणविक ( मोलिक्युलर ) स्तर में असामान्य परिवर्तन होने लगता है। इससे मस्तिष्क की ऊर्जा अव्यवस्थित हो जाती है और मस्तिष्क में असामान्य तरल पदार्थ बहने लगता है जो मिरगी का रूप धारण कर सकता है। ऐसी मिरगी को मनोप्रेरित ( साइकोमोटिव ) मिरगी कहते हैं।

डॉ. बोहरा ने बताया कि ऐसी मिरगी का आसानी से पता नहीं लगाया जा सकता। क्योंकि इससे मुँह से झाग नहीं निकलता। इसका इलाज संभव है लेकिन लोग यह समझ नहीं पाते कि यह मिरगी है और इस कारण समय पर इलाज नहीं कराते जिससे बाद में रोग गंभीर रूप धारण कर लेता है। डॉक्टरों के अनुसार मिरगी मस्तिष्क की एक प्रकार की अचेतना की अवस्था है जिसमें व्यक्ति कुछ समय के लिए चेतना शून्य हो जाता है।

अध्ययन के अनुसार भारत में 52 लाख मिरगी के रोगी हैं जिसमें से तीन लाख लोग लगातार टेलीविजन देखने से मिरगी के शिकार हुए हैं।

टेलीविजन में एक तरह का आकर्षण होता है और जो बच्चे लगातार टेलीविजन देखते हैं, उनको इसकी लत लग जाती है। अगर टेलीविजन देखने से उनको मना किया जाए या उनको टेलीविजन देखने को न मिले तो वे चिड़चिड़े और हिंसक हो जाते हैं।

टेलीविजन के बढ़ते चैनलों के कारण भी बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। पहले जब सिर्फ दूरदर्शन था, तब देर रात के कार्यक्रम ग्यारह बजे तक होते थे, लेकिन जब अनेकानेक चैनलों के आ जाने से टेलीविजन पर रात-रातभर कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं और बच्चे देर रात तक टेलीविजन देखते रहते हैं। इस कारण वे ठीक से नहीं सो पाते जिसका प्रभाव उनकी दैनिक जीवन प्रक्रिया पर पड़ता है। टेलीविजन देखने के चक्कर में बच्चे पढ़ाई तो क्या खाना-पीना

# भाग्य पर न छोड़ें, जुलाहे की तरह कर्म करें

पुरुषार्थी ( मेहनती ) मनुष्य को लक्ष्मी प्राप्त होती है। कायर और आलसी तो देवताओं को ही पुकारते रहते हैं मेहनत करने की कोशिश ही नहीं करते। वह यह नहीं जानते कि यदि मेहनत करने में सफलता नहीं मिली, तो हो सकता है कि उसमें कोई गलती रह गई हो जिसको हम दुबारा करें और सफल हो जाएं। कार्य उद्योग से सफल होता है, केवल मनोरथों से ( ख्याली पुलावो ) नहीं, सोते हुए सिंह के मुख में पशु नहीं घुसते अपनी शक्ति के अनुसार काम करते हुए भी उसका फल नहीं मिलता तो इसमें कर्त्ता की गलती नहीं है ना ही वह निंदनीय है। क्योंकि उसका यत्न संचित कर्म ( पिछले जन्मों के पापों ) ने नष्ट कर दिया है। जैसे किसी स्थान में अनेक प्रकार के वस्त्र बनाने में चतुर सोमलिक नाम का जुलाहा रहता था। वह तरह-तरह की बुनावट में राजाओं के योग्य मनोहर वस्त्र बुना करता था। फिर भी वह आवश्यक भोजन वस्त्र आदि से थोड़ा भी अधिक धन नहीं कमा पाता था और उसी गाँव में मामूली कपड़ा बनाने वाले छोटे-छोटे जुलाहे आर्थिक रूप ( धन और सोने ) से सम्पन्न थे। उसने अपनी पत्नी से कहा कि मेरे लिए यह स्थान ठीक नहीं है। मुझे इस स्थान पर लाभ नहीं होगा इसलिए मैं धन कमाने के लिए कहीं और जाऊँगा। उसकी पत्नी बोली ये बात सही नहीं है कि दूसरे स्थान पर जाने से तुम्हें धन की अधिक उपलब्धि हो जाएगी। उसने कहा कि हमारे पिछले जन्म के संचित पाप कर्म हैं जो अच्छा करने पर भी हमारे प्रयासों को नष्ट कर देते हैं। जुलाहे ने कहा ये ठीक नहीं है। जिस प्रकार एक हाथ से ताली नहीं बज सकती उसी प्रकार मेहनत से भाग्यफल भी बदला जा सकता है, इसलिए मैं अवश्य दूसरे देश में जाऊँगा। ऐसा निश्चय कर वह वर्धमानपुर गया, वहाँ तीन वर्ष रह कर

तीन सौ मोहरे ( सोने के सिक्के ) कमाकर अपने घर रवाना हुआ। अन्ततः जब आधी दूरी तक पहुँचा कि जंगल में भगवान् सूर्य अस्त हो गए। तब वह हिंसक जन्तुओं के भय से बड़ के एक मोटे तने पर चढ़ गया। आधी रात के समय उसने स्वप्न में भयंकर आकृति के दो पुरुष आपस में बात करते सुने उसमें से एक बोला हे कर्ते ( कर्म ) क्या तुम्हें ठीक-ठीक नहीं मालूम कि इस सोमलिक के भाग्य में खाने-पहनने से अधिक सम्पत्ति नहीं है। फिर क्यों तुमने इसे तीन सौ मोहरें दी ? उसने कहा हे भाग्य! ( कर्मों का इष्ट देव! ) मैं उद्यमी पुरुष को अवश्य दूँगा। उसकी स्थिति तुम जानो ( भाग्य ) उसके पास रहे या ना रहे तुम्हारे अधीन है। उसके बाद जब जुलाहा जागा और उसने अपनी मोहरों की गाँठ देखी तो उसे खाली पाया, तब वह भाग्य को कोसता हुआ सोचने लगा, यह क्या बात है ? बड़े कष्ट से कमाया हुआ धन चला गया, मेरे पास कुछ भी नहीं रहा, ऐसी दशा में मैं अपनी पत्नी और मित्रों को क्या मुख दिखाऊँगा यह निश्चय कर वह उसी नगर को फिर गया। वहाँ एक ही वर्ष में पाँच सौ मोहरे कमाकर फिर अपने घर को चला, फिर रास्ते में जंगल में सूर्यास्त हो गया, किन्तु धन नष्ट होने के भय से थकने पर भी उसने विश्राम नहीं किया, केवल घर जाने की लगन में जल्दी-जल्दी चलता रहा। परन्तु रास्ते में नींद आने पर उसे पूर्व की भाँति स्वप्न मे दो आदमी बातचीत करते हुए दिखाई दिए। एक बोला हे कर्ते! तूने इसे पाँच सौ मोहरे क्यों दीं ? खाने पहनने से अधिक इसके भाग्य में कुछ नहीं है। दूसरा बोला हे भाग्य! मुझे उद्यमी पुरुष को देना है। उसका फल तुम्हारे अधीन है मुझे क्यों दोष देते हो। यह सुनकर सोमलिक ने जब पोटली देखी तो उसे खाली पाया वह अत्यंत दुखी हो सोचने लगा मुझे निर्लज्ज होकर जीने से क्या लाभ ? इसलिए इस बड़ के पेड़ से लटककर फाँसी लगाकर प्राण छोड़ देता हूँ। सोमलिक ने फाँसी लगाने का निश्चय कर कुशा का फँदा बुना और शाखा में अपने को बाँधकर ज्यों ही फँदा खींचना चाहा त्यों ही आकाश में स्थित एक पुरुष ( भाग्य ) ने कहा हे सोमलिक ऐसा मत कर तेरा धन चुराने वाला मैं हूँ। मैं भोजन एवं वस्त्र से अधिक तेरे पास कौड़ी भी सहन नहीं कर सकता इसलिए अपने घर को चला जा।

सकती क्योंकि उपमा शब्द में खुद माँ है—उप 'माँ'। माँ के बिना उपमा की भी कोई उपमा नहीं माँ सिर्फ माँ है। पूरी दुनिया में दूसरी कोई वस्तु नहीं जिसकी उपमा माँ से दी जा सके। माँ केवल माँ है और ममता ही उसकी पहचान है। माँ का हृदय कठोर नहीं कोमल होता है, इसके लिए हम तुम्हें दो माताओं एवं एक शिशु की कथा सुनाते हैं।

एक राजा के दरबार में दो महिलाएँ पहुँचती हैं। वे दोनों महिलाएँ एक अबोध बच्चे पर अपना स्वामित्व जता रही हैं। दोनों महिलाओं का कहना था कि बच्चा मेरा है। बड़ी जटिल समस्या थी राजा के सामने। दोनों महिलाएँ राजा के सामने न्याय माँगने आई थीं। राजा बड़े धर्म संकट और दुविधा में था कि क्या किया जाए। बच्चा अबोध था। वह स्वयं अपनी माँ की पहचान करने में असमर्थ था। राजा को इंसाफ करना था। राजा ने कुछ सोचा और बोला—तुरन्त एक कसाई को बुलवाया जाए। कसाई को बुलवाया गया। राजा ने कसाई को आदेश दिया कि इस बच्चे के तलवार से दो टुकड़े कर दो और दोनों महिलाओं को एक-एक टुकड़ा दे दो। कसाई ने झट से तलवार निकाली और बच्चे के टुकड़े करने के लिए उसे आकाश में लहराया। पूरी सभा में सन्नाटा छा गया। राजा के इस इंसाफ के लिए एक महिला तैयार हो गई लेकिन दूसरी महिला चीख पड़ी और बोली। महाराज मैं झूठ बोल रही थी, यह बच्चा मेरा नहीं है इसी का है। आप इस बच्चे को इसी को दे दीजिए। यही इसकी माँ है।

सम्राट ने कसाई को तत्काल रुकने का इशारा किया और कहा कि यह नहीं बल्कि यह इसकी असली माँ है। क्योंकि जो असली माँ होगी वह कभी नहीं चाहेगी कि उसकी संतान के दो टुकड़े कर दिए जाएँ। माँ की ममता अपनी संतान को खंडित होते कभी नहीं देख सकती। ऐसी होती है माँ। और ऐसी ही है तुम्हारी माँ और तुम कैसे निकम्मे और कृतध्नी बेटे हो कि जिसने तुम्हें जीवन दिया तुम उसे ही भूल गए। पद और पैसा क्या मिल गया कि माँ को ही बिसरा दिया। कलर टी.वी. और कलर बीबी क्या मिल गई कि माँ को ही ठुकरा दिया। बाहर की चकाचौंध और जवानी का ऐसा नशा चढ़ा कि अपनी देवी तुल्य माँ को ही नजर-अंदाज कर दिया। अरे, आज तुम जो कुछ भी हो अपनी माँ की बदौलत हो। माँ के तुम पर बहुत



उपकार हैं। दुनिया में किसी के भी ऋण से तो मुक्त हुआ जा सकता है लेकिन माँ के ऋणों से उऋण होना मुमकिन नहीं है। जिस माँ ने तुम्हें देह दी है, खड़े होने की ऊर्जा दी है उसे तुम अपनी चमड़ी की जूतियाँ भी बनवाकर पहना दो तो भी उसके ऋण से मुक्त नहीं हुआ जा सकता।

आज हमने माँ के ऋण से आँख मूँद ली है और जो माँ के ऋण से आँख मूँद ले वह नपुंसक है, बुज़दिल है, कायर और कृतध्नी है। एक जमाने में माँ-बाप के दस-दस बारह-बारह बच्चे होते थे और वे माँ-बाप इन सबका पालन करते थे और आज चार-चार, छह-छह पुत्र मिलकर भी एक माँ-बाप का उदर पोषण नहीं कर पा रहे हैं, उनकी परवरिश नहीं कर पा रहे हैं—धिक्कार है ऐसी निकम्मी संतान को। बूढे माँ-बाप जब तक जिंदा रहते हैं, तो कभी प्रेम से उन्हें भोजन-पानी के लिए नहीं पूछते हो और जब मर जाते हैं तो उनके नाम पर पूरे समाज में पार्टी कराते हो—तो हम पूछते हैं तुम उनके बेटे हो या किसी जन्म के दुश्मन। माँ-बाप के मरने पर उनके 'फूल' चढ़ाने के लिए हरिद्वार जाओगे और जब वे जिंदा थे क्या तब तुमने उनके चरणों में श्रद्धा सुमन चढ़ाए? उनके चरणों में फूल अर्पित किए आज माँ-बाप मर गए तो उनके लिए सारे समाज के सामने आँसू बहा रहे हो लेकिन तुमने माँ-बाप के जीते जी उनके आँसुओं की कद्र कितनी की अरे माँ-बाप का जीवन में क्या महत्व होता है यह उनसे जाकर पूछो जिनके माँ-बाप इस दुनिया में नहीं है, कल जब तुम्हारे माँ-बाप इस दुनिया में नहीं रहेंगे तब तुम्हें उनकी कमी खलेगी और उनका महत्व समझ में आएगा। फिर तुम उनके लिए आँसू बहाओगे मगर तब तक समय तुम्हारे हाथ से निकल चुका होगा। अब भी समय है। देवता तुल्य माता-पिता की सेवा शुश्रुषा, उनका आशीर्वाद और उनके अनुभवों का पूरा लाभ उठा लो, अरे, आखिर वे अब और कितने साल जिएँगे। थोड़ी-सी ही तो उनकी जिन्दगी शेष है। बुढ़ापे में तुम्हीं तो उनकी एक मात्र आशाओं के केंद्र हो, बुढ़ापे का सहारा हो, हाथ की लाठी हो।

माँ का प्यार दुनिया में अनोखा प्यार है। माँ बच्चे को नहलाती-धुलाती है, साफ-स्वच्छ कपड़े पहनाती है और फिर एक गाल पर 'काला-टीका' भी लगा देती है, यह भी माँ का प्यार है। माँ अपनी संतान को पहले

पहुँच गए। उन्होंने दूर से ही अपनी माँ को सावधान करते हुए कहा—इन पाँसों से मत खेलिए। इनमें एक में विष्णु स्वयं विद्यमान हैं। वो अवश्य आपके साथ छल करेंगे।

गणेश की बात सुनकर पार्वती अत्यन्त क्रुद्ध हो गयीं। शंकर के जीतने का रहस्य भी उनकी समझ में आ गया। उधर गणेश की बात सुनते ही विष्णु भी घबराकर अपने असली रूप में आ गए। कार्तिकेय और नारद भी अनिष्ट की आशंका से भयभीत हो गए।

क्रुद्ध पार्वती ने विष्णु को श्राप दिया—एक अबला के साथ छल करने का दंड आपको अवश्य मिलेगा। वह दण्ड यह होगा कि आपकी पत्नी का अपहरण आपके शत्रु द्वारा होगा और आपको लम्बे समय तक पत्नी का वियोग सहन करना पड़ेगा। नारद को पार्वती ने श्राप दिया कि उन्हें स्वप्न में भी किसी महिला का साथ प्राप्त नहीं हो सकेगा तथा कार्तिकेय को श्राप दिया कि वो न कभी युवा होंगे और न कभी वृद्ध हमेशा बालक ही बने रहेंगे।

शंकर भी श्राप से नहीं बच सके। उन्हें पार्वती ने श्राप दिया—आपका मस्तक हमेशा एक महिला के बोझ से दबा रहेगा।

कुछ देर तक सभी शांत खड़े रहे। इसके बाद जब पार्वती का क्रोध कम हुआ तो शंकर ने पूछा—पार्वती! अब तो बात समझ गयी होंगी कि जुआ खेलना कितना हानिकारक होता है! इसी ने हम सबकी बुद्धि हर ली और हमें विभिन्न प्रकार के कष्ट दिए। शंकर के इन शब्दों को सुनकर पार्वती को लगा जैसे वह होश में आ गयी हों। उन्हें पिछली सभी बातें स्मरण हो आयीं। उन्हें अपनी भूल का भी ज्ञान हुआ। लेकिन अब हो ही क्या सकता था? जुए का दुष्परिणाम तो भोगना ही था।

# धीरज रखें घबराए नहीं

विपत्ति में ही मनुष्य के धैर्य और पौरुष की परीक्षा होती है। विपत्ति आने पर घबराए नहीं उसे उपाय व परिश्रम से दूर कीजिए आप जरूर ही उस विपत्ति पर काबू पा लेंगे। इस पर आधारित एक लघु कथा—एक बार यमराज ने मृत्यु को बुलाकर एक हजार आदमी मार लाने का आदेश दिया। आज्ञा का पालन कर जब मृत्यु लौटी तो उसके साथ एक हजार के बजाय तीन हजार मृतात्मायें थीं।

यमराज ने कुपित होकर कहा, यह तुमने क्या किया? मैंने तो एक हजार के लिए कहा था। तुमने आदेश का उल्लंघन क्यों किया? महाराज, मैंने आपकी आज्ञा का अक्षरक्ष—पालन किया है, तो फिर, यह कैसे हुआ, मृत्यु ने हाथ जोड़कर क्षमा याचना करते हुए कहा, देव हमने तो एक हजार को ही मौत के घाट उतारा है। शेष तो डर के मारे स्वयं मरकर साथ हो लिए है। वस्तुतः होता यही है, वास्तविक विपत्ति से जितनी हानि होती है उसकी तुलना में कई गुना हानि लोग कर लेते हैं भय, आशंका, चिन्ता, निराशा आदि की उद्विग्नता से दुःखी होकर लोग अपना सन्तुलन गवाँ बैठते हैं और इस आपाधापी से शरीर एवम् मन के तनाव के शिकार होने के साथ-साथ अपने हाथों के नीचे के कर्मों को भी अस्त-व्यस्त कर बैठते हैं। इसके विपरीत यदि धैर्य, साहस और सन्तुलन कायम रखा जा सके तो वास्तविक विपत्ति से निपटने के लिए विवेक युक्त उपाय सोचे जा सकते हैं, एवम अनावश्यक हानियों से बचा जा सकता है।

हमारी राय—विपत्ति के समय ही मनुष्य के धैर्य और पौरुष की परीक्षा होती है। उपाय एवम् परिश्रम से सिर आयी विपत्ति जल्दी ही टल जाती है। इसलिए विपत्ति से घबरा कर निराशा का आश्रय कभी मत लीजिए।

# जुआ किसी का न हुआ

वह कार्तिक मास की प्रतिपदा का दिन था। शंकर और पार्वती प्रसन्नचित्त कैलाश पर्वत पर भ्रमण कर रहे थे। इधर-उधर की बातें हो रही थीं। अचानक ही जुए की चर्चा चल पड़ी। शंकर ने जुए की कठोर शब्दों में निन्दा की तो पार्वती ने उत्सुकता से पूछा—प्रभु! यदि जुआ सचमुच ही निन्दनीय है, तो विधाता ने सृष्टि में जुए को बनाया ही क्यों है?

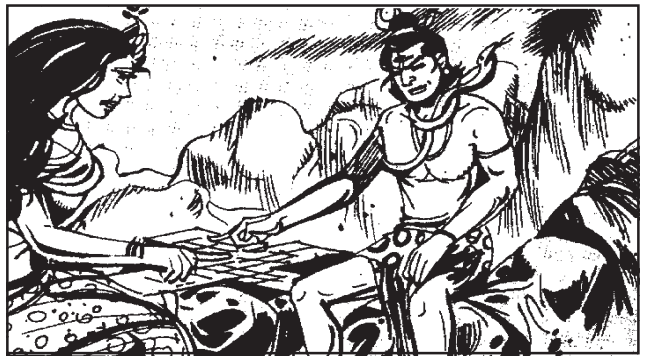

शंकर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—देवी! मनुष्यों की संपूर्ण बुद्धि को नष्ट करके उसे कष्ट देने के लिए जुए को बनाया गया है।

शंकर के इस उत्तर से पार्वती सन्तुष्ट नहीं हो सकीं। बोली—प्रभु। ऐसा सबके साथ तो नहीं हो सकता। यदि हम दोनों जुआ खेलें तो क्या हमें भी कष्ट भोगने होंगे?

यह तो निश्चित है देवी। शंकर ने तत्काल उत्तर दिया—बुरे कार्य का फल अच्छा हो नहीं सकता।

पार्वती ने क्षणभर के लिए कुछ सोचा। फिर बोली—मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ स्वामी। केवल जुआ खेलने में हमें कौन और किस प्रकार कष्ट दे सकता है? मेरा आपसे अनुरोध है कि आज आप मेरे साथ जुआ खेंले और तब मैं देखूँगी कि क्या सचमुच ऐसा हो सकता है।

शंकर ने पार्वती को सभी प्रकार से समझाने का प्रयत्न किया, लेकिन वो अपनी जिद पर अटल रहीं। विवश होकर शंकर को भी जुए के लिए अपनी सहमति देनी पड़ी।



सेवकों को आदेश दिया गया और जुए की तत्काल व्यवस्था हो गई। चौरस बिछ गई और पाँसे दिए गए। शंकर और पार्वती जुआ खेलने लगे।

लम्बे समय तक खेल चलता रहा। प्रारंभ में कुछ समय तक शंकर जीतते रहे, बाद में संयोग ऐसा बना कि शंकर हारने लगे और फिर लगातार हारते ही रहे। शंकर अपना सब कुछ जुए में हार गए और तब वो निराश होकर वहाँ से चल दिए।

पार्वती जुए में जीतने के बाद प्रसन्नता से झूम उठीं। कुछ समय तक तो उन्हें शंकर के चले जाने का ध्यान ही नहीं रहा। बाद में जब इस तरफ उनका ध्यान गया तो उन्हें दुःख हुआ। फिर भी उन्हें विशेष चिंता नहीं हुई। सोचा थोड़ी देर बाद जब शंकर लौटकर आएँगे तो वह उनसे क्षमा माँग लेंगी और उनकी वस्तुएँ उन्हें वापिस लौटा देंगी।

उधर शंकर जुए में हार कर गंगा के किनारे चले गए और बड़े उदास मन से वहाँ बैठकर गंगा की लहरों की तरफ देखने लगे, जो एक-दूसरे से टकराकर बार-बार टूट रही थीं।

थोड़ी ही देर बाद उधर घूमते-फिरते, शंकर के पुत्र कुमार कार्तिकेय आ निकले। उन्होंने अपने पिता को उदास देखा तो उनसे इसका कारण पूछा। शंकर ने उन्हें जुए की बात बतला दी। इस पर कुमार कार्तिकेय ने अपने पिता से जुआ खेलना सीखा और माँ पार्वती के पास चल दिए। उनका उद्देश्य था कि जुए में अपनी माँ को हराकर पिता की सभी वस्तुओं को वापिस जीत लें।

पार्वती अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थीं और ज्यों-ज्यों समय निकलता जा रहा था, उनकी चिंता बढ़ रही थी। इसी बीच कुमार कार्तिकेय वहाँ पहुँच गए और अपना उद्देश्य कह सुनाया। पार्वती को यह जानकर दुःख हुआ कि शंकर अभी वहाँ नहीं आएँगे। दूसरी तरफ जुआ खेलने के निमंत्रण से उनमें नया उत्साह भी उत्पन्न हुआ। थोड़ी देर के लिए वो सब कुछ भूलकर अपने पुत्र कार्तिकेय के साथ जुआ खेलने में व्यस्त हो गयीं।

इस बार पार्वती के भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया। कार्तिकेय जीतने लगे और धीरे-धीरे उन्होंने अपने पिता की सभी वस्तुओं को वापिस

# रोग का कारगर इलाज
# सोचने का नजरिया बदलिए

आचार्य काका साहेब कालेलकर गांधी-विचार के प्रमुख व्याख्याता, मौलिक चिन्तक, उच्चकोटि के लेखक थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह जीवन के अप्रतिम कलाकार थे। उनकी निगाह बड़ी पैनी थी और उनका चिन्तन बहुत ही गहन था।

एक बार वह अस्वस्थ हो गए। मैंने सुना तो मुझे बड़ी चिन्ता हुई। बीमार होना अप्रत्याशित घटना थी। वह निरन्तर यात्रा करते रहते थे और उनका लेखन अबाध गति से चलता रहता था। उनके रुग्ण होने का अर्थ था, इस सबमें व्यवधान पड़ना।

मैंने उन्हें फोन किया। पूछा, ''काका साहेब, आपकी तबीयत कैसी है ?''

बोले, ''अच्छी है।''

''हाँ, तबीयत कुछ खराब हो गई थी। पर जब मैंने नई ''पैथी'' ( चिकित्सा ) की है, मुझे फायदा हुआ है।''

मैंने उत्सुकता से पूछा, नई पैथी ? वह क्या है।

बोले, ''बात यह है कि मैंने सभी पैथियाँ अजमाई-एलापैथी, होमियोपैथी, नेचरोपैथी, पर किस से भी आराम नहीं हुआ। तब मैंने सोचा, अब क्या किया जाए। सोचते-सोचते एक नई पैथी समझ में आई···''

कहते-कहते वह थोड़ा रुक गए। मेरी उत्सुकता और बढ़ गई। मैंने पूछा, ''नई पैथी! कौन-सी ?''



बोले, ''ऐपैथी।''

किंचित विराम के बाद उन्होंने कहा, ''मैंने रोग के बारे में सोचना ही छोड़ दिया। यह चिकित्सा बड़ी कारगर सिद्ध हुई। आप जानते हैं कि किसी की मेहमानदारी करो तो वह खुश होता है और अधिक दिन तक टिकता है। उसे घर का मान लो तो उसे आदर-सत्कार नहीं मिलता और वह कोई दूसरी जगह खोजता है, जहाँ उसे मेहमानदारी मिल सके। रोग के बारे में भी ऐसा है।''

काका साहेब की बात सही थी। रोग जितना हैरान करता है, उससे अधिक रोग की चिन्ता करती है।

## गर हो समय आठ घंटे पेड़ काटने के, तो छह लगाओ कुल्हाड़ी तेज़ करने में

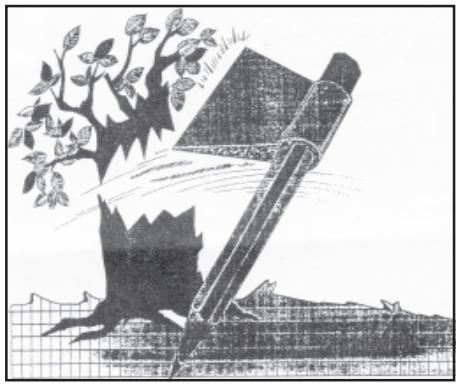

गगनचुम्बी इमारतें तो सालभर में भी खड़ी हो जाती हैं, परन्तु उनकी योजनाओं व नक्शों को तैयार करने में कई साल लग जाते हैं। एक भी दीवार यदि गलत खड़ी हो गई तो उससे सारी इमारत को खतरा हो सकता है। इसलिए योजना बनाने में तो धैर्य तथा सम्पन्न करने में अधीरता चमत्कारिक निर्माण कर सकती है।

# अब तो कलियुग आ गया

अपने हाथ से जो भी पुण्य कार्य हो उसे मनुष्य को भूल जाना चाहिए और जो पाप है उसे याद रखना चहिए, यह सुखी रहने का रहस्य है। परन्तु मनुष्य पुण्य तो याद रखता है और पापों को भूल जाता है। युवावस्था में जिसने बहुत पाप किए हों, उसे वृद्धावस्था में नींद कम अथवा आती ही नहीं। महाभारत के बाद रात्रि में विदुरजी धृतराष्ट्र के पास गए तो वो जाग रहे थे। विदुरजी ने पूछा कि नींद नहीं आ रही है क्या ? धृतराष्ट्र ने उत्तर दिया ''नहीं।'' तब विदुरजी बोले जिस भीम को तुमने विष भरे लड्डू खिलाए उसी के घर में अब तुम मीठे लड्डू खा रहे हो, धिक्कार है तुम्हें।

पांडवों को तुमने दुख दिए, तुम ऐसे दुष्ट हो कि राजसभा में द्रौपदी को बुलाने की तुमने सम्मति दी, क्योंकि मुझे तुम्हारे मुख पर मृत्यु का दर्शन हो रहा है। तुम्हारे सिर पर काल मंडरा रहा है। अतः पांडवों को छोड़कर अब मेरे साथ यात्रा करो। दिन में तुम्हें धर्मराज जाने नहीं देंगे इसलिए मैं तुम्हें और गांधारी को मध्य रात्रि में सप्त स्त्रोत तीर्थ पर ले जाने आया हूँ।

सुबह युधिष्ठिर धृतराष्ट्र के महल में गए, चाचाजी को न देखकर सोचने लगे कि हमने उनके सौ पुत्रों को मार दिया है, अतः उन्होंने आत्महत्या कर ली होगी। जब तक चाचा-चाची का समाचार न मिलेगा तब तक मैं पानी नहीं पीऊँगा। धर्मात्मा व्यक्ति जब दुखी होता है तो उसे मिलने सन्त आते हैं। धर्मराज के पास उस समय महामुनी नारदजी आये। धर्मराज ने कहा मेरे पापों के कारण ही चाचाजी चले गये। वैष्णव वह है जो अपने दोषों को देखे दूसरों के दोषों को नहीं। नारदजी समझते हैं कि आज से



पाँचवे दिन चाचाजी को तो सद्गति मिलने वाली है, फिर तुम्हारी बारी आयेगी। चाचा के लिए रोना छोड़ों, अपनी सोचो। छह मास पश्चात् कलियुग भी शुरू हो जाएगा।

युधिष्ठिर ने भीम से कहा नारदजी ने जो कहा था सो वह समय अब आया लगता है। मुझे कलियुग की परछाई दिखाई दे रही है। मेरे राज्य में अधर्म बढ़ रहे हैं। मन्दिर में ठाकुरजी का स्वरूप आनन्दमय नहीं दिखता। सियार और कुत्ते सामने रोते हैं। तुझे मैं और क्या कहूँ, मैं कल घूमने गया तो एक लुहार के पास एक वस्तु देखी। मैंने पूछा यह क्या है ? तो उसने कहा कि यह ताला है। लोगों के घरों में चोरी होने लगी है सो ताले लगाने लगे हैं।

आज से छह महीने पहले की बात है। एक वैश्य ने एक ब्राह्मण को एक घर बेचा था। उस घर की बुनियाद में से कुछ सोना मिला। ब्राह्मण वह सोना लेकर सेठ के पास गया। सेठ धर्मनिष्ठ था उसने कहा मैंने तो मकान तुम्हें बेच दिया था सो उसमें से जो कुछ भी मिला वह सब तुम्हारा ही है। ब्राह्मण ने कहा कि उस सम्पति पर उसका कोई अधिकार नहीं है। मेरे राज्य की जनता कितनी धर्मनिष्ठ थी। उसी समय मैंने कहा था कि छह महीने में इन दोनों का मन कलुषित हो जाएगा। वैसे ही हुआ। कल वह दोनों मेरे पास आए थे और धन पर अपना-अपना अधिकार जता रहे थे। अपने साथ एक-एक वकील भी लाए थे। तो भइया अब तो कलियुग आ गया।

कलियुग के मार्ग में बहुत बच कर चलना होगा यदि हमें भगवान श्री कल्कि के सामने अपने सारे खाते रखने हैं।

है धर्म कसौटी काँटे से होंगे इन्साफ सपाटे में
गाफिल मत रहना घाटे में, कल्कि जी कर में तोल रहे।

बोलीं कि, ''कल शाम जब वह सनातन धर्म सभा की मीटिंग से घर आए तो थोड़ी देर बाद ही उनकी तबीयत खराब हो गई। उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया। जहाँ उन्हें आई.सी.यू.में रखा गया। रात को 10 बजे मैंने उनसे पूछा कि 'आप अच्छे खासे मंदिर गए थे, क्या बात हो गई थी।' वह बोले कि ''कोई खास नहीं हुई; मैंने तो सिर्फ लाल साहब से कहा था कि क्या कल्कि-कल्कि करते रहते हो। कल्कि की मूर्ति नहीं लगेगी। राम की लगवाओ, कृष्ण की लगवाओ जबकि वह कहते थे कि कल्कि का आदेश है कि कल्कि का मंदिर बनेगा।'' मैंने तभी उनसे कल्कि भगवान् से माफी माँगने को कहा, इस्तीफा दिलवाया और 101 रुपए पर हाथ लगवाए। ऐसा करने से उनका हृदय संताप सामान्य हो गया और उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई। अब वे पूर्ण स्वस्थ हैं।''

मैं इस प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा यह बताना चाहता हूँ कि भगवान् श्रीकल्कि जो भी काम करने की प्रेरणा दें, उसे आप कष्ट पाते हुए भी तन-मन-धन से करने की कोशिश करें। नारायण आपकी मदद करेंगे और नारायणी सेना प्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करती रहेगी। वह लोग तो महाभाग्यशाली हैं जिनसे भगवान् कुछ काम ले रहे हैं और लेंगे। ये विपदाएँ सब तप बन जाएँगी।

आज भगवान् कल्कि का विशाल मंदिर वसंत विहार, नई दिल्ली में बना हुआ है। उनकी प्रतिमा के आगे जाकर दु:खी मन से खड़े होकर तो देखें! वह कैसे हँसती है और आपको कैसे हँसाएगी और कैसे बात करेगी और कैसे बातें कराएगी!!! मैंने तो सोचा भी नहीं था कि कल्कि भगवान् का मंदिर इतना विशाल रूप ले जाएगा। आज वहाँ अनेक भाग्यशाली परिवारों के सात्त्विक अनुदानों से सभी देवी-देवताओं की भव्य तथा विशाल मूर्तियाँ आ चुकी हैं। कुछ लग चुकी हैं और कुछ लग रही हैं। ये सब कार्य तो भगवान् कल्कि का है, और उन्हीं की कृपा से हुआ है। नियमित रूप से मंदिर में प्रार्थना आरती होती है। मैं तो सब धार्मिक-सात्त्विक जगत को बतलाना चाहता हूँ कि यह अलौकिक स्थान भगवान् का लीला केन्द्र है। वे धार्मिक परिवारों को प्रेरणा देकर अपना काम करा रहे हैं।



# कलियुग में श्री कल्कि की दिव्य शक्ति वैष्णों माता

त्रेतायुग में जब पृथ्वी पर रावण, खर-दूषण, त्रिशिरा, ताड़का आदि राक्षसों ने अपने अत्याचारों से धर्मात्मा, साधु-सन्त जनों का जीना दूभर कर दिया तथा सर्वत्र आसुरी प्रवृत्ति का बोलबाला था, उस समय भगवती महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती, सावित्री एवं गायत्री आदि महाशक्तियों ने एक स्थान पर एकत्र होकर पृथ्वी पर एक दिव्य शक्ति को जन्म देने का निश्चिय किया। फलस्वरूप इन सभी देवियों के शरीर से तेज की एक-एक किरण ने निकलकर संयुक्त हो एक दिव्य बालिका का स्वरूप धारण कर लिया।

उस दिव्य बालिका ने प्रकट होकर महाशक्तियों से पूछा, ''आपने मुझे किसलिए उत्पन्न किया है, मेरा नाम क्या है और मुझे क्या करना है?''

यह सुनकर महाशक्तियों ने उस दिव्य बालिका से कहा, ''हे कन्ये! तुम्हारा नाम 'वैष्णवी' है। पृथ्वी पर धर्म की रक्षा के उद्देश्य से हमने तुम्हें प्रकट किया है। अब तुम दक्षिण भारत में रत्नाकर सागर के घर पुत्री बनकर प्रकट हो जाओ। वहाँ भगवान् विष्णु के अवतार भगवान रामचन्द्र की पत्नी सीता की रक्षा करना।''

इस घटना के कुछ समय बाद उस कन्या ने रत्नाकर सागर के घर जन्म लिया। वहाँ उसका नाम 'वैष्णवी' रखा गया।

वैष्णवी ने शैशव काल में ही रूप, गुण तथा अलौकिक शक्तियों से सब लोगों को चमत्कृत करना आरम्भ कर दिया। कुछ ही दिनों में उस दिव्य कन्या की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई तथा सहस्रों व्यक्ति रत्नाकर सागर के यहाँ उस कन्या के दर्शनों के लिए आने लगे।

कुछ समय बाद वह दिव्य कन्या अपने माता-पिता से आज्ञा लेकर,

# अनुभवगम्य श्रीकल्कि मंदिर

—स्वर्गीय श्री ब्रजभूषण लाल

मेरा सौभाग्य है कि मेरे जीवन काल में मुझे तीन ऐसे सन्त मिले जिन्होंने मेरे जीवन-प्रवाह को बहुत प्रभावित किया—गुरुवर पंडित लक्ष्मी नारायण जी संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी और ब्रह्मर्षि देवराहा बाबा जी। इन महापुरुषों ने मेरा समय-समय पर मार्गदर्शन किया और जीवन की दिशा ही बदल दी। मेरे हृदय में नारायण की भक्ति का बीजारोपण ही नहीं किया बल्कि उस भक्ति की बेल को सदा हराभरा रखने के लिए महान कार्य करवाया। यदि इन महान संतों को मैं भगवान् भी कह दूँ तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। मेरी माता का देहान्त, जब मैं साढ़े 15 वर्ष का था, हो गया था। मैंने उनकी बीमारी में सेवा के लिए एक साल हाई स्कूल की परीक्षा भी नहीं दी थी।

पंडित श्री लक्ष्मी नारायण जी महाराज किसी से एक पैसा भी गुरु-दक्षिणा के रूप में या अन्य किसी प्रकार से नहीं चाहते थे। वे चार-पाँच शिष्यों को लेकर 'कल्कि नाम' कीर्तन करते थे। उन्होंने ही मुझे जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते—का महामंत्र दिया और यह भी बताया कि ''गाय की रक्षा होनी चाहिए; वेदपाठी ब्राह्मणों का आदर होना चाहिए; वह पिछले जन्म में स्वामी रामकृष्ण परमहंस थे; वैसे तो कलियुग की आयु 4 लाख 32 हजार वर्ष है पर कल्कि मंत्र से उसकी आयु क्षीण हो जाएगी; और अब भगवान् विष्णु का कल्कि अवतार शीघ्र प्रकट होगा।'' उन्होंने मेरा परिचय सन् 1940 में संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी से कराया जिन्होंने मुझे 'श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव मंत्र दिया।' भगवान् देवराहा ने कहा कि, 'संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी व वे स्वयं एक ही हैं।' मुझसे उन्होंने वर माँगने को कहा। मैंने कहा, 'वसंत विहार का मंदिर भगवान् कल्कि के अनुभव से बना है सो सुरक्षित रहे। इसमें प्रलय के समय में भी पानी न आए।'



देवराहा बाबा ने यह मंजूर कर लिया। गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी ने बताया था कि 'बड़ा भयानक विश्व युद्ध होगा।' यह सन् 1939 से 1942 तक चला। मैं कल्कि कीर्तन अपने घर पर करता रहता था और पता नहीं कैसे एकदम मेरी उन्नति 600 रुपए ( उस समय के ) मासिक पर, सुपरेन्टैन्डेन्ट के पद पर हो गई। मैंने पंडित जी का परिचय अपने एक बंगाली सीनियर आई.सी.एस., संयुक्त सचिव, एन.सी. सेन गुप्ता से कराया। श्री सेन गुप्ता उनके मंत्र से बहुत प्रभावित हुए और उनको शाकाहारी भोजन पर बुलाया। चमत्कार बहुत हुए, निम्नलिखित अपने में विचित्र है। 7 नवम्बर, 1966 को गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी ब्रह्मलीन हो गए।

सन् 1975 में रात्रि को स्वप्न में मुझे 'कूँचा पातीराम' दिल्ली में कल्कि कीर्तन होता हुआ दिखाई दिया। उसमें यह घोषणा कर दी गई कि ''अगला कीर्तन वसंत विहार में बृजभूषण के मकान पर होगा।'' मैंने श्री रामेश्वर दास गोयल जी को कहा कि 'मेरे से पूछे बिना तुमने यह इतने अधिक खर्चे का काम मेरे ऊपर कैसे डाल दिया।' कीर्तन हुआ तो रात्रि को गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी के दर्शन हुए और आदेश हुआ कि अब तो तुम को वसंत विहार में कल्कि मंदिर बनवाना है और भविष्य में कलियुग के अंत की सारी लीला वसंत विहार मंदिर से ही शुरू होगी। मैंने कहा, 'महाराज, वसंत विहार में मंदिर बनवाना कोई हँसी खेल है। मैं भारत सरकार द्वारा रिटायर्ड अफसर हूँ। मैंने अपने जीवन काल में कोई रिश्वत नहीं ली। मेरे तो परिवार का पालन-पोषण भी सादगी से चलता है।' इस पर वह बोले कि तुमने रिश्वत नहीं ली और तुम सच्चे आदमी हो इसीलिए तो कल्कि भगवान् के मंदिर बनवाने का काम हम तुम्हें सौंप रहे हैं। मैंने उनके आश्वासन पर सनातन परिवारों से मंदिर के लिए धन इकट्ठा करना शुरू कर दिया। भगवन् कल्कि की कृपा से जितना-जितना रुपया चाहिए था अपने आप आता गया। काम होता रहा और आगे बढ़ता चला गया। मंदिर का भूमि-पूजन प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी और अन्य सात श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा कराया, जिसमें आचार्य प्रभाकर मिश्र भी सम्मिलित थे। इसके बाद भगवान् ने स्वप्नानुभव में कहा कि 800 गज का एक और टुकड़ा मंदिर के लिए ले लो। मैंने कहा कि ''पहले वाली जमीन ही बड़ी मुश्किल से

बाबा की समाधि के पास।' 'मास्टरजी ने ये शब्द' महरौली में सब सदस्यों के सामने कहे तो क्या प्रतिक्रिया हुई, मुझे ज्ञात नहीं। लेकिन मास्टरजी ने श्री रामेश्वरदास गोयल के द्वारा इतना अवश्य कहलवाया कि 'हम कुल 15 हजार रुपए देंगे, चाहे मुझे अपने प्रोविडेंट फण्ड ( भविष्य निधि ) से निकालकर देने पड़े।' मूर्ति की न्यौछावर ( बनवाई ) 48 हजार रुपए थी। काम आगे बढ़ा। हमने सिर्फ यही सन्देश मंडल में दिया कि 'भगवान् श्रीकल्कि की मूर्ति श्री योगमाया मंदिर में लगेगी। जो भक्त अपनी न्यौछावर देना चाहें, वे श्री रामेश्वरदास गोयल को दे दें।'

श्री योगमाया की क्या मर्जी थी, क्या कृपा थी, कौन जान सकता था ? श्री रामेश्वरदास गोयल का यही सन्देश आया कि 'जयपुर चलो, सब इंतजाम है।' श्री रामेश्वरदास गोयल, मास्टरजी, श्री परमेश्वर गोयल और मैं जयपुर गए। वहाँ मूर्ति भंडार में जाकर जब भगवान् श्रीकल्कि की मूर्ति देखी तो सब सकते में आ गए, मूर्ति की गर्दन तो टेढ़ी थी। सबने एक स्वर में मूर्तिकार से कहा कि 'तुमने यह मूर्ति की गर्दन टेढ़ी क्यों बनाई ?' क्या कभी मूर्ति ऐसी बनती है ? मूर्ति हमेशा सीधी होती है एवम् भक्त भी सामने से ही दर्शन करते हैं।' मूर्ति भंडार के मालिक श्री सत्यनारायण जी ने अफसोस जाहिर किया कि 'आज तक ऐसा नहीं हुआ। समझ में नहीं आता कि हमारे मूर्तिकारों से ऐसा कैसे हो गया, इस चीज को हम भी न पकड़ पाए। हमारे व्यवसाय की अवधि में ऐसा पहली बार हुआ कि मुँह दूसरी तरफ देख रहा है। हम आपको आश्वासन देते हैं, अब पहले जितना समय नहीं लगेगा। हम तीन-चार महीने में आपको दूसरी मूर्ति बनाकर दे देंगे।'

सोफे पर हम चारों बैठे थे। सामने मूर्ति रखी थी। मैंने जैसे ही चेहरे पर निगाह जमाई, लगा कि मूर्ति हँसी। मैं उठ खड़ा हुआ, वह मुस्कुराए और वह हँसे। मैंने श्री रामेश्वरदास गोयल से कहा 'जरा खड़े होकर तो देखो! कितना आश्चर्य है कि यह मूर्ति तो बिना प्राण प्रतिष्ठा के हँस रही है, हम दूसरी क्यों बनवाएँ ? अरे, प्रायः स्थापित हुई मूर्ति अपने जीवन काल में हँसती नहीं देखी, यह तो बिना स्थापित किए हँस रही है। यह तो सजीव चमत्कारी मूर्ति है।' उन्होंने भी वैसे ही घूमकर देखा, फिर सबने घूमकर देखा कि मूर्ति तो हँसती है। एक मिनट में यह निर्णय हो गया कि



'हम यही मूर्ति लेंगे। हमें दूसरी मूर्ति नहीं बनवानी। श्री रामेश्वरदास गोयल ने पोटली खोली और अतिरिक्त भुगतान किया। 101 रुपए मूर्ति की न्यौछावर के दिए। मूर्ति को ट्रक से न भेजकर टैम्पों से भेजने का पैसा दिया। सब हिसाब चुकता करने के बाद भी पोटली में 3 हजार रुपए बचे। वह मास्टरजी को श्री रामेश्वरदास गोयल देने लगे तो वह बोले, 'यह तो दिल्ली वालों के हैं। मैं क्या करूँगा ?' इस पर मैंने कहा कि 'यह भगवान् की मूर्ति योगमाया मंदिर में लगाने के लिए थे और आप लगवा रहे हैं। इस निमित्त के हैं, हमारा इन पर कोई अधिकार नहीं है। आप इन रुपयों को मूर्ति स्थापना आदि में जहाँ चाहे, वहाँ लगाएँ' यह है श्री योगमाया महारानी की अपार कृपा कि 'भंडार भरा रहा' और चंदा इकट्ठा करने के लिए हाथ नहीं पसारना पड़ा! इसे कहते हैं जगदम्बा की अत्यन्त करुणामय कृपा!!'

मूर्ति जिस दिन दिल्ली पहुँची, मास्टरजी को स्वप्न हुआ कि 'मूर्ति आ गई है, मंदिर पहुँचो।' वह जगे और पत्नी से पूछा कि 'क्या कोई कहने आया था कि मूर्ति आ गई है ?' वह बोली, 'नहीं।' थोड़ी देर बाद मंदिर से आदमी पहुँचा कि 'टैम्पों में मूर्ति आई है। आपको मंदिर बुलाया है।' मास्टरजी मंदिर पहुँचे तो वहाँ पर दृश्य ही कुछ और था। पंडित विष्णु नारायण जी कह रहे थे, 'मूर्ति योगमाया मंदिर की परिधि में नहीं लगेगी। मैं इसे टैम्पों से उतरने नहीं दूँगा। यहाँ लट्ठ चल जाएँगे, लाशें बिछ जाएँगी। मेरे जीवनकाल में तो क्या, मेरी तीन पीढ़ियों में तो कल्कि की मूर्ति योगमाया मंदिर में नहीं लगेगी।' गाली-गलोज, गर्मा-गर्मी का माहौल चल रहा था। टैम्पों-चालक सरदार था। वह बोला, ''भाई, तुम अजीब हिन्दू हो। मूर्ति के लिए इतनी खुराफात कर रहे हो। मुझे देरी हो रही है। मूर्ति उतारो। मुझे आगे जाना है।'' इतना कहना था कि पंडित जी ने सरदार जी का गिरहवान पकड़ लिया कि 'तू कौन होता है, हमें उपदेश देने वाला।' आग और भड़क गई, स्थिति और बिगड़ गई। अब कौन संभाले! सरदार जी के धमकाये जाने पर मुश्किल से यह समझौता हुआ कि 'मूर्ति उतरवा ली जाए और उनको तो जाने दिया जाए। फिर जैसे तय हो, किया जाए।' मूर्ति जैसे ही टैम्पों से नीचे उतारी गई और जैसे ही मूर्ति ने वहाँ की

'ठीक है।' नौकर बोला।

शाम के समय युवक हाथी खरीदकर उस राह से गुजर रहा था। चाय की दुकान के पास वह ठहरा। चाय पी, पान खाया, फिर आगे बढ़ गया।

दुकानदार ने नौकर से कहा, 'सच हुई न मेरी बात?'

'हूँ।' नौकर इससे अधिक कुछ नहीं बोला।

थोड़ी देर बार वह अधेड़ व्यक्ति भी उस दुकान पर आकर ठहरा, जो अपनी कमाई से हाथी खरीदना चाहता था। दुकानदार ने उससे पूछा, 'क्या हुआ? हाथी पसंद नहीं आया?' 'ऐसी बात नहीं है?' 'तो फिर?'

'यहाँ हाथी की कीमत बहुत ज्यादा है, इसीलिए नहीं खरीद सका। वैसे इसकी कोई जरूरत भी नहीं समझता हूँ।' उसने दुकानदार से कहा।

जब वह चला गया तो दुकानदार अपने नौकर से बोला—'ठीक कहा था न मैंने।' 'बिल्कुल। मगर आपने यह कैसे जाना? नौकर उत्सुक हो बोल उठा।'

'सीधी-सी बात है। दोनों आदमी हाथी दिखावे के लिए खरीदना चाहते थे। उसकी कोई आर्थिक उपयोगिता उनकी नजरों में नहीं थी। ऐसे में याद रखो, सिर्फ दिखावे के लिए कोई चीज खरीदना एक फिजूलखर्जी है और जानते हो, मेहनत की कमाई करने वाला कभी फिजूलखर्जी नहीं कर सकता। युवक के पास बाप-दादा की कमाई थी, इसलिए फिजूलखर्च करने में उसे जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई। जब वह अपनी मेहनत की कमाई करेगा, तब वह धन के महत्त्व को सही अर्थ में समझ सकेगा और फिर वह उसका सदुपयोग करना भी जानेगा। फिजूलखर्ची से तब वह मुँह मोड़ लेगा।' दुकानदार ने अपनी बात पूरी की।

नौकर को सब कुछ अच्छी तरह समझ में आ गया। दुकानदार की जो बातें पहले उसे बेतुकी जान पड़ी थीं, अब तर्कसंगत प्रतीत हुई।

भगवान श्री कल्कि अति विशिष्ट हैं और प्रत्येक भक्त में कल्कि भगवान की विशिष्ठता प्रतिबिंबित होनी चाहिए। इसलिए कलियुगी चकाचौंध में फंसकर सिर्फ दिखावे में अपनी कमाई नहीं उड़ानी चाहिए। जितना हो सके अपने धन से भगवान के शुभ कार्य करने चाहिएं। इससे लोक-परलोग दोनों बनेंगे



# जब मूर्ति हँसी : योगमाया मन्दिर

—श्री ओमप्रकाश गुप्ता

साधारण व्यवहार में, यदि बेटा आए और बाहर से ही माँ से बिना मिले चला जाए, तो एक माँ को कैसा लगेगा, यह सोचने की बात है। सामान्यत: बेटे की इस हरकत से माँ उससे नाराज होगी। माँ की यह नाराजगी जायज होगी और यदि ( शक्तिशाली ) जगत्जननी जगदम्बा वह माँ हो तो वह कैसा व्यवहार अपने आलसी और लापरवाह बेटे से करेगी? वैसे ही मेरे साथ सितम्बर 1984 में हुआ। श्रीराधेश्याम मन्दिर महरौली में दो दिन श्रीकल्कि जयन्ती महोत्सव का आयोजन था। इसी बीच दोपहर में मैं अपने घर आया। श्री योगमाया मन्दिर के आगे से जब मेरी गाड़ी निकली, तो मन में संकोच-सा हुआ कि मंदिर में जाना चाहिए, फिर न जाने क्यों तुरन्त विचार बदल गया कि कल्कि भगवान् की जयन्ती से आ रहा हूँ, कोई फर्क नहीं पड़ता। घर पहुँचा कर खाना खाकर सो गया। स्वप्न में महारानी माँ नाराज हुई और बोली, 'मैं तेरे पास से जा रही हूँ।' आँख खुली, योगमाया महारानी जी से माफी माँगी। शाम को जब श्री कल्कि जयन्ती में गया, तो पहले श्री योगमाया महारानी के मंदिर में होते हुए गया। माँ के दर्शन किए और देखा वहाँ पर संगमरमर पत्थर लगाने का काम चल रहा है। देखकर बहुत अच्छा लगा; दिल हल्का हुआ। पत्पश्चात् जयन्ती में पहुँचा। वहाँ रात को श्री परमेश्वर स्वरूप गोयल से बात हुई कि महरौली में हर वर्ष जयन्ती मनायी जाती है, तो क्यों न श्रीकल्कि भगवान् की मूर्ति

## प्रभु से एकाध दुख माँगो ताकि अक्ल ठिकाने रहे

महाभारत में कौरवों और पांडवों का युद्ध समाप्त हुआ। अश्वत्थामा ने विचार किया कि मैं भी पांडवों को कपट से मारूँगा। पांडव जब सो जाएँगें तब उनको मारूँगा। अन्तर्यामी भगवान कृष्ण ने सोए हुए पांडवों को जगाया और कहा

कि टहलने के लिए सब गंगा कि किनारे चलो। पाँचों पांडवों को श्री कृष्ण पर कितना दृढ़ विश्वास कि जो वह कहते थे वह करते हैं, श्री कृष्ण से कोई प्रश्न भी नहीं करते थे। प्रभु के कहने पर भी द्रोपदी के पुत्र नहीं आए। यहाँ मातृ प्रेम की अभिव्यक्ति एवं आलस्य की प्रधानता है कि पाँचों बालक बोले कि आपको तो नींद नहीं आती है, हमको तो नींद आती है, आपको जाना हो तो जाओ। परिणाम यह हुआ कि अश्वत्थामा ने द्रोपदी कि पाँचों पुत्रों को मार दिया। जो सब प्रकार से सुखी हो जाता है वह दीन बनकर भगवान के आगे नहीं झुकता। आज द्रोपदी विलाप कर रही है, उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं, परंतु द्वारकानाथ को दया नहीं आती है। नहीं तो द्रोपदी का रुदन श्रीकृष्ण को सहन नहीं होता था। भगवान कृष्ण ने द्रोपदी की पुकार सुनकर कौरवों की सभा में वस्त्रावतार लिया। दुर्धोधन के कहने पर दुर्वासा ऋषि और उनके दस हजार शिष्यों को भोजन कराने के लिए द्रोपदी की करुणा पुकार पर कि हे केशव रक्षा करो वरना दुर्वासा अपने श्राप से मेरे सारे पांडवों को मार देगा। कृष्ण द्वारका से दौड़कर द्रोपदी के पास पहुँचे ( जैसाकि आपने पिछले अंक में पढ़ा है। आज उन्हीं कृष्ण पर द्रोपदी के रुदन का कोई असर नहीं पड़ रहा। आज कृष्ण निष्ठुर बने हैं। द्रोपदी के लिए न तो कुछ कर रहे हैं, न ही उसे सांत्वना दे रहे हैं।



सो मनुष्य सब प्रकार से सुखी हो यह ठीक नहीं। एक दुख मनुष्य के हृदय में होना ही चाहिए कि जिस दुख से विश्वास हो कि भगवान के सिवा मेरा कोई नहीं है। अंतर्यामी कृष्ण-श्रीकल्कि हमारे पर आए घोर संकट टालने भी आएँगे तो आलस्य और प्रमाद में कहीं द्रोपदी और उसके बालकों की तरह उनके प्रस्ताव को ठुकरा न बैठें।

जिस प्रकार द्रोपदी ने भगवान कृष्ण के द्वारा दिये गए संकेतों को नहीं समझा, मातृप्रेम में लापरवाह होकर अपने बच्चों को खो बैठी उसी प्रकार आज कलियुग में भगवान श्री कल्कि अपने भक्तों को स्वपन-अनुभव ( इशारा ) आने वाले कलियुग के षडयंत्रों से आगाह कर रहे हैं। यदि हम आलस्य और प्रमाद वश अनुभव के अनुसार उपचार नहीं करेंगे तो हम द्रौपदी की तरह धोखा खा सकते हैं एवम् हो सकता है भगवना श्री कृष्ण की तरह भगवान श्री कल्कि भी हमारी मदद् करने में असहाय हो जावें।

### भगवान गणेश से प्रेरणा

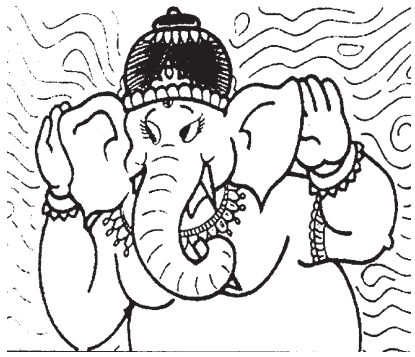

भगवान श्री गणेश का विशाल मस्तक हमें भव्य व लाभदायी विचार ग्रहण करने की प्रेरणा देता है, उनके बड़े-बड़े कान संकेत करते हैं सुविचारों व सलाहों को सुनने की ओर, उनकी सँकरी आँखें इशारा करती हैं, ध्यानमग्नता की आवश्यकता की तरफ, जिससे वर्तमान कार्य को गहराई से नाप-तोल कर करा जाए, उनकी लंबी सूँड चारों तरफ जिज्ञासा से सूँधने और इस प्रकार ज्यादा-से-ज्यादा सीखने की प्रेरणा देती है, उनका छोटा से मुँह याद दिलाता है कि बोलो कम और सुनो ज्यादा।

तो छांट कर रखिये कि आपको कौन-सा गुस्सा ज्यादा तंग करता है जो कहा जा रहा है, वह किया भी जाना चाहिये। जीभ और जीवन में सामंजस्य चाहिये। साधु की एक जीभ होती है। सर्प के पास दो जीभ होती है, क्योंकि उसके दो मुँह होते हैं। ब्रह्मा की चार जीभ प्रसिद्ध हैं। रावण जैसे लोग दस जीभ रखते हैं, तो शेषनाग की हजार जीभ हुआ करती है। किन्तु जो दुर्जन व्यक्ति हैं, उसकी जीभों की कोई नियत संख्या नहीं है। वह दिन में कितनी बार अपनी जुबान बदलेगा, कुछ भी नहीं कहा जा सकता। संत और सद्गृहस्थ वह है जो जुबान का पक्का हो और साथ ही जिसकी जीभ और जीवन में एकरूपता हो। उपदेश देना तो सरल है, लेकिन उसे निभाना बड़ा कठिन है।

गुस्सा बुरा है यह सभी को पता है, लेकिन केवल पता होने से ही तो गुस्सा खत्म नहीं हो जाता, वक्त पर गुस्से को पीना भी पड़ता है और केवल पीना ही नहीं, उसे पचाना भी पड़ता है। अगर पिया हुआ क्रोध पचा नहीं तो वह और भी अधिक हानिकर होगा। कई बार हमारा गुस्सा, दुःख बाद में बड़ा विस्फोटक सिद्ध होता है।

मैं तुमसे साफ शब्दों में कहूँगा कि अगर क्रोध आता है तो उसे बाहर निकाल फेंको, दुःख आए तो उसे भी भोग डालो। भीतर दबा-दबा कर इकट्ठा मत करो। पुरुषों की एक बुरी आदत यही है, कि वे क्रोध दुःख को दबा-दबा कर जीते हैं। दिल से लगा-लगाकर जीते हैं और फिर उन्हें एक दिन दिल का दौरा पड़ जाता है और चल बसते हैं। दुनिया के आंकड़े बताते हैं कि विधवाओं के आँकड़े ज्यादा है। दुनिया में विधुर कम हैं और विधवाएँ ज्यादा हैं। पुरुष कम जीता है। महिलाएँ लम्बी उम्र तक जीती हैं। इसका कारण कि पुरुष अपनी मर्दानगी को बचाएँ रखने के चक्कर में दुःख और पीड़ा को अन्दर दबाते चले जाते हैं, और एक दिन दबाते-दबाते वह खुद ही दब जाते हैं। जबकि महिलाएँ ऐसा नहीं करती हैं। उन्हें जरा सा दुःख आया तो रो लेंगी। दस लोगों को बता कर उसे खत्म कर देंगी। कोई मर गया तो चीख लेंगी, छाती कूट लेंगी और हल्का हो लेंगी। लेकिन पुरुष मूँछ और मर्दानगी के चक्कर में यूँ ही बैठे रहते हैं। बेचारे किसी से भी नहीं कह पाते।



तुम्हें पता होना चाहिए कि पागलखानों में महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों की संख्या ज्यादा है, ऐसा क्यों ? क्योंकि स्त्रियाँ थोड़ा-थोड़ा पागल रोज हो लेती हैं। कैसे ? गुस्सा आया तो चण्डी बन गईं। पप्पू को ठोक-पीट दिया, छाती कूट ली, बाल नोंच लिए। थोड़ा देर बाद फिर ठीक हो गईं, लेकिन पुरुष ऐसा नहीं करते। वे तो सारा पागलपन भीतर ठूंसते जाते हैं और एक दिन पूरे ही पागल हो जाते हैं। थोड़ा-थोड़ा पागल हर रोज हो लीजिए पर किसी बात की दिल में गाँठ मत बाँधिए। यह गाँठ बहुत खतरनाक है। किसी बुरी बात को दिल से लगाकर बैठ जाने से दिल ही बैठ जाता है। दिल बड़ी नाजुक चीज है। उस पर व्यर्थ का वजन मत डालिए। वह वजन को बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। अपने दिल को केवल साफ ही ना रखें, हल्का भी रखें। पाक व हल्का दिल ही दिलबर के लिए उपयुक्त है।

मैं कहता हूँ—क्रोध में जो इच्छा हो, पूरी करो, लेकिन क्रोध आने पर कुछ भी करने से पहले पाँच मिनट चुप रह जाओ। मैं तुमसे सिर्फ पाँच मिनट माँग रहा हूँ। छठवाँ मिनट तुम्हारा है। मुझे क्रोध के प्रारंभिक क्षणों के सिर्फ पाँच मिनट दे दो। मैं दावे से कह सकता हूँ, इन पाँच मिनटों में क्रोध की हवा निकल जाएगी, गुस्से का दम निकल जाएगा। क्रोध बड़ा अल्प-आयुष होता है। क्रोध ज्यादा देर जीवित नहीं रहता। प्रतिकूल निमित्त मिलने पर अगर तुम पाँच मिनट शान्त रह गए, तो समझना तुम संत बन गए और अगर क्रोध के क्षणों में पाँच मिनट का सब्र और संयम नहीं रखा, तो फिर क्रोध तुम्हारा दम निकाल देगा, गुस्सा तुम्हारी हवा निकाल देगा।

एक क्षण का क्रोध पूरे जीवन की तपस्या को भंग कर देता है। एक क्षण का संयम तपस्या के तेज को कई गुना बढ़ा देता है। हमें कल्कि जी के प्राकृट्य के लिए तपस्या करनी है। ( लोभ, क्रोध, घृणा )··· कलियुगी मनोवृत्तियों के चंगुल में नहीं फंसना है, बल्कि अपने संयम से इनका जवाब देना है और अपनी सारी बातें कल्कि भगवान से कहनी है।

कल्कि नाम का प्रबल प्रताप, हमें संभाल रहे हरि आप।

चट्टानी रास्तों से होता आया जहाँ उसे पहले साँप मिला था, वह चिल्लाया, ओह! साँप, कृपया यहाँ आओ मुझे तुम्हारी सहायता की फिर आवश्यकता है, उस की आवाज सुन कर साँप बिल से निकल आया, जब उसने स्वप्न के बारे में सुना तो किसान से अपने आधे इनाम की याद दिलाते हुए बोला, जाओ। और राजा को बतलाओ कि नंगी तलवार का मतलब है कि शत्रु उस पर आक्रमण करने के लिए बिल्कुल तैयार है।

ज्यों ही राजा ने यह बात सुनी तो उसने किसान को एक बार फिर बहुत सा धन पुरस्कार में दिया। इनाम लेकर किसान ने सोचा कि इस बार मैं उसी चट्टानी रास्ते से वापस घर जाऊँ, हो सकता है साँप रास्ते में मिले ही न और सारा धन मेरे हिस्से में आ जाए, जैसे ही वह चट्टानी रास्तों को पार कर रहा था रास्ते में उसे साँप मिला और उसने कहा, अब मुझे अपने वायदे के अनुसार आधा इनाम दे दो। तब किसान बोला—बिल्कुल नहीं! तुम जैसे काले गन्दे और खतरनाक जानवर को कैसा इनाम दिया जाए यह कहते हुए उसने अपनी तलवार से साँप पर वार किया, जिससे साँप की पूँछ का छोटा सा हिस्सा कट गया और साँप अपने बिल में घुस गया। कुछ समय गुजरा, राजा ने एक और स्वप्न देखा। इस बार एक भेड़ कमरे के बीचों बीच शांत भाव से लटकी थी। फिर किसान को यह सूचना मिली तो वह परेशान हो गया। मैं राजा के सपने का मतलब नहीं जानता। उसने सोचा, अब साँप के पास सहायता के लिए किस मुँह से जाऊँ, जबकि उसे मैं पहले ही धोखा दे चुका हूँ। यहाँ तक कि उस की पूँछ भी मैंने काट डाली है। वह फिर भी चट्टानी और पथरीले रास्ते से होकर चलने लगा और पहले की तरह चिल्लाया, ओह साँप कृपया मेरी सहायता करो, मुझे तुम्हारी फिर आवश्यकता है। साँप अपने बिल में से आया। उसने स्वप्न सुना और इनाम के आधे हिस्से का वायदा लेकर बोला, इस स्वप्न का मतलब है 'सुख शान्ति' अब राज्य में शान्ति है और लोग प्रेम प्यार से रह रहे हैं। जैसे ही राजा ने यह सुना उसने किसान को पहले से भी अधिक इनाम दिया। इनाम लेकर किसान सीधा उस चट्टानी रास्ते की ओर चल दिया, वहाँ साँप उसकी पहले से ही प्रतीक्षा कर रहा था।

किसान बोला, तुम बहुत शांत स्वभाव के हो और मुझे माफ करते



रहे हो, कृपया मुझे क्षमा करना, मैंने तुम्हें धोखा दिया और तुम्हें जख्मी किया यह लो, मैं सारा इनाम ही तुम्हारे लिए ले आया हूँ।

जो कुछ हो गया उसके लिए इतने उदास और दुखी न हो साँप ने कहा, क्योंकि इस में तुम्हारा कोई दोष नहीं है। पहली बार जबकि सब लोग लोमड़ी की तरह चालाक थे तुम ने मुझे धोखा दिया, तुम दूसरे रास्ते से अपने घर चले गए और इनाम का हिस्सा मुझे नहीं दिया, दूसरी बार जबकि तलवार लटक रही थी, तुमने भी तलवार से मेरी पूँछ काट डाली, परन्तु अब सारे राज्य में शान्ति है और अब जितने शैतान है सब शरीफ और सीधे हैं जैसेकि तुम मेरे पास वापस आए हो अपने दिल में प्यार व शान्ति के साथ। मेरे दोस्त अब जाओ, भगवान् तुम्हें खुश रखें, मुझे कोई इनाम नहीं चाहिए, यह कहते हुए साँप पास के बिल में घुस गया।

आज सर्वत्र कलियुग का राज्य फैला हुआ है। स्वार्थी दंभी, लोभी, कपटी, चालाक लोगों का समाज में बोलबाला है। हम यह भी जानते हैं कि भगवान श्री कल्कि के प्राकट्य के उपरान्त सत्युग की स्थापना होगा, सत्युगी समाज में सात्विक गुण ( दया, क्षमा, मानवता, सरलता··· ) की प्रधानता रहेगी। कल्कि भक्त होने के नाते हमें कलियुग की धारा में नहीं बहना चाहिए अपितु सात्विक गुणों का विकास अपने मन में करना चाहिए ताकि जब प्रभु हमारे सामने हों तो हमारी निगाहें न झुकें। हमारी टक्कर कलियुगी समाज से है अतः अपनी तीव्र बुद्धि से कार्य लेते हुए कलियुगी प्रधान समाज में निर्वाह करना होगा। अपनी जीविका कर्त्तव्यों को भी सर्तकता से निभाना होगा।

कहा—आप दोनों का दिमाग तो ठीक है ना ? उन्हें बड़ा गुस्सा आया और पूछा—क्या मतलब ? तीसरा बोला—आप दोनों का देश एक है, प्रदेश एक है, शहर एक है, कालोनी एक है—यहाँ तक कि मकान नम्बर भी एक है फिर भी आप दोनों पागलों की तरह एक-दूसरे के बारे में पूछे जा रहे हैं। उन दोनों में से एक बोला—देखिए आपको हमारे बीच में बोलने की जरुरत नहीं है। हम बाप-बेटे हैं और टाइम पास कर रहे हैं।

हमारा जीवन अलमोल है, हमें व्यर्थ की बातें करके अपना टाईम पास नहीं करना चाहिए। कल्कि जी ने जो अपनी भक्ति का सच्चा मार्ग दिखाया है, उसके लिए एक जीवन तो क्या कई जन्म भी कम पड़ेंगे। हमें तो हर पल भगवान का चिन्तन और उनके कार्यों के साथ अपने कर्त्तव्यों की इस तरह पालना करनी है कि पांडवों के कृष्ण की तरह वह भी हर पल हमारा ख्याल करें।

## पक्के तो बनो

एक पुजारी कई दिनों से यज्ञ कर रहा था, किन्तु अग्निदेव के दर्शन नहीं हो रहे थे। इसी बीच, राजा विक्रमादित्य वहाँ से गुजरे। पुजारी का उतरा चेहरा देखकर, उसकी परेशानी समझते राजा को देर नहीं लगी। विक्रमादित्य आगे बढ़े और उसे समझाया, 'यज्ञ ऐसे नहीं किया जाता।' फिर अपना मुकुट उतार कर जमीन पर रख कर संकल्प किया यदि आज शाम तक अग्निदेव प्रकट नहीं हुए, तो आज से मैं राजमुकुट धारण नहीं करूँगा। चाहे राज्य में जितना भी अनाचार फैल जाए। प्रजा वत्सल अग्निदेव चिंतित हुए। वे शाम से पहले ही प्रकट हो गए। पुजारी ने आगे बढ़कर देव को प्रणाम किया और बोले, 'देव, इतने प्रयत्न किए, आप प्रकट नहीं हुए। जबकि राजा ने सिर्फ मुकुट उतार देने का संकल्प किया और आप साक्षात आ गए। आखिर क्यों ?' अग्निदेव ने समझाया, 'वास्तव में, राजा ने जो किया दृढ़ता और संकल्प से किया। दृढ़ता और संकल्प से किया कार्य सदा शीघ्र परिणाम देता है। इसलिए मैं तत्काल प्रकट हो गया।' पुजारी को संकल्प के बल का अहसास हो गया।



## सौदा सस्ता है

एक सेठ अपने रिश्तेदार के साथ अपनी दुकार पर जा रहे थे। घर पर उन रिश्तेदार की खातिरदारी में दो-चार घंटे लग गए थे। प्रतिदिन तो दस बजे दुकान जाने के लिए वे निकल जाते थे किन्तु आज दो बज गए थे।

वे दोनों दुकान पहुँचे तो एक हल्के नौकर ने सेठ का घोर अपमान कर दिया—''कितने देर से दुकान पर आये ? तुम्हारे बाप का राज है ? कुछ परिश्रम नहीं करते ? धंधा चौपट करना है क्या ?''

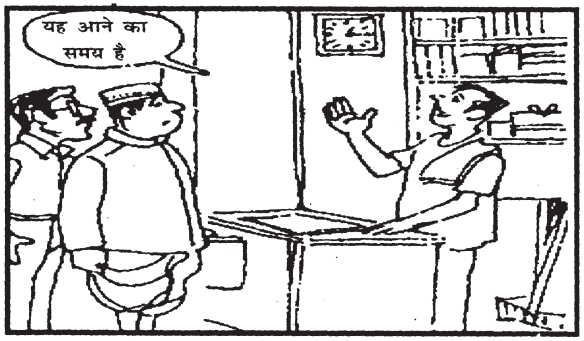


ये देखकर सेठ के संबंधी को बड़ा आश्चर्य हुआ! उन्होंने पूछा—''यह नौकर आपको इतनी बुरी तरह डांट रहा है और आप मुस्कुरा रहे हो ?''

सेठ ने कहा—''मैंने इसे रखा ही इसीलिए है। यह ठीक ही कह रहा है।''

संबंधी—''अच्छा! इसको तनख्वाह कितनी देते हो ?''

सेठ—''1500 रुपये देता हूँ और मुझे डांटने के लिए उसे 600 रुपये देता हूँ। इस प्रकार मैं इसे कुल 2100 रुपये देता हूँ। सस्ताई का जमाना है। मुझे और सब तो केवल 'वाह-वाह' करने वाले ही मिलते हैं, डाँटने वाला कोई नहीं मिलता, मेरे अवगुण दिखाने वाला कोई नहीं मिलता। यदि जीते-जी मैंने अपने को ठीक नहीं किया तो मरने के बाद न जाने कितने ही जन्मों में मुझे ठीक करने वाली माताएँ मिलेंगी, कितने पिता मिलेंगे, कितने ही चाबुक लगाने वाले मिलेंगे। 84 लाख जन्मों की अपेक्षा इसी जन्म में कोई चाबुक लगाता है तो 2100 रुपये देना कोई बड़ी बात नहीं है। सौदा सस्ता है।''

स्मरण करूँ, नहीं करूँगा, तो वहाँ जाकर नरक का दुःख भोगना पड़ेगा, आप तो जीवनभर के साथी रहेंगे, बस आपसे एक प्रार्थना है कि मुझे मृत्यु से कुछ दिन पहले आप एक चिट्ठी डाल दें, जिससे मैं सावधान हो जाऊँ और सांसारिक काम-काज छोड़कर भगवान् के भजन में लग जाऊँ ताकि आपको मेरे लिए पैरवी न करनी पड़े।'

यमराज ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, यह तो कोई मुश्किल काम नहीं है, इसके अलावा कोई और काम हो तो बताओ।

'बस, इतना ही, लोभ ज्यादा ठीक नहीं होता, 'पंडितजी प्रसन्न मन से बोले।'

यमराज जी को विदा करके पंडितजी बहुत प्रसन्न रहने लगे। उनको दोस्त से वचन मिल ही गया था। उन्होंने मन-ही-मन में सोचा कि जब चिट्ठी आएगी, तब प्रभु स्मरण में लग जाऊँगा, तब तक क्यों न परिवार को सुख-समृद्धि से भर दूँ, लगे झूठ बोलने और लोगों को ठग कर परिवार की गाड़ी चलाने।

उन्होंने तो पाप धर्म चिट्ठी पर छोड़ रखा था। चिट्ठी को तो न आना था और न आई, पंडितजी चिट्ठी के ही इंतजार में रह गये और उनकी मृत्यु होने पर उनके दोस्त यमराज, आए तो अपने दोस्त पर आक्रोश व्यक्त करते हुए बोले कि 'आप कैसे दोस्त हैं, आपसे तो अच्छे हमारे पृथ्वी के लोग हैं, जो कहते हैं कि दोस्त वही जो विपत्ति में काम आए पर आप एक छोटा-सा काम अपने दोस्त के लिए नहीं कर पाए। मैंने आपकी चिट्ठी की आशा में कितना पाप कर डाला, लेकिन आप तो विश्वासघाती निकले, दोस्ती के नाम पर कलंक लगा दिया आपने।" '

दोस्त, ध्यान से सुनो, यमराज ने कहा, मैं प्रत्येक मनुष्य का दोस्त हूँ और हर एक को चिट्ठी लिखता हूँ। आपको भी मैंने तीन चिट्ठी लिखी, लेकिन, 'मुझे तो एक भी चिट्ठी नहीं मिली' राधेश्यामजी बात काटते हुए बोले।

'आपको तीनों पत्र मिले हैं' यमराज ने कहना शुरू किया, यहाँ न तो कागज होता हे और न ही कलम, लेकिन हम लोग हर प्राणी को सावधान कर देते हैं, जैसेकि मैंने आपको पहला पत्र तब दिया था, जब आपके बाल



पकने शुरू हो गए थे, जब आप उनको नहीं पढ़ सके, तब मैंने दूसरा पत्र डाला, वह था, आपके दाँत का टूटना, मैंने अंतिम पत्र लिखा, जबकि आपको नींद बहुत कम आने लगी, अब आप ही बताइए कि मैं कैसे विश्वासघाती हूँ। अगर कोई पढ़ ही न पाए तो मैं क्या करूँ, आप तो अपने को पंडित कहते थे और लोगों को सुनाते थे, काला अक्षर भैंस बराबर किन्तु दुःख की बात है कि आपने यह चरितार्थ अपने लिए ही कर डाला।

बेचारे पंडितजी क्या करते अपनी मूर्खता समझ रुआंसा हो करुण स्वर में बोले, दोस्त, धर्मराज के पास थोड़ी बहुत पैरवी कर दीजिए ताकि मुझे यातनायें न सहनी पड़े।

तब यमराज बोले—यह पैरवी पैगाम केवल पृथ्वी लोक में ही चलता है, मेरे यहाँ इसको कोई नहीं जानता, मेरे लोक में पहुँचने पर प्रत्येक प्राणी का कर्म के अनुसार ही फल मिलता है और अपना-अपना भोग भोगना पड़ता है, आपको भी अपने किए का फल भोगना ही पड़ेगा।

बच्चों, ये तो तय है कि हमें मरने के उपरान्त चन्द्रगुप्त के दरबार में कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक प्राप्ति होती है अथवा 84 लाख योनियों में हमें अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है। हम बहुत भग्यशाली हैं कि भगवान श्री कल्कि ने इस घोर कलियुग में अपना नाम देकर हमें जो सौभाग्य प्रदान किया है उसे सार्थक करने के लिए हमें भगवान के प्रचार कार्यों को ( साहित्य, संकीर्तन, मूर्ति स्थापना इत्यादि ) आगे बढ़ कर करना होगा जिससे भगवान श्री कल्कि की संसद में स्थायी सदस्यता मिल सके और हमें पापों के लिए यमराज के दरबार में उपस्थित न होना पड़े। एक कल्कि भक्त को यह स्वपनानुभव भी हुआ है कि भगवान कल्कि के प्राकृटय के उपरान्त उनकी संसद में उन सदस्यों को विशेष स्थान प्राप्त होगा जिन्होंने भागवान के लिए कार्य किए है।

# बीस लाख रुपये बड़े या बुद्धि

अगर कहीं बीस लाख रुपये रखे हों और साथ ही वहाँ बुद्धि रखी हो तो आप क्या उठायेंगे ? बीस लाख रुपये या बुद्धि ? यही सोचेगे कि इस रुपये से तो जिन्दगी बन सकती है, परन्तु इसके विपरीत बुद्धिमान प्राणी बुद्धि ही उठायेगा क्योंकि वह यह योचेगा कि बिना बुद्धि के इस संबंध में तो यह रुपया भी बेकार है बिना बुद्धि के इस संबंध में तो यह रुपया थोड़े ही समय में समाप्त हो जाएगा। अतः बुद्धि श्रेष्ठ है। बुद्धि से तो रुपया कमाया जा सकता है साथ ही नाम भी। एक किस्सा बताता हूँ।

किसी समय एक गाँव में दो मित्र रहते थे—रमेश और मोहन। रमेश गरीब था और हमेशा कहता था कि बुद्धि बड़ी है। इसके बिना दुनिया में कुछ नहीं हो सकता। परन्तु मोहन अमीर था और वह हमेशा यही कहता था कि पैसा बड़ा है। इसके बिना इस विश्व मे गुजारा नहीं चल सकता। मोहन रमेश को हमेशा बताता कि मेरे पास बीस लाख रुपये हैं जिससे मैं बहुत कुछ खरीद सकता हूं इसलिए पैसा ही सबसे बड़ा है। परन्तु रमेश हमेशा अपनी बात पर अड़ा रहता। अपनी-अपनी बात को सिद्ध करने के लिए दोनों अपने राज्य के महाराज के पास गये और बोले, ''महाराज, हमारे प्रश्न का उत्तर दीजिए कि बुद्धि बड़ी है या पैसा ?'' तब महाराज ने कुछ सोचा और उनके प्रश्न का उत्तर न देकर उन्होंने रमेश को एक पत्र दिया और कहा कि तुम दोनों महाराज मधुसूदन के राज्य में जाओ और उन्हें यह पत्र दे दो। महाराज ने उन्हें दो सिपाहियों के साथ महाराज मधुसूदन के राज्य में भेज दिया। रास्ते में मोहन ने फिर रमेश से अपनी बात दुहराई। लेकिन रमेश नहीं



माना। जब वे महाराज मधुसूदन के राज्य में पहुँचे। वहाँ दोनों राज दरबार चले गए और दरबारी से महाराज से मिलने की इच्छा प्रकट की। जब महाराज ने उन्हें बुलाया और वह पत्र पढ़ा तो उन्होंने उन दोनों को अगले दिन सुबह दस बजे फाँसी देने की आज्ञा दे दी। उन दोनों को सिपाहियों ने कारागाद में बन्द कर दिया। रात को मोहन ने द्वारपाल को दस लाख रुपये का लालच दिया। द्वारपाल के इन्कार करने पर उसने बीस लाख देने का वायदा किया। फिर भी द्वारपाल नहीं माना और हार मानकर मोहन रमेश के पास गया और बोला मैं तो हार गया अब तू ही बुद्धि का कमाल दिखा। तब कुछ सोचकर रमेश ने द्वारपाल से कहा हमारी अंतिम इच्छा है कि हमें दस बजे की जगह नौ बजे फाँसी दे दी जाए। यह बात सुनकर द्वारपाल चकित रह गया और भागा-भागा महाराज के पास गया। यह बात सुनकर महाराज भी चकित रह गए और कारण जानने के लिए वह भागे-भागे उन दोनों के पास आये और उन से पूछा कि तुम जल्दी क्यों मरना चाहते हो ? तब रमेश ने कहा कि महाराज हम इसका कारण नहीं बता सकते। यह सुनकर महाराज कारण जानने के लिए और उत्सुक हो गए और बोले अगर तुम नहीं बताओगे तो मैं तुम्हारी इच्छा स्वीकार नहीं करूँगा। यह सुनकर रमेश बोला, ''महाराज, अगर आप हमें नौ बजे फाँसी देंगे तो अगले साल इसी समय आपकी मृत्यु हो जाएगी और हम यहाँ के राजकुमार बनकर पैदा हो जाएँगे।'' यह सुनते ही महाराज मधुसूदन ने उन्हें सीमा से जल्द-से-जल्द बाहर फेंक देने का हुक्म दिया क्योंकि उसने सोचा कि अगर यह मेरी सीमा में मर गए तो अगले साल मैं भी मर जाऊँगा। जब सिपाहियों ने सीमा से

द्वापर युग में अज्ञातवास के समय सुरंगों से होते हुए भगवान् श्रीकृष्ण पाण्डवों के साथ यही मन्त्रण करते थे। भगवान् श्री कृष्ण की बहन योगमाया द्वापर युग में ही नहीं वरन् चारों युगों में इनकी आद्या शक्ति है। अत: भगवान् ने इस स्थान को अपनी कृपा से और भी अत्याधिक शक्तियाँ प्रदान की। ज्यादा क्या कहें, इस युग में तो कल्कि रूप में जो अपना श्री विग्रह ( मूर्ति ) योगमाया में प्रतिष्ठित किया है वह तो बहन और भाई का अपना ही अलौकिक मिलन और विशेष वृतान्त लिए है।

भगवान् की अपूर्व लीला तो देखिए कि जयपुर के कुशल शिल्पकारों से मूर्ति का मुँह टेढ़ा हो गया और मूर्ति स्थापना के पहले ही मूर्ति शिल्पकारों ने कहा कि यह हमसे गलती तो हुई है परन्तु यह कैसे हो गई पता नहीं, हम दूसरी मूर्ति बना देते हैं, तो मूर्ति ने मुस्कुराना शुरू कर दिया—जिसे देख सभी भक्त मूर्ति को आदर सहित लेकर आए। इसके लिए 'जब मूर्ति हँसी' श्री कल्कि पुराण परिशिष्ट में पृष्ठ 53 लेख देखें।

दो सदी पूर्व आगरे के लालकिले से सारे भारतवर्ष में औरंगजेब ने जो हिन्दुओं पर कहर ढाए, धर्म पर कुठाराघात किए, मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनवाई यह सर्वविदित है। उसका यह प्रण था कि जब तक एक बोरी जनेऊ व चोटी ( सिर के बाल ) उसके सामने प्रस्तुत नहीं किए जाएँगे वह भोजन नहीं करेगा अर्थात् जबरदस्ती बर्बरतापूर्वक हिन्दुओं को मुसलमान ( इस्लाम धर्म को मानने वाले ) बनाया जाता था।

एक बार उसकी छावनी दिल्ली में योगमाया स्थल से कुछ दूरी पर लगी हुई थी। तब उसे यहाँ के मन्दिर के बारे में पता चला तो उसने मन्दिर को विध्वंस करने का हुक्म दिया। उसी दिन शाम को बहुत तेज बवंडर आया जिसमें उनके तम्बू उड़ गए और सभी हताश हो गए। रात को स्वप्न में उसे एक कन्या दिखी जो बोली—यदि तू अपने निर्णय पर अटल रहा तो मैं तुझे तहस-नहस कर दूँगी। बवंडर की मार से घबराए औरंगजेब को रात के स्वप्न ने पूरी तरह हिला के रख दिया। उसने सुबह उठते ही सब मौलवियों की सभा बुलाई और सबके सामने रात वाले स्वप्न को सुनाकर उसका अर्थ जानना चाहा। उस निर्दयी बादशाह औरंगजेब की बात सुनकर सब मौलवियों की गर्दन झुक गई। किसी ने भी उसकी बात का जवाब नहीं



दिया क्योंकि वे जानते थे कि कल के बवंडर के बाद यदि सच कहा गया तो बताने वाले की गर्दन कलम कर दी जाएगी। बवंडर से वे सब भी अन्दर से हिले हुए थे। तभी सभा में एक फकीर खड़ा हुआ और बोला यदि बादशाह सलामत मेरी गर्दन की सलामती का वादा करें तो मैं इसका जवाब दे सकता हूँ। बादशाह ने जान बक्शने का वादा किया तो वह बोला, जहाँपनाह स्वप्न में जो आपने कन्या देखी वह योगमाया ( महाशक्ति ) महारानी है। उन्होंने ही बवंडर के द्वारा आपको पूर्व चेतावनी दी थी कि आप अपना मंत्रियों द्वारा सुझाए गए इस दिव्य स्थान को उजाड़ने का गलत निर्णय वापिस लें और आदर के साथ माँ की हस्ती को मान्यता प्रदान कर अपनी छावनी को आगे बढ़ने का हुक्म दें। निर्दयी एवं शक्तिशाली औरंगजेब ने ऐसा ही किया और एक पंखा योगमाया मन्दिर में भेंट कर माफी की अरदास माँग कर विजय की चाहना करके अपनी फौज को आगे बढ़ने का हुक्म दिया। योगमाया की कृपा से वह जिस संग्राम में जा रहा था वहाँ बहुत कम उम्मीद के बावजूद वह विजयी हुआ। इसके बाद तो यह मान्यता प्रचलित हो गई कि हर हिन्दू व मुस्लिम राजा जब भी युद्ध के लिए निकलता योगमाया मन्दिर में पंखा भेंटकर विजय का आशीर्वाद प्राप्त कर निकलता। आज भी योगमाया महारानी के अनुपम भवन में कई राज्यों से पंखा चढ़ाने की परम्परा चली आ रही है।

ज्यादा क्या कहें श्री कल्कि बाल-वाटिका द्वारा सन् 2002 में 'श्री कल्कि दिग्विजय नाटक' प्रस्तुतिकरण से पहले स्वप्न अनुभव में योगमाया जाकर उसकी सफलता का आशीर्वाद लेना और सन् 2004 में भी श्री कल्कि लीला मंचन से पहले आशीर्वाद लेना सफलता का परिणाम लेकर सामने आया, यह आप देख ही चुके हैं।

# विशेष शक्तियाँ संजोए भगवान् श्री कल्कि की श्री कालका मन्दिर में मूर्ति स्थापना 19 दिसम्बर 2004 को सम्पन्न

अरावली पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियों पर शताब्दियों से भारत का राज्य रहा है। जिसे आज दिल्ली कहा जाता है। महाभारत काल में इसे हस्तिनापुर कहा जाता था। यही के सूर्यकूट पर्वत पर स्थित कालका अथवा 'कालिका' मन्दिर की गणना भारत के प्राचीनतम सिद्ध पीठ और जयन्ती काली पीठ के नाम से की जाती है। ऐसा कहा जाता है कि महाबली असुरों के द्वारा सताए जाने पर सृष्टि के रचयिता स्वयं ब्रह्मा जी की सलाह पर सभी देवताओं ने सामूहिक रूप से शिव और पार्वती की आराधना की। उन पर कृपा कर माँ पार्वती ने अपनी शक्ति से कौशिकी अर्थात् चंडिका देवी को प्रकट किया। चंडिका ने अनेक असुरों को मार गिराया। चंड और मुंड, दैत्यों के मारे जाने पर दैत्यों के प्रतापी राजा शुंभ एवं निशुंभ के मन में बड़ा क्रोध हुआ और उसने सम्पूर्ण दैत्यों की सेना को युद्ध के लिए कूच करने की आज्ञा दी। चंडिका ने अपने धनुष की टंकार से पृथ्वी और आकाश के बीच का भाग गुँजा दिया तथा देवी के सिंह ने भी जोर-जोर से दहाड़ना शुरू कर दिया। उस तुमुल नाद को सुनकर दैत्यों की सेनाओं ने चारों ओर से आकर चंडिका देवी, सिंह तथा काली देवी को क्रोध पूर्वक घेर लिया। इसी समय असुरों के विनाश तथा देवताओं को अभय प्रदान करने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कार्तिकेय तथा इन्द्र आदि देवताओं की शक्तियाँ जो अत्यन्त पराक्रम और बल से सम्पन्न थीं, उनके शरीरों से निकलकर उन्हीं के रूप, वेशभूषा, वाहन, साधनों से सम्पन्न हों, असुरों से युद्ध करने के लिए चंडिका देवी के पास



आ गई। तब महादेव जी के आदेश पर असुरों का संहार करने के लिए चंडिका देवी में से उग्र शक्ति प्रकट हुई जो गीदड़नियों की भाँति आवाज करने वाली थी। चंडिका देवी ने भगवान् शिव को शुम्भ-निशुम्भ के पास दूत बनाकर भेजा, कि हे दैत्यों यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो पाताल को लौट जाओ वरना मेरी शिवाएँ ( योगिनियाँ ) तुम्हारे कच्चे माँस से तृप्त होंगी। चूंकि भगवान् शिव ने दूत का कार्य किया, इसलिए वह शिवदूती के नाम से संसार में विख्यात हुई। महादैत्य भगवान् शिव के मुँह से देवी के वचन सुनकर क्रोध में भर गए और जहाँ कात्यायनी विराजमान थीं उन पर बाण, शक्ति, त्रुष्टि आदि अस्त्रों-शस्त्रों की बौछार करने लगे। लेकिन क्रोध से भरे हुए मातृगणों को बड़े-बड़े असुरों का मर्दन करते देख दैत्य सैनिक भाग खड़े हुए।

रक्तबीज कथा : इस पर रक्तबीज नामक महादैत्य क्रोध से भरकर युद्ध करने के लिए आया। उसके शरीर से जब भी रक्त की बूँद पृथ्वी पर गिरती तब उसी के समान शक्तिशाली एक दूसरा महादैत्य पैदा हो जाता था। उसके शरीर से जितनी भी बूँदे गिरी उतने ही दैत्य रक्तबीज के समान ही वीर्यवान, बलवान तथा पराक्रमी, अत्यन्त भयंकर अस्त्र-शस्त्रों से प्रहार करते हुए वहाँ मातृगणों के साथ घोर युद्ध करने लगे। इस प्रकार उस महादैव्य के रक्त से प्रकट हुए असंख्य असुरों द्वारा सम्पूर्ण जगत व्याकुल हो गया। इससे देवताओं को बड़ा भय हुआ। देवताओं को उदास देख चंडिका ने काली से कहा, ''चामुण्डे! तुम अपना मुख और भी फैलाओ तथा मेरे शस्त्रपात से गिरने वाले रक्त बिंदुओं और उनसे उत्पन्न होने वाले महादैत्यों को तुम अपने इस उतावले मुख से रण में विचरती हुई खाती जाओ'' ऐसा करने से रक्तबीज का सारा रक्त क्षीण हो जाने पर वह स्वयं ही नष्ट हो जाएगा। रक्तबीज के घायल शरीर से बहुत सा रक्त गिरा किन्तु ज्यों ही वह गिरा त्यों ही चामुण्डा ने उसे अपने मुँह में ले लिया। रक्त गिरने से काली के मुख में जो महादैत्य उत्पन्न हुए उन्हें भी वह चट कर गई और उसने रक्तबीज का रक्त भी पी लिया। इस प्रकार शस्त्रों के प्रहार से रक्तहीन महादैत्य रक्तबीज पृथ्वी पर गिर पड़ा। रक्तबीज का रक्तपान करने के लिए माँ काली ने अपने मुख का विशेष विस्तार किया था। उनके विकराल

फल सत्य संकल्प की आधार भूमि सिद्ध हुआ। सम्भल के रास्ते में वीना ने महामाई कालका जी के सिद्ध पीठ में भंडारा करने की बात चलाई। सब मिलकर भंडारे के रुपए देने लगी। तभी अचानक न जाने क्या सोचकर श्री कल्कि प्रभु की इच्छानुसार श्री गुरुजी ने मेरे मुंह से कहलवाया कि सम्भल की पावन भूमि पर संकल्प करके रुपए देंगे सबने यह बात मान ली। सम्भल में भगवान् श्री कल्कि के दर्शन करने के पश्चात् संकल्प-कार्य पूरा किया गया।

उस समय श्री कल्कि जी एवं गुरुजी ने मेरे द्वारा ये शब्द कहलवाए— ''हे कल्कि भगवान् महाराज यह जो रुपए हम कालका-माई के भंडारे के लिए दे रहे हैं, इसका पूर्ण फल हम आपके श्री चरणों में सादर समर्पित करते हैं, इसे स्वीकार कीजिए, भूमि का भार उतारिये, गौ ब्राह्मणों की रक्षा कीजिए, शीघ्र माँ कालका की शक्ति के साथ पृथ्वी पर प्रकट होइए, अधर्म का नाश कीजिए, धर्म की स्थापना कीजिए।''

भंडारे के फल अर्पण के दिव्य फल स्वरूप श्री कल्कि जी एवं श्री गुरुजी ने मेरे द्वारा पुनः वीना से यह कहलवाया कि भंडारे वाले दिन क्या मैं कल्कि जी का संकीर्तन माँ कालका के प्रांगण में करवा सकती हूँ? यदि प्रभु को बुलाने के लिए समवेत पुकार होगी तो महामाई अति प्रसन्न होगी। मेरी कालका माई ने ही वीना को कल्कि जी के कीर्तन के लिए राजी कर लिया।

मेरी एक सखी मेघना गोयल 24 अक्तूबर, 2004 को भगवती के जागरण में गई। वहाँ जागरण कराने वाले महन्त जी ने सभी भक्तों से एक रुपया हाथ में लेकर मनोकामना के साथ अरदास लगाने को कहा, तब श्री गुरुजी की आन्तरिक प्रेरणा से सुश्री मेघना ने माँ के चरणों में प्रार्थना की—'हे माँ यदि आपकी प्रसन्नता कल्कि जी की पुकार में है तो ऐसा कर दो कि जहाँ भी आपकी जय बोली जाए, वहाँ कल्कि भगवान् की भी जय बोली जाए।' ये पुकार भी संकीर्तन का आधार बनी।

मेरी एक सखी मुक्ता को, जो महावीर नगर में रहती है, उसे हमारे गंगा जी के संकल्प एवं कालका जी के भंडारे के बारे में कोई भी जानकारी नहीं थी। उसे हमारे उत्सव के तकरीबन दो सप्ताह पहले अनुभव आया कि



23 नवम्बर, 2004 को श्री कल्कि भगवान् का महोत्सव हो रहा है जिसमें श्री कल्कि बाल-वाटिका के बच्चे शामिल हैं।

जैसाकि मैंने ऊपर जिक्र किया है कि दुर्गा माता की उपासक सखियों से भगवान् श्री कल्कि के संकीर्तन की सहमति लेने के बाद मैंने छोटे भाई (पद्माशरण गोयल) को फोन किया परन्तु पाँच या छः दिन के प्रयास के बाद भी असफल रहने पर मैंने इस प्रार्थना के साथ फोन मिलाया कि 'हे कल्कि भगवान्! हे कालका माँ! 23 नवम्बर, 2004 को जो भी आयोजन हो रहा है यदि उसमें आप दोनों की प्रसन्नता है तो छोटे भाई से बात करवा दो।' तब एक बार में ही फोन मिल गया। मैंने जब छोटे भाई से कहा कि आपको कालका जी के मन्दिर में 23 नवम्बर को संकीर्तन करना है तो वह हक्के-बक्के से होकर बोले कि यह कैसी भगवान् की इच्छा है, मैं अपने सारे कार्यक्रम को नियोजित करके 23 तारीख को श्री कल्कि कीर्तन में सुबह से ही उपस्थित रहूँगा।'

23 नवंबर, 2004 को कालका माई के प्रांगण में श्री कल्कि संकीर्तन पुकार रूप में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। हमारे परम पूजनीय श्री ओमप्रकाश मामाजी एवं आदर्श मामाजी की अनुभवी एवं पारखी निगाहें माता कालका के परिसर के अन्दर एवं बाहर श्री कल्कि भगवान् के लाइट वाले सुन्दर बोर्ड की कल्पना कर रही थी और श्री कल्कि जी एवं भगवती इनके सत्य संकल्प की अगली सीढ़ी का मुझे निमित्त बनाने की कृपा प्रदान कर रही थी कि अचानक गुरुजी ने मुझसे कहलवाया कि यदि माँ के भवन में कल्कि जी की मूर्ति लग जाए तो कितना अच्छा हो? माता कालका और कल्कि जी के पावन मिलन की शुभ घड़ी निकट आ चुकी थी। माँ कालका के महन्त भक्त सेवक श्री दिनेश पंडित जी ने कहा कि मन्दिर में आकर मूर्ति के लिए जगह देख लो, मूर्ति लग जाएगी। कुछ भक्तों के साथ महामाई कालका के पावन दर्शन प्राप्त हुए एवं गुरुजी ने अपनी अराध्या कालका माई से प्रार्थना करवाई कि 'हे माँ श्री कल्कि जी की विशेष महिमा के अनुरूप प्राण प्रतिष्ठा के लिए उपयुक्त स्थान आप ही निर्धारित करवाना।' तब महिमामई माँ ने श्री दिनेश पंडित जी द्वारा ही कहलवा दिय कि अमुक स्थान ठीक रहेगा, जो भी महामाई के दर्शन करके निकलेगा,

रखें, हमें कल्कि जी का काम करना है। इसके बाद 5 रुपए अथवा इसके बताशे का प्रसाद भगवान गौरीशंकर के किसी भी मंदिर में उनकी पिंडी पर वासुकि जी को नमस्कार करके चढ़ा/चढ़वा दीजिएँ।'

(ख) जब दो सर्प आपस में लिपटे हुए हों य उनके डंक मारने से मृत्यु दिखे, तो संकल्प ऊपर जैसा ही होगा व प्रार्थना होगी— हे सर्प महाराज मुझे विकट शारीरिक परेशानियों से बचाईये। मुझे कल्कि जी का काम करना है।

(ग) इस केस में 5 रुपए यमुना जी का भी संकल्प करेंगे—'हे यमुना महारानी, मुझे नहीं मरना, मुझे जीवनदान दीजिए, मुझे कल्कि जी का काम करना है। मैं 5 रुपए संकल्प का हाथ लगा रही हूँ/रही हूँ। इससे जिसका जो भाग है उसे दिलवा देवें। मुझे कल्कि जी का काम करना है।'

(घ) जब स्वप्न अनुभव में सर्प डंक मारता हुआ दिखे इस दशा में ऊपर बताई विधि से 5रुपए का सिक्का लेकर ये संकल्प करें कि—हे शंकर भगवान मैं आपका अभिषेक करूंगा/करूँगी। मुझे कल्कि जी का काम करना है। इस दशा में अभिषेक के लिए पीतल अथवा स्टील के लोटे में थोड़ा दूध/दही/शहद/बूरा/गंगाजल/दो चार बूंद घी लेकर थोड़ा-थोड़ा शंकर परिवार पर चढ़ा देवें जैसे—गणेश जी, शंकर भगवान, वासुकि जी ( सर्प ), पार्वती जी, कार्तिकेय जी एवं नंदी जी पर। इसके बाद ताँबे के लोटे से शुद्ध जल इन सब पर चढ़ा देवें। इसके उपरान्त संकल्प किया हुआ पाँच का सिक्का भगवान शंकर की पिंडी पर चढ़ा देवें और प्रार्थना करें कि हे भोले बाबा मुझे और मेरे परिवार को आसुरी शक्तियों से बचाईये, मुझे नहीं मरना, मुझे कल्कि जी का काम करना है।

8. पितृों का दिखना अच्छा, बीमार परेशानी बताते हुए दिखना कैसा होता हैं ? पितृों का दिखना किसी भी दशा में अशुभ नहीं है अपितु यह हमारे अच्छे-बुरे अथवा आने वाले समय को दर्शाता है।



(क) पितृों का प्रसन्न दिखना दर्शाता है कि आप जिस कार्य में लगे हुए हैं, वह काम हो जाएगा, लगे रहें। इसमें उनकी भी प्रसन्नता है उनको जल द्वारा तर्पण कर देवें, इससे उन्हें प्रसन्नता मिलेगी और आपका काम जल्द बनेगा।

(ख) जब पितृ बीमार दिखें, तब उन्हें तर्पण करें। एक माला जय श्री कल्कि जी, जय माता की करके प्रार्थना करें कि हे कल्कि भगवान मेरे पितृ जो बीमार हैं, उन्हें शक्ति दे ऐसा दो/चार दिन करने के बाद आपको वह स्वस्थ और प्रसन्न दिखें, उसके बाद आप माला बंद कर देवें।

(ग) जब उनके द्वारा परेशानी वाली बात आप सुनकें अथवा तनाव में दिखें तो पुरुष पितृ के दिखने पर एक मर्दानी धोती, बनियान, रूमाल, अंगोछा ( बन पड़े तो कुर्ता कपड़ा ) 5 रुपए का संकल्प करें और ऊपर वाली विधि अनुसार प्रार्थना करें कि मुझे और मेरे परिवार से जो गलती हुई, उसे क्षमा करें, हमें कल्कि जी का काम करना है। जब ( स्त्रीपितृ ) दिखें, तो स्त्री कपड़े संकल्प कर हाथ लगाए—एक धोती, पेटीकोट, ब्लाउज का कपड़ा, रूमाल, 5 रुपए का सिक्का, ये सब बराबर के मंदिर में भेज देवें। इसमें आपका खर्चा 120/-रुपए तक का आएगा, वैसे डॉक्टर वकील के पास जाओ तो 200 से 500 रुपए तक का मामूली खर्चा आ ही जाता है।

9. यदि अनुभव में घर में शेर घूमता दिखाई दे, अजगर ( साँप ), छिपकली दिखाई दे या आग लगती दिखाई दे तो—ऐसी दशा में आप भगवान शंकर का ऊपर बताए तरीके से सूक्ष्म रूप में पंचामृत द्वारा रुद्राभिषेक करें। बार-बार दिखना व ज्यादा परेशानी लगे तो 5 हवन का बताए तरीके से संकल्प लेवें। इस मंत्र की 1 माला का हवन प्रतिदिन करें।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम पुष्टिवर्धनम्।
ऊर्वा रुकमिव बन्धनान् मृत्युमोक्ष माम्रतात॥

हवन करने के बाद शंकर भगवान से प्रार्थना करनी है कि हे शंकर भगवान मुझे व मेरे परिवार को विनाश से बचाएँ, मुझे/हमें श्री

करेंगे कि हे माँ! जो अतृप्त शक्ति मुझे परेशान कर रही है उसको उसका भाग दिलवा दें मुझे कल्कि जी का काम करना है।

## सत्यनारायण जी

( 1 ) जब घर और व्यापार में बरकत न रहे ऐसा लगता हो कि अब तो घर में भी धन-धान्य का अभाव सा हो गया, कैसे दो वक्त के भोजन की व्यवस्था हो तो।

( 2 ) जब संतान प्राप्ति में बाधा हो तो प्रतिमाह पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा करें, भगवान श्री कल्कि के बताये अनुसार कटोरी में थोड़ी सी बूरा रखें, कथा के बाद उसे एक पुड़िया में बांधकर अगली बार की कथा के लिये रख लें, अगली बार रखी हुई बूरा प्रसाद में मिला देवें, और फिर से 2-3 चम्मच बूरा कटोरी में अगली बार प्रसाद के लिये कथा में रखें और इस कथा का फल सत्यनारायण भगवान के चरणों में यह कहकर अर्पण करें कि हे भगवान! इस कथा एवं व्रत का फल आपके अर्पण है। मेरे यहाँ धन-धान्य की वृद्धि, संतान प्राप्ति ( लड़की/लड़का ) में बाधा को दूर कीजिए मुझे कल्कि जी का काम करना है।

## गाय माता

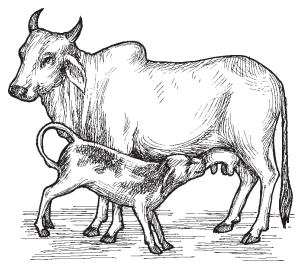

गाय माता अब से नहीं अनादिकाल से हमारी रक्षा करती आई है। अनादिकाल से लेकर आज तक वैष्णव घरों में रसोई में सबसे पहले गाय माता की रोटी बनाई जाती हे, इस समय ( कलियुग के प्रभाव से ) इनकी महिमा कम हो गई है। लेकिन गाय की ममता में कोई कमी



नहीं हुई है।

गऊ माता से अलक्ष्मी/दरिद्रता को दूर करने के लिये एवं धन-धान्य की वृद्धि के लिए। बन पड़े तो जरा मोटी चार रोटी ( बन पड़े तो शुभ के रुपयों में से ही 5/10 किलो आटे की बोरी मंगा लें और इसमें से ही प्रतिदिन रोटी बनायें तो फल शीघ्र एवम् अधिक मिलेगा। ) पर घर में बना साग अथवा थोड़ी सी चीनी रखकर प्रार्थना करें हे गाय माता मुझे व मेरे परिवार को परेशानियों से बचाइये मुझे कल्कि जी का काम करना है तब आप उन परेशानियों में से निकल जायेंगे।

जब कभी कोर्ट कचहरी या कोई परेशानी वाले स्थान पर जाना पड़े तो गाय माता को कोई भी हरी सब्जी भेंट करके कहें—हे मां, मेरा काम करा दें, ( शारीरिक बीमारी/कष्ट के लिये बुधवार के दिन पालक गाय माता को खिलायें ) मुझे स्वास्थ्य दें, मुझे कल्कि जी का काम करना है।

दूध, एक चम्मच दही, घी, गंगाजल, चीनी, शहद मिला लेवें।

इस पंचामृत को महामृत्युंजय मंत्र का जाप करते हुए चढ़ा देवें।

परिस्थिति—

( 2 ) जब आपको अनुभव में साँप दिखे जैसे साँप निकल कर भाग रहा है ऐसी स्थिति में 1 रुपए के बताशे नाग देवता को भोग लगा दीजिए और प्रसाद वहीं छोड़ दीजिए।

( 3 ) जब अनुभव में साँप फन फैलाए दिखे या साँप को देखकर आपको भय प्रतीत होवे ऐसी स्थिति में रुद्राभिषेक करना होगा।

यदि आपको पुनः साँप दिखे तो आपको पुनः रुद्राभिषेक करना होगा।

प्रार्थना—रुद्राभिषेक के बाद प्रार्थना करनी है, हे भगवान मेरी रक्षा कीजिए, अब और दुख सहने की मुझमें शक्ति नहीं है, मेरी परेशानियों को दूर कीजिए, मुझे कल्कि जी का काम करना है।

( 4 ) जब अनुभव में आपको कोई आपके पूजा के स्थान पर पेशाब करता दिखे तो शंकर भगवान पर बेल पत्र चढ़ाएँ।

( 5 ) जब व्यापार में पूरी मेहनत के बाद भी किसी भी प्रकार मुनाफा न हो रहा हो और आप पूरी तरह से तनाव ग्रस्त हों।

( 6 ) नौकरी में पूरी मेहनत के बाद भी मालिक की डाँट मिल रही हो ऐसी स्थिति में—

हवन—11 आहुतियाँ कल्कि जी की ॐ नमः श्री कल्कि भगवते म्लेच्छ दल हन्त्रे फट् स्वाहा।

5 आहुतियाँ गायत्री मंत्र की

5 आहुतियाँ महामृत्युंजय मंत्र की देनी हैं।

प्रार्थना—हे प्रभु दुराचारी शक्तियों को हटाओ जो मेरा बुरा कर रही हैं। मुझे परेशान कर रही हैं, मुझे कल्कि भगवान का काम करना है।

## दुर्गा जी

जब अनुभव में आपको पुलिस वाले दिखें, आपको ढूँढ रहे हैं ऐसी स्थिति में 10-10 पूरी दो जगह और 6 पूरी एक जगह, उन पर 1-1 रुपए



का सिक्का रख दीजिए और मंदिर में दुर्गा जी का भोग लगाकर उस सारे प्रसाद को वहीं छोड़ दीजिए।

प्रार्थना—हे माँ मुझे जो पुलिस वाले दिखे हैं उनसे मेरी रक्षा कीजिए, मुझे कल्कि जी का काम करना है।

## भैंरो जी

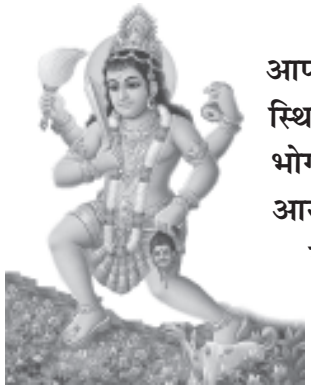

( 1 ) जब आपको अनुभव में दिखे कि कोई आप पर जादु-टोना, टोटका कर रहा है तो ऐसी स्थिति में भैंरों जी को एक रुपया रख कर रोट का भोग लगा दीजिए और प्रार्थना कीजिए कि हे प्रभु आसुरी, तांत्रिक शक्तियों से मुझे बचाइए, मेरी रक्षा कीजिए, मुझे कल्कि जी का काम करना है। प्रसाद बाँट दीजिए और थोड़ा सा अपने लिए बचा लीजिए।

( 2 ) जब अनुभव में कोई ऐसा आदमी आपको पैसा दे रहा हो जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते तब आपको भैंरों जी का संकल्प करके 1 रुपया रखकर रोट का भोग लगाना पड़ेगा इससे आपको पिछले जन्म का नहीं इस जन्म का प्राचीन रुपया मिल सकता है।

पैसा मिल जाने पर भैंरों जी का शुक्रिया कर देवें।

## सरस्वती जी

( 1 ) जब अनुभव में दिखें हमें इम्तिहान देना पड़ रहा है और तैयारी कुछ भी नहीं है डर लग रहा है।

प्रतिदिन आप तनाव में जी रहे हैं। एक रुपए के बताशे का भोग लगाकर प्रार्थना कीजिए कि हे माँ मुझे ज्ञान दीजिए, तनाव दूर कीजिए, मुझे कल्कि जी का काम करना है।

सत-रज-तमका प्रतीका होगा, उसके मध्य में श्री नारायण का सुदर्शन चक्र होगा, वह ध्वज एक कश्मीरी ब्राह्मण लहराएगा किन्तु भारत को मानसिक दासता से मुक्ति कुछ समय पश्चात् मिलेगी। ( 15 अगस्त, 1947 को पं. जवाहरलाल नेहरु ने लालकिले पर जो ध्वज लहराया, वह हाथ के कते-बुने सूत का था। वे कश्मीरी ब्राह्मण तो थे ही किन्तु अंग्रेजी-भाषा-भूषा, ब्रिटिश तर्ज का संविधान आदि सभी मानसिक दासता के ही तो प्रतीक हैं जो अभी तक समाप्त नहीं हुए हैं। )

4. महाभारत पर महाभारत आएँगी। भयंकर युद्ध होगें। घातक शस्त्रास्त्र चलेंगे। गौमांसभक्षी गौमांसभक्षियों से लड़ेगे। खर-दूषण की भाँति परस्पर कटकर मरेंगे। भारतवर्ष नवीन शक्ति बनकर उभरेगा।
5. सुधार के मार्ग बंद हो चुके हैं, संहार होगा। ( ये भविष्यवाणियाँ प्रथम विश्व युद्ध से भी पूर्व की हैं। )



# भूमि भार उतारने में व्यस्त भगवान श्री कल्कि द्वारा दिए गए बारह देवी-देवता

जिंदगी का दूसरा नाम ही परेशानी है। हर दिन पहले से ज्यादा मुश्किलें लेकर आता है। जीवन में पग-पग पर बहुत सी परेशानियाँ आती हैं जैसे-पैसे की, शादी की, बच्चों के एडमीशन की, पति की, घर की, बीमारियाँ आदि जिसका जो अराध्य होता है वह उसी देवी-देवता से अपनी परेशानियाँ कहता है। जैसे सुभाष बोस की आजाद हिन्द फौज थी वह उस फौज के संरक्षक थे, फौज उनके कहे अनुसार काम करती थीं, उसी प्रकार भगवान श्री कल्कि की पूजा करने ( नाम जाप, यज्ञ, हवन, पुकार ) आदि करने से वैसे तो भी सनातन धर्म के देवी-देवताओं की मदद मिलती है लेकिन बारह देवी-देवताओं की ( गणेश जी, हनुमान जी, गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी, दुर्गा जी ) ( काली माता ) सरस्वती जी, शंकर जी, यमुना जी, भैंरो जी, सूर्य, लक्ष्मी जी की विशेष कृपा मिलती है।

प्रधानमंत्री के मंत्री मंडल में अगल-अगल मंत्री अलग-अलग विभाग सँभालते हैं लेकिन हर कार्य प्रधानमंत्री के कहे अनुसार ही होता है, प्रत्येक विभाग और उसमें नियुक्त मंत्री कोई भी स्वतंत्र फैसला नहीं ले सकते। इसी प्रकार कल्कि-भगवान की भी अपनी एक कैबिनेट है जिसमें उन्होंने 12 देवी-देवताओं को नियुक्त किया है। अब प्रश्न यह है कि युगावतार भगवान श्री कल्कि को स्वयं पूर्ण सामर्थ्यवान् होते हुए भी यह देवी-देवताओं की केबिनेट बनाने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? संपूर्ण पृथ्वी पर्यन्त के दुष्ट असुरों, मलेच्छों का बीज नाश करने के लिए भगवान आज युद्ध के मैदान में खड़े है परन्तु ऐसी स्थिति में भी भगवान कहते हैं ''मैं सर्वदा भक्तों के अधीन हूँ, मुझमें तनिक भी स्वतंत्रता नहीं है मेरा हृदय सीधे-सादे सरल भक्तों के हाथ में है, भक्तजन मुझसे प्यार करते हैं और मैं उनसे। अपने भक्तों का एक मात्र आश्रय केवल मैं ही हूँ। इसलिए अपने भक्तों को छोड़कर ना तो मैं अपने आपको चाहता हूँ और ना ही अपनी विनाश रहित अर्धांगनी लक्ष्मी जी को, जो मेरी शरण में आ गए हैं वे मेरे अतिरिक्त और कुछ नहीं जानते तथा मैं उनके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं

महात्मा कुंभ की शोभा यात्रा की भाँति ही अपनी-अपनी मर्यादा के अनुसार शान-सम्मान से रथ, हाथी, घोड़े, पालकी आदि में चलते थे। बाजे-गाजे के साथ अनेक कीर्तन मंडलिएँ इसमें सम्मिलित होती थीं। स्थान-स्थान पर स्वागत-सत्कार जलपान-भंडारे और रात्रि शयन की व्यवस्था रहती थी। प्रत्येक रात्रि सत्संग-कथा, प्रवचन आदि के भव्य कार्यक्रम होते थे। जिसमें सम्मिलित होने के लिये दिल्ली से बाहर की विभूतियाँ भी पधारती थीं। श्री कालकाजी, योग माया जी जैसे तीर्थों के अतिरिक्त अन्य ऐतिहासिक स्थानों के महत्व की भी चर्चा होती थी। इस यात्रा में पूज्यपाद उड़िया बाबा, श्री हरिबाबा बाँध वाले कई बार सम्मिलित हुए। पं. ज्योति प्रसाद जी टोपी वाले ( मंत्री श्री नवल प्रेम सभा ) एवं पं. श्री प्रभुदत्त जी शास्त्री इसके प्रधान संयोजक संचालक रहे। धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज का आशीर्वाद इस यात्रा को प्राप्त था।

## लोकमान्य तिलक से भेंट

किसी समय ( सन् तो याद नहीं ) 'स्वतंत्रता अपना जन्मसिद्ध अधिकार है' के उद्घोषक माननीय लोकमान्य तिलक जिन्हें लोग श्रद्धावश भगवान् तिलक कहते थे, वे दिल्ली पधारे। उनका भव्य स्वागत हुआ। यहाँ तक कि जिस 8-10 घोड़े जुती हुई बग्घी में उनकी शोभायात्रा निकल रही थी, उसके घोड़े खोलकर नवयुवक उसमें घोड़ों की भाँति लग गये।

श्री तिलक जी जिस स्थान पर ठहरे हुए थे, श्री गुरु जी अपने हाथों से गूँथकर एक पुष्पमाल उनके लिए ले गए। उन्होंने कहा कि ''मैंने अपने हाथ से माला गूँथकर केवल श्री कल्कि नारायण को ही समर्पित की है। आज उनका एक प्रतिनिधि मानकर आपको भेंट कर रहा हूँ। प्रत्युत्तर में तिलक जी ने कहा कि मैंने अपने माता-पिता, गुरुजनों, गणपति-मारुति आदि देवताओं के अतिरिक्त किसी के चरण स्पर्श नहीं किए, मैं आपको साष्टांग प्रणाम करता हूँ।''

चरणों में लोटते-लोटते तिलक जी को श्री गुरु जी ने बलपूर्वक उठाकर अपने हृदय से लगा लिया। कुछ देर दोनों ने एकांत में क्या चर्चा की, यह तो कोई नहीं जान सका किन्तु अपने द्वारा सम्पादित 'केसरी'



दैनिक पत्र पूना से प्रकाशित होता था उसमें उन्होंने लिखा कि 'इस प्रवासकाल में वस्तुतः युगपरिवर्तन का संकल्प धारण करने वाले एक दिव्य पुरुष का साक्षात्कार हुआ।'

## पूज्य शारदा माँ से भेंट

स्वामी रामकृष्ण परमहंस देव की सहधर्मिणी शारदा माँ ब्रज के तीर्थों के दर्शन करती हुई दिल्ली पधारी। उनके ठहरने का प्रबंध डा. हेमचंद्र सेन ने अपने मित्र सेठ सांवलदास ( सामलादास-बंग्ला उच्चारण ) की कोठी रोशनारा रोड सब्जी मंडी में है। ( आजकल इसमें राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय चल रहा है ) में कराया। यहीं जनवरी 1891 में स्वामी विवेकानंद जी स्वामी ब्रह्मानंद, तुरीयानंद कृपानंद, सारदानंद आदि के साथ कुछ समय ठहरे थे। बाद में खेतड़ी महाराज ने ही उन्हें शिकागों ( अमेरिका ) के सर्वधर्म सम्मेलन में भेजा। इसी सम्मेलन से स्वामी जी को विश्व व्यापी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इसी कोठी में श्री गुरु जी उनके दर्शन करने पधारे। 'वे साक्षात् भगवती जानकी हैं' यह कुछ लोगों को विदित हो चुका था। इसकी प्रमाण दो घटनाएँ हैं।

प्रथम—ठाकुर रामकृष्णदेव एक रात्रि में दक्षिणेश्वर में टहल रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि गंगाजी की ओर से एक अतीव सुन्दरी षोड़शी संपूर्ण शृंगार किये उनकी ओर बढ़ी चली आ रही हैं। 'ये कौन हैं' अभी वे विचार कर ही रहे थे कि एक वृक्ष से एक विशालकाय स्वर्णिम बंदर कूद कर उनके चरणों में आकर लोट गया। उन्होंने अत्यन्त स्नेह से उसके मस्तक पर हाथ रखा। वह प्रणाम करता हुआ तुरंत विलुप्त हो गया। ठाकुर समझ गए कि 'ये सीता हैं।' वे उनके समीप आकर उनमें प्रविष्ट हो गईं। ( श्री रामकृष्ण लीलामृत में यह प्रसंग है )

द्वितीय—एक बार श्री सारदा माँ रामेश्वरम् गईं। वहाँ उन्होंने लंका से लौटते समय जिस शिवलिंग की श्री जानकी जी ने स्थापना की थी, उसे देखते ही बोली 'जैसा रख गई थी, वैसा ही पाया।'

'ये सीता हैं अथवा नहीं' यह जानने के लिए जिज्ञासु-भाव से श्री गुरु जी भीड़ में खड़े हो गए। कुछ ही क्षणों में सारदा माँ की दृष्टि उन पर

सीताराम जी ने दिया, उसके चुकती के बदले वह कूचा सिद्दी कासिम से सीताराम बाजार बने बाजार सीताराम में लाला सीताराम की कोठी के विशाल प्रांगण में होने लगी थी। बहादुरशाह जफर के समय वह हिन्दू शक्ति के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण शाहजी के तालाब ( वर्तमान रामलीला मैदान ) पर होने ही लगी थी। किंतु इसमें बहादुरशाह का योगदान इतना ही था कि उसने विरोध नहीं किया। या यह कहिए कि उस भूखे-नंगे-बूढ़े तथाकथित शहन्शाह जो अंग्रेजों का पेंशनयाफ्ता था, उसमें विरोध करने की शक्ति ही नहीं बची थी। अत: अब उनकी सवारी निकलने की भी बारी उपरोक्त कारणों से आ गई।

लालकिले की नाक के नीचे से निकलकर यह सवारी जामा मस्जिद चावड़ी बाजार होती हुई रामलीला मैदान आने लगी। श्री गुरू जी इस सवारी में सबसे आगे गदा घुमाते हुए प्रधान ध्वज के संरक्षक बनकर चला करते थे। अब 'निष्कलंक बन आजा' ही उनका प्रधान उद्घोष रहता। रामायण पाठ में भी वे यही संपुट लगाते थे।

महामना पं. मदनमोहन मालवीय-स्वामी श्रद्धानंद जी जैसी भारत प्रसिद्ध विभूतियों का उन्हें सम्मान प्राप्त था। लाला श्री राम जी इस समय छाया की भाँति उनके साथ रहते थे।

## विदेशी वस्त्रों की होली

भारत को आर्थिक दृष्टि से गुलाम बनाने एवं उसके पारम्परिक कला-कौशल-संस्कृति, सभ्यता को नष्ट करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने एक दूरगामी योजना बनाई। यहाँ के सुयोग्य कारीगरों के अँगूठे कटवाए, उनकी आवश्यकता की वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाया गया, कुछ को बंधक बनाकर अपने उद्योगों के विकास के लिए ले जाया गया और दूसरी ओर उन रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए अपने उत्पादों को भारतीय बाजारों में लाए।

इसका विरोध करने के लिए 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का सिंहनाद करने वाले लोकमान्य तिलक महाराज ने पूना में सर्वप्रथम विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। उसके पश्चात् प्रयाग में महामना मालवीय



जी ने भी यही किया। दिल्ली में यह मोर्चा गुरु बालमुकुन्द जी महाराज ने अपने ढंग से संभाला। उन्होंने विदेशी वस्त्रों के दहन के स्थान, उनका वितरण अभावग्रस्त जनों में किया। श्री गुरु जी का अनुकरण करके गांधी जी ने भी उन वस्त्रों के दहन के स्थान पर उन्हें तुर्की को भेजा। जिसको उनकी मुस्लिमपरस्त नीति मानकर प्रबल विरोध हुआ।

## भूत-प्रेत-सैयद-मजारों का दमन

श्री गुरू जी एक चमत्कारी पुरुष हैं, यह हिन्दुओं से अधिक मुसलमानों में जामामस्जिद और मरघटवाले हनुमान जी की घटनाओं के कारण प्रसिद्ध हो चुका था। इधर जामा मस्जिद के निकट हरे-भरे की दरगाह के विषय में भी प्रसिद्धि थी कि वहाँ भी हरे-भरे का जिन्न रात में निकलकर आस-पास ही नहीं दूरदराज तक चक्कर लगाता है। उससे कई हिन्दू चोट खा चुके थे किन्तु किसी मुसलमान ने चोट खाई, ऐसा कोई उदाहरण बहुत ताछान के पश्चात् भी नहीं मिला। श्री गुरु जी मुसलमानों का षड़यंत्र समझ गए।

अत: एक दिन वे रात्रि में निकल पड़े। उस समय दिल्ली में बिजली नहीं थी वे सीधे हरे-भरे की दरगाह जा पहुँचे। जहाँ 8-10 मुसलमान जुआ खेल रहे थे और कुछ नशा-पत्ता आदि कर रहे थे। उन्होंने जोर से 'हक्कनिह: निष्कलंक' का ज्यों ही उद्घोष किया कि वे भूतों की भाँति किलकारी मारते हुए, उनकी ओर दौड़े। परन्तु उनकी हुंकार सुनकर वे खड़े के खड़े रह गये। तभी एक सफेद लबादा पहने हुए छुरा लेकर उन पर लपका। श्रीगुरु जी ने उछल कर उसके सिर पर गदा दे मारी वह हाय-हाय करता हुआ ज्यों ही गिरा कि श्री गुरु जी ने दौड़कर उसके हाथ से छुरा छीन कर, उसकी छाती पर चढ़कर बोले, 'बता, तू कौन है' वह बोला 'मैं हरे-भरे का जिन्न हूँ' श्री गुरुजी बोले 'अगर तू जिन्न है तो आज मैं तुझे तेरी इस योनि से मुक्त करूँगा और तेरे ही छुरे से करूँगा' यह कहकर ज्यों ही उन्होने छूरे वाला हाथ ऊँचा किया, वह तुरंत बोला, 'नहीं पंडित, नहीं-नहीं मैं तो अबदुल्ला हूँ। मैं तुम्हारी काली गाय हूँ। एक गरीब आदमी हूँ। मुझे मत मारो'

जा रहा है। उन्होंने दौड़कर पीछे का पहिया पकड़ लिया दौड़ते हुए घोड़े पैर उठाए रह गए। सईस पर हंटर फटकारे, घोड़े पूरी शक्ति लगा रहे किंतु बग्घी ऐसी जाम हो गई, मानो स्वयं धरती माता उसे बढ़कर, थाम कर बैठ गई हो। सईस ने उतर कर देखा कि श्री गुरुजी पहिया थामे खड़े है। आश्चर्य से उसकी आँखे फैली की फैली रह गईं।

प्रधान इंजीनियर ने बग्घी से उतर कर, अपना टोप उतार कर श्री गुरू जी को प्रणाम किया। अपने सईस के माध्यम से पुछवाया कि ''वे क्या चाहते हैं ? गाड़ी का पहिया पकड़कर, उसे रुकवाने के पीछे उनकी क्या भावना है ?'' श्री गुरु जी ने उत्तर दिया, ''तू मेरा मंदिर हटाना चाहता है, मैं उसे हटने नहीं दूँगा। यदि तूने हठ ठाने रखी तो इसका परिणाम ठीक नहीं होगा। तू पछताएगा।'' प्रधान इंजीनियर आश्वासन सूचक हाथ हिलाते हुए, पहिया छोड़ने की प्रार्थना करते हुए, बग्घी में जा बैठा। बग्घी अपने मार्ग पर चल पड़ी सड़क निर्माण के कार्य में लगे हुए मजदूरों ने यह दृश्य देखकर, काम करने से इंकार कर दिया।

समस्त समाचारों से अवगत होते ही ईसाई समाज अपने धर्म का उपहास और हिन्दू धर्म का सन्मान ध्यान में रखकर भड़क उठा। उनके समूह के समूह एकत्रित हो-होकर लाट साहब के पास प्रतिनिधि मंडल के रूप में जा-जाकर मंदिर को नष्ट करने की जोरदार मांग करने लगे। अंत में लाट साहब मुसलमान मजदूरों की पल्टन की पल्टन लेकर, विध्वंस कार्य को तुरंत निबटाने के लिए अपनी बग्घी में अपनी मेमसाहब को साथ लेकर मंदिर की ओर मुंह अंधेरे चल पड़ा। अभी वह मंदिर के पास पहुँचा नहीं था कि बग्घी ऐसे उलट गई जैसे किसी बच्चे ने खिलौना औंधा कर दिया हो। साहब मेमसाहब सहित धरती पर आ गिरे। चोट तो विशेष नहीं आई किंतु किरकिरी बहुत जोरदार हुई। किसी प्रकार मजदूरों ने तिलमिला कर बग्घी को सीधा किया लाटसाहब सिर नीचा किये लौटे गए किन्तु श्री हनुमान जी के प्रताप को मान गए। उसी का यह प्रभाव हुआ कि श्री रामलीला की सवारी उनके नेतृत्व-संचालन या प्रंबध में जामा मस्जिद के नीचे से विधिवत् बाजे बजाते हुए निकलने लगी क्या बल्कि वे मस्जिद के पास खड़े हो-होकर जनता प्रेरणा देते थे कि ''जोर से बोलो सियावर



रामचंद्र की जय-जय-जय'' मुसलमानों की भारी शिकायत के कारण उनका तबादला कहीं और कर दिया गया। परन्तु उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

ये लाटसाहब मैटकाफ थे। मैटकाफ हाउस श्री हनुमान जी के मंदिर के समीप ही है। स्नान करते ही श्री हनुमान जी के ध्वजा के दर्शन करने के पश्चात् ही वे कुछ ग्रहण करते थे। इस व्रत का निर्वाह उन्होंने जीवन पर्यन्त किया।

## क्रांतिकारियों के प्राणदाता

सन् 1911 में दिल्ली दरबार हुआ। उसमें जार्ज पंचम अपनी पत्नी सहित आया और भारत सम्राट की उपाधि ग्रहण की। बंग-भंग का आंदोलन जो बहुत जोर पर था, उसे समाप्त कर बंगाल को एक करने की घोषणा के साथ-साथ बंगाली क्रांतिकारियों से भयभीत होकर कलकत्ते के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बनाने की घोषणा की। इसी के फलस्वरूप सन् 1912 में तत्कालीन वाइसराय लार्ड हार्डिंग की सवारी पूरे शहन्शाही तामझाम के साथ निकालने का कार्यक्रम निश्चित् किया गया।

यह सवारी मुगल बादशाहों की भांति चाँदनी चौक से होकर लालकिला जानी थी परन्तु जिस समय वह फतेहपुरी मस्जिद से मुड़कर लालकिले की ओर अग्रसर हो रही थी और वाइसराय जिस हाथी पर छत्र-चँवर धारण किये बैठा था, वह कटरा नील के आस-पास आया, तभी उस पर बम गिरा निशाना थोड़ा चूक गया। वाइसराय को कुछ चोटें तो आईं किंतु उसका छत्रधारी मारा गया। तत्काल भारी उथल-पुथल मच गई क्योंकि उस सवारी को देखने के लिए दिल्ली ही नहीं बल्कि आस-पास की जनता भी वहाँ बड़ी संख्या में थी। यह बम लाला छुन्नामल की हवेली से फेंका गया था। ज्ञात हुआ कि अभी भी चाँदनी चौक में इसी हवेली का छज्जा सबसे बड़ा है जिसके नीचे लगभग 50 दुकानें हैं।

श्री गुरुजी उस समय उसी हवेली के नीचे गदा धारण किये खड़े थे। किसी दैवी प्रेरणावश अथवा किसी कार्यक्रम के अधीन, यह तो नहीं कहा जा सकता। उन गदाधारी पंडित जी ( श्रीगुरु जी उस समय इसी नाम से

भगवान्' की करने लगे थे। कुछ लोग जय बजरंगी कहते तो वे उनका उत्तर दिए बिना निकल जाते थे। ऐसे ही एक महानुभाव मंगलवार को पास मंदिर में श्री हनुमान जी को चोला चढ़ाकर, पूजन करने लगे तो किसी ने उनसे पीछे से कहा 'ये तो नई बस्ती में साक्षात बैठे हैं।' वह तुरंत चल पड़ा चमेली के तेल में सिंदूर घोलकर, पुष्पमाला-प्रसाद आदि लेकर जा पहुँचा। श्री गुरु जी वीरासन से जाप कर रहे थे। नेत्र बंद थे। उसने जाकर उनके मस्तक-मुँह-हाथ-पैरों पर सिंदूर लेपन कर, माला पहना दी। मुँह में प्रसाद रखने चला तो उन्होंने नेत्र खोल दिये वह डर गया और भाग खड़ा हुआ।

कुछ देर पश्चात् श्री गुरु की माता ने उनकी अद्भुत् अवस्था देखी। पुतली ठहरी हुईं। पलकें झपक नहीं रहीं। किसी अनहोनी की कल्पना से वृद्ध माता काँप उठी। चीखने-चिल्लाने लगी। छाती पीटने लगी। आस-पास के लोग एकत्रित हो गए। छाती में धड़कन किन्तु नाड़ी का कहीं अता-पता नहीं। एक वैद्य को बुलाया। उसने परीक्षण करके कहा ''जीवित तो हैं परन्तु शेष कुछ नहीं कह सकता।'' मैं अपने गुरुजी को लाता हूँ। उनके गुरु दिल्ली के प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य थे। दूर-दूर तक उनकी ख्याति थी। वे आए, देखा। देखकर बोले ''यह देव दुर्लभ समाधि है। इसके विषय में हमने अपने गुरुजी से कुछ सुना अवश्य था परन्तु इस समाधि को देखा आज ही। इसमें किसी औषधि की आवश्यकता नहीं। श्री हरिनाम संकीर्तन करिए।'' संकीर्तन आरंभ हो गया। समाचार बिजली की तरह समस्त नगर में फैल गया। दर्शनों के लिए मेला लग गया। बारह घंटे से अधिक हो गये। वैसी ही वीरासन की मुद्रा, वैसी ही निष्कंप पलकें पुतली ठहरी हुईं। होंठ बंद। एक ओर वैद्यों की मंडली बैठी हुई। ( ये वैद्य श्री मनोहरलाल जी और उनके गुरु आयुर्वेदाचार्य श्री मथुराप्रसाद जी ही प्रतीत होते हैं ) माँ पल-पल में बिलख-बिलख कर पूछें ''मेरा लाल जिन्दा तो है ?'' वैद्य ढांढस भी दें किंतु माथे पर चिंता की रेखाएँ कुछ और कहें। अंत में निर्णय हुआ कि 'अब अभिषेक किया जाए'। आसपास के कुओं पर भीड़ लग गई। लोटे-घंटियों से लेकर कलसे और टोकनी तक गुरुजी पर चढ़ने लगे। लगभग दो घंटे तक निरन्तर अभिषेक के पश्चात् चौदह घंटे में बाह्य चेतना लौटी। एकदम श्री हनुमान जी की भाँति उछल कर खड़े हो



गए। किलकारी मारते हुए दौड़ चले। 'हक्कनिह निष्कलंक गौरंडाः दुष्टाः नाशनम् पापाः' का उद्घोष करते हुए बाजार सीताराम से चावड़ी बाजार, नई सड़क चांदनी चौक से यमुना किनारे जा पहुँचे। पीछे-पीछे अपार जनता दौड़ रही थी परन्तु उनकी गति को कोई लाँघ नहीं पा रहा था।

प्रसिद्ध संत बाबा बालकनाथ जी महाराज ने उन्हें दूर से यमुना जी की ओर बढ़ते देखा। उन्होंने दौड़कर श्री गुरु जी को अपनी बाँहों में जकड़ लिया। उन्हें कसकर छाती से लगाकर बोले—

''पवनकुमार! लोक की अवहेलना मत करो इसे मार्ग दर्शन दो। प्रभु के कार्य में साथी बनाओं। अनेकों आत्माएँ आ चुकी हैं। उन्हें उनके स्वरूप का ज्ञान कराकर, भूमि भार उतारने के लिए भगवान् श्री राम के श्री कल्कि स्वरूप मंत्र की दीक्षा दो। अपने स्वरूप का स्मरण करो।'' कहते हुए उन्हें लिए-लिए यमुना जी में प्रविष्ट हो गए। तीन गोते लगाते ही गुरुजी सामान्य दशा में लौट आए। लाला छुन्नामल जी जो अब तक अपनी बग्घी में बैठकर वहाँ आ चुके थे। वे बाबा बालकनाथ जी के आदेश से उन्हें बग्घी में बैठाकर उनके घर नई बस्ती ले आए। आते ही सो गए। वैद्यों ने उनकी माता से कह दिया कि इन्हें जगाना मत। किसी को अंदर मत जाने देना। उठने में देर लगेगी। घबराना मत। श्री गुरु जी की आँख तीसरे दिन खुली।

बाबा बालकनाथ जी के विषय में मान्यता है कि वे कुबेर-सखा भगवान् शंकर के अंशावतार थे। निगमबोध ( श्मशान घाट ) ही उनका निवास था। वे रात भर चिता तापते थे। प्रत्येक चिता के पास खड़े होकर 'श्रीरामनाम तारक मंत्र' का उद्घोष करते थे और चक्कर लगाते थे। क्योंकि उन दिनों सेवड़े मुर्दे को सेकर, उसे प्रेत बनाकर नाना प्रकार के कौतुकों से अपने स्वार्थ की पूर्ति करते थे। बाबा जहाँ किसी सेवड़े को देखते, उसे भगा देते थे। बाद में उन्होंने निगम बोध श्मशान घाट कील दिया। अब यह भय समाप्त हो गया। बाबा की खाल चिता तपते-तपते चट-चट करके जलने लगती तो वे दौड़कर गुलाबगंधी ( वर्तमान में जौहरीमल गुलाबचंद, तेल इत्र वाले, दरीबा कलां, दिल्ली ) की दुकान पर आ धमकते और चंदन-चमेली आदि तेलों की बोतलें उठाकर अपने शरीर

# हनुमान जी हमारे गुरु क्यों?

## महर्षि बालमुकुंद जी महाराज की संक्षिप्त जीवनी

पूज्यपाद गुरुवर श्री लक्ष्मीनारायण जी महाराज एवं पूज्य पाद बाबू द्वारकानाथ जी के अनुसार इन महानुभावों की प्रथम भेंट गुरुवर श्री बालमुकुन्द जी महाराज से सन् 1904-05 के लगभग हुई। इनमें भी बाबू जी कुछ पहले उनके सम्पर्क में आ चुके थे। उस समय श्री बालमुकुन्द जी की आयु 50-55 के आस-पास थी। भेंट के समय वे कूचा पातीराम की एक गली नई बस्ती में अपनी वृद्धा माता के साथ रहते थे। उनकी पत्नी शांत हो चुकी थीं। उनके कई पुत्र हुए किन्तु कोई 8-10 दिन या महीने-दो महीने से अधिक जीवित नहीं रहा। उन बच्चों की मृत्यु साधारण मृत्यु नहीं थी। बल्कि कहना चाहिए कि कलिकुल के विध्वंस के लिए आरंभ किये गए यज्ञ में वे प्रथम आहुति के रूप में समर्पित हुए। गुरुवर माला कर रहे हैं, कलियुग प्रत्यक्ष द्वार के बाहर खड़ा होकर कह रहा है, ''अरे, माला छोड़ दे। तेरा जाप मेरा रोम-रोम झुलसा रहा है। हाँ, तू ऐसे नहीं मानेगा। देख, मैं तेरे पुत्र को ले जा रहा हूँ।''

इतने में अंदर से उनकी माता की आवाज बड़ी जोर से आती है, ''बिटुवा, जल्दी आ। देख तो बच्चे के हाथ-पैर ऐंठेइ जा रहे हैं।'' जितने में गुरुवर माला पूरी करके उठते, उतने में तो उनकी माता और पत्नी के विलाप के स्वर सुनकर आस-पड़ोस के नर-नारी आ चुके होते। इस प्रकार उनकी सभी संतानें जाती रहीं। गुरु पत्नी तो कुछ नहीं बोलीं किन्तु माँ ने ही एक दिन कहा कि ''बालो, तेरी माला नागिन बनकर वंश को डस रही है। इसे छोड़कर, एक तो बचा ले, जो कपाली भंजन कर सके।''

श्री गुरुजी ने हँसकर उत्तर दिया, ''माँ, तेरी और तेरी बहू की कपाली-भंजन करने का तो मैं तुझसे प्रण करता हूँ किंतु कलियुग की कपाली-भंजन करने वालों में से कोई न कोई मुझे भी यह आनंद देगा। तू चिंता मत कर। तू जिस कुल की प्रमुख हो, उसका मुख सदैव तेजोमय रहेगा। यदि माँ, तुम और तुम्हारी ये बहू वास्तव में मुझसे प्रेम करती हो, दैवी विश्व का



कल्याण चाहती हो, भूमि को भार मुक्त देखना चाहती हो, धर्म की जय-जयकार चाहती हो तो, ये माला लो और लग जाओ श्रीकल्कि भगवान् के नाम जप में।''

गुरु पत्नी ने आगे बढ़कर उनसे माला लेकर धीरे से कहा कि ''हमारी कोख चाहे उजड़ी रह जाए किन्तु हमारी माँग का सिंदूर आपके कंधे चढ़ने तक दमकता रहे। यही एक वरदान हमें दो। हम जान गईं हैं कि आप कोई साधारण पुरुष नहीं, दिव्य आत्मा हैं। हमारा कौन जन्म का क्या सद्कर्म है सो तो हम नहीं जानतीं किंतु आपकी कृपा अवश्य है जो आपने हमारा हाथ थाम के पाँवन में बिछिया, कलाइन में चूरीं और माथे को बिँदिया दई सो बनाय रखियो। महाराज! धरती पै सिर धरिकै याहि बिनती है।''

श्री गुरुजी ने आँखों ही आँखों में उन्हें स्वीकृति सूचक आश्वासन दिया कि उनकी प्रार्थना सफल होगी। यही हुआ कि वे माला करते-करते ही, बिना किसी रोग के एक दिन बैठी की बैठी रह गई। माता कुछ दिन अवस्था के कारण अवश्य अस्वस्थ रहीं किन्तु अंतिम क्षण तक अपने शरीर के सब कार्य करती रहीं और पूरी चैतन्य-अवस्था में श्री गुरुजी को आशीर्वाद देती हुईं कि ''मेरे बाल, भगवान् श्रीकल्कि नारायण तेरी विनती सहस्त्र कान देकर सुनें तेरी मनोभिलाषा पूर्ण करें।'' कहते-कहते ज्यों ही मौन हुईं कि श्री गुरुजी द्वारा गंगाजल-तुलसी ग्रहण करते ही परलोक पधार गईं। उन्हीं के मुख से किसी चर्चा में सुना गया कि श्री गुरुजी अलीगढ़ ( उ.प्र. ) के समीपवर्ती बिलासपूर ग्राम के थे। एक दिन कोई महात्मा उधर आ निकले। श्री गुरुजी को प्रणाम करके, मुग्दर घुमाते देखकर बोले, ...अरे अंजनी मैया के लाल, यहाँ क्या घुमा रहे हो ? गदा धारण करो, इन्द्रप्रस्थ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।

बस, इतना कहकर वे जांबवंत स्वरूप श्यामवर्णी महात्मा तो न जाने किस दिशा में समा गए किन्तु श्री गुरुजी घर आते ही बोले, चलो इंद्रप्रस्थ, चलो दिल्ली'' और मकान-जमीन-खेत खलिहान जो कुछ भी था, सबको छोड़-छाड़कर कुछ थोड़ा-बहुत सामान लेकर माता और पत्नी को साथ लेकर, कई दिन की यात्रा करते हुए दिल्ली आ गए। क्योंकि तब तक अलीगढ़ से दिल्ली तक रेल नहीं चली थी। दिल्ली आकर यमुना जी के

# विषय-सूची


हनुमान जी हमारे गुरु क्यों ? ..... ७
भूमि भार उतारने में व्यस्त भगवान श्री कल्कि द्वारा दिए गए
बारह देवी-देवता ..... २८
कुछ भक्तों द्वारा परिस्थिति विशेष में किए गए सफल उपाय ..... ३७
सत्संग से श्री कल्किजी कालका मन्दिर पहुँचे ..... ४२
सत्संग की महिमा ने एक नया इतिहास रचा ..... ४६
विशेष शक्तियाँ संजोए भगवान् श्री कल्कि की श्री कालका मन्दिर
में मूर्ति स्थापना 19 दिसम्बर 2004 को सम्पन्न ..... ४७
योगमाया : दिव्य शक्तिपीठ ..... ५०
मुफ्त खोरों का हाल ..... ५३
बीस लाख रुपये बड़े या बुद्धि ..... ५५
मृत्यु के तीन पैगाम : बाल-दाँत-नींद ..... ५८
टाईम पास ..... ६१
पक्के तो बनो ..... ६३
सौदा सस्ता है ..... ६४
राजा का सपना ..... ६६
मुझे गुस्सा बहुत आता है ..... ६९
बँटे सो कटे ..... ७३
प्रभु से एकाध दुख माँगो ताकि अक्ल ठिकाने रहे ..... ७५
अपनी और बाप-दादा की कमाई का फर्क ..... ७७
जब मूर्ति हँसी : योगमाया मन्दिर ..... ८०
अनुभवगम्य श्रीकल्कि मंदिर ..... ८७
कलियुग में श्री कल्कि की दिव्य शक्ति वैष्णों माता ..... ९२
अब तो कलियुग आ गया ..... ९५
समय की कीमत ..... ९७
मेहनत करोगे तो ऊँचा उठोगे ..... ९८
रोग का कारगर इलाज सोचने का नजरिया बदलिए ..... ९९
जाप से ज्यादा फलदायी हवन ..... १०१





उनका आना और जाना ..... १०२
जुआ किसी का न हुआ ..... १०३
धीरज रखें घबराए नहीं ..... १०८
माँ की कोई उपमा नहीं ..... १०९
भाग्य पर न छोड़ें, जुलाहे की तरह कर्म करें ..... ११५
मिरगी और मोटापे के बीज भी हैं टी.वी. में ..... ११९
कर्म करें आलस्य छोड़े भगवान मदद करेंगे ..... १२२
जब स्वयंवर में आए राजा स्त्री बने ..... १२८
भगवान् श्री कल्कि एवं कुथोदरी का युद्ध ..... १३१
कल्किजी का कोक-विकोक से युद्ध ..... १३४
यही तो माया है भाई ..... १३७
दही के धोखे में चूना ..... १४१
जो जाकि शरणै बसे ..... १४६
इस तरह रह सकते हैं विद्यार्थी तनाव मुक्त ..... १५१
कलियुग के लक्षण ..... १५५
लाभ सुनने पढ़ने से नहीं अमल से ..... १५७
डॉक्टर ने टी.वी. बन्द कर दिया बच्चे ठीक हो गए ..... १५९
माया का चक्कर ..... १६२
हमारे गुरुजी सबसे बड़े गुरु ..... १६४
विदेशों में भी कलियुग अपनी चरम सीमा पर ..... १६६
मैं भी तो इनमें से नहीं ..... १६८
पिछले जन्म के संचित कर्म हमारा पीछा नहीं छोड़ते ..... १७०
जिसका कुल और स्वभाव नहीं जाना उसको घर में
कभी ना ठहराना ..... १७३
चार प्रश्न ..... १७५
पृथ्वी का अमृत-गाय का दूध ..... १७७
न मिलेगी हवा न मिलेगा पानी, सन् पचास की यही होगी कहानी ..... १७९
जवान सम्भाल के ..... १८१
श्री भगवत्कल्कि पूजा एवं अभिषेक ..... १९१
श्री खाटू श्याम पूजा एवं अभिषेक ..... १९४